।। ओ३म् ।।

वैदिक संसार

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या एम.पी. एच.आई. एन. २०१२/४५०६६, डाक पंजीयन - एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७

वर्ष-७ | अंक-४ | मासिक-हिन्दी | फरवरी-२०१८ | इन्दौर(म.प्र.) | मूल्य-२५/- | कुल पृष्ठ-४४

वैदिक धर्म पुनर्जागरण एवं स्वातन्त्र्य यज्ञ की समिधा

आर्य मुसाफिर
धर्म की बलिवेदी पर आहूत होने वाले
पण्डित लेखराम
जन्म: अप्रैल 1858, बलिदान: 6 मार्च 1897

करो या मरो को समर्पित
राष्ट्र की बलिवेदी पर आहूत होने वाले
वीर हेमू कालानी
जन्म: 23 मार्च 1923, बलिदान: 21 जनवरी 1943

धर्म-राष्ट्र की बलिवेदी पर आहूत होने वाली महान् विभूतियों को कोटिश: वन्दन

गुरूकुल नवप्रभात आश्रम एवं गुरूकुल में सम्पन्न चतुर्वेद पारायण यज्ञ और सोलहवे वार्षिकोत्सव की चित्रावली

गुरूकुल संस्थापक स्वामी मुनिश्वरानन्द जी ब्रह्मचारियों तथा आचार्यों के साथ

स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती ब्रह्मचारियों को उपदेश करते हुए

स्वामी विवेकानन्द जी के सानिध्य में १०१ कुण्डीय यज्ञ द्वारा पूर्णाहुति

स्वामी विवेकानन्द जी विद्वानों के साथ नवनिर्मित भोजनशाला का अवलोकन करते

आचार्य ब्रहस्पति जी के ब्रह्मत्व में नूतन ब्रह्मचारियों का उपनयन व वेदारम्भ संस्कार

आयोजन में विशाल पाण्डाल और धर्मनिष्ठजनों की वृहद उपस्थिति

सफल आयोजन समापन पश्चात् गुरूकुल परिवार प्रसन्न मुद्रा में अतिथियों के साथ

वैदिक संसार इन्दौर द्वारा साहित्यिक सेवा

वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा एवं उनकी धर्मपत्नि श्रीमती दुर्गा शर्मा का सम्मान

चतुर्वेद पारायण यज्ञ के मुख्य यजमान एवं भोजनशाला के दानवीर दयानन्द शर्मा के साथ उनके परिजन एवं गुरूकुल अध्यक्ष आ.भगवान देव,डॉ.सोमदेव शंताशु व सुखदेव शर्मा

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आरएनआई-एमपीएचआईएन २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन-एमपी/आईसीडी/१४०५/२०१५-१७
वर्ष-७, अंक-४
अवधि-मासिक, भाषा-हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ फरवरी, २०१८
आर्ष तिथि-फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, दशमी
सृष्टि संवत्-१,९७,२९,४९, ११९
शक संवत्- १९३९
विक्रम संवत्- २०७४, दयानन्दाब्द-१९४

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर- ०९४२५०६९४९१
(सायं ६ बजे से प्रात: ८ बजे तक मौन काल)

सम्पादक
गजेश शास्त्री, इंदौर (म.प्र.)

आवरण एवं शब्द संयोजन
लक्ष्य ग्राफिक्स - ९३०१४३३२११

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

संरक्षक (१५ वर्ष)	२५०००/-
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२१००/-
त्रैवार्षिक सहयोग	६००/-
वार्षिक सहयोग	२५०/-
एक प्रति	२५/-

अन्य सहयोग-स्वैच्छानुसार
बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इन्दौर
करंट खाता क्र. ३२८५९५९२४७९
आईएफएस कोड-एसबीआईएन-०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज-वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रह	पृष्ठ.क्र.
वेद मन्त्र-भावार्थ	वैदिक संसार	०४
महत्वपूर्ण पर्व, दिवस एवं जयन्ति-पुण्यतिथि	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
वैदिक संसार के उद्देश्य	वैदिक संसार	०५
जीवन साधना के चार चरण	सम्पादकीय	०५
मानव जीवन	डॉ. रवीन्द्रकुमार शास्त्री	०५
स्वास्थ्य दर्पण-गाजर	हरिश्चन्द्र आर्य	०६
हमारी महान् विभूतियां- ...पं. लेखराम	राजेन्द्र जिज्ञासु	०७
- महारानी पद्मनी (पद्मावती)	पं. नन्दलाल निर्भय	०८
- ऋषि महिमा	नन्दराम आर्य	०८
- हेमू कालानी का बलिदान	डोंगरलाल पुरुषार्थी	०९
अजब जादूगर ने बजायी गजब वेद वीणा	देवनारायण भारद्वाज	११
महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्राचीन भारत की..	पं. उम्मेदसिंह विशारद	१३
प्रभु मिलन की बेला आई	स्वामी सत्यव्रतानन्द सरस्वती	१३
वेदों में नारी की स्थिति	शिवनारायण उपाध्याय	१५
आदि कवि का काव्य	नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'	१९
रामचरित् मानस-एक आपत्तिकालीन महा...	स्वामी हरिश्वरानन्द सरस्वती	२०
श्रीराम बन जाओ तुम	पं. नन्दलाल निर्भय	२२
क्या हनुमान, सुग्रीव आदि बन्दर थे?	डॉ. गंगाशरण आर्य	२३
आध्यात्मिक जिज्ञासा समाधान एवं पुस्तक...	आचार्य सोमदेव आर्य	२७
साहित्य में (मिथ) काल्पनिक चरित्र चित्रण	देशराय आर्य	२९
जानें! नवसंवत्सर (नव वर्ष) को	रमेशचन्द्र भाट	३०
संकल्प पाठ का आवश्यक संज्ञान	आचार्य दार्शनेय लोकेश	३३
सृष्टि का नवसंवत्सर प्राणीमात्र के लिए...	नानालाल शर्मा	३५
महर्षि दयानन्द जयन्ती एवं अंतर्राष्ट्रिय महिला..	इन्द्रदेव गुलाटी	३६
भागवत कथाकार- अन्ध विश्वास से भरे...	मोहनलाल दशोरा	३६
तीसरी बकरी	ओमप्रकाश बजाज	३६
प्रेरणास्पद आर्य व्यक्तित्व-हरिनिवास गुप्त	वैदिक संसार	३७
आर्य जगत् की प्रस्तावित गतिविधियां	संकलित	३७
वैवाहिक आवश्यकताएं	संकलित	३८
नाम के आगे उपजाति नहीं! अब पुरुषार्थी...	डोंगरलाल पुरुषार्थी	३८
गुरुकुल नवप्रभात आश्रम वैदिक विद्यापीठ...	वैदिक संसार	३९
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियां	संकलित	४१
शोक सूचना	संकलित	४२

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

ओ३म् वृषा यूथेव वंसगः कृष्टीरियर्त्योजसा।
इशानो अप्रतिष्कुतः।। ऋ.- १.७.८

भावार्थ- इस मन्त्र में उपमा और श्लेषालङ्कार है। मनुष्य परमेश्वर को प्राप्त हो सकते हैं, क्योंकि वे ज्ञान की वृद्धि करने के स्वभाव वाले होते हैं और धर्मात्मा ज्ञानवाले मनुष्यों का परमेश्वर को प्राप्त होने का स्वभाव है तथा जो ईश्वर ने रचकर कक्षा में स्थापन किया हुआ सूर्य्य है, वह अपने सामने अर्थात् समीप के लोगों को चुम्बक पत्थर लोहे के समान खींचने को समर्थ रहता है।

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त्त के मार्च २०१८ के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

१० गते	मधु मास	१९४० शक स.	फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी २०७४	१ मार्च	मघा-३०:४२, क्षय तिथि पूर्णिमा-३०:२३, होलिका दहन (नवान्न सस्येष्टि पर्व)
१३ गते	मधु मास	१९४० शक स.	फाल्गुन कृष्ण तृतीया २०७४	४ मार्च	वीरांगना क्षत्राणी झलकारी बाई पुण्यतिथि
१४ गते	मधु मास	१९४० शक स.	फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी २०७४	५ मार्च	चित्रा- ०८:५५, राष्ट्रिय सुरक्षा दिवस
१६ गते	मधु मास	१९४० शक स.	फाल्गुन कृष्ण षष्ठी २०७४	७ मार्च	स.ही. वातस्यायन जयन्ति, परमहंस योगानन्द पुण्यतिथि
१७ गते	मधु मास	१९४० शक स.	फाल्गुन कृष्ण सप्तमी २०७४	८ मार्च	अनुराधा-२३:१७, अंतर्राष्ट्रिय महिला दिवस
१९ गते	मधु मास	१९४० शक स.	फाल्गुन कृष्ण नवमी २०७४	१० मार्च	सावित्रीबाई फूले पुण्यतिथि
२० गते	मधु मास	१९४० शक स.	फाल्गुन कृष्ण नवमी २०७४	११ मार्च	उत्तराषाढ़-२३:०२
२१ गते	मधु मास	१९४० शक स.	फाल्गुन कृष्ण दशमी २०७४	१२ मार्च	राष्ट्र मंडल दिवस
२३ गते	मधु मास	१९४० शक स.	फाल्गुन कृष्ण द्वादशी २०७४	१४ मार्च	पंचक प्रारम्भ- १३:२७
२४ गते	मधु मास	१९४० शक स.	फाल्गुन कृष्ण द्वादशी २०७४	१५ मार्च	अंतर्राष्ट्रिय विकलांग दिवस
२७ गते	मधु मास	१९४० शक स.	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा २०७५	१८ मार्च	युगादि तिथि, परिधावी संवत्सर, विक्रम संवत् २०७५ प्रारम्भ सन्त झूलेलाल जयन्ति, रामकृष्ण परमहंस जयन्ति
२८ गते	मधु मास	१९४० शक स.	चैत्र शुक्ल द्वितीया २०७५	१९ मार्च	गुरु हरगोविन्द पुण्यतिथि
२९ गते	मधु मास	१९४० शक स.	चैत्र शुक्ल तृतीया २०७५	२० मार्च	पंचक समाप्त-१४:०७, आर्य भट्ट जयन्ति (२१.०३.४७६) मेष संक्रान्ति २१:४६, वसन्त सम्पात, दिन-रात बराबर, सूर्य भोगांश क्रान्ति एवं विषुवांश सभी शून्य, सूर्य का गोलार्द्ध परिवर्तन, वसन्त ऋतु का मध्य बिन्दु, वैशाष सक्रान्ति, पं. लेखराम तृतीया तदनुसार बलिदान दिवस ६ मार्च १८९७
३० गते	मधु मास	१९४० शक स.	चैत्र शुक्ल चतुर्थी २०७५	२१ मार्च	विश्व वानिकी दिवस
०१ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र शुक्ल पंचमी २०७५	२२ मार्च	कृतिका-२८:१९ वसन्त पंचमी
०२ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र शुक्ल षष्ठी २०७५	२३ मार्च	डॉ. राम मनोहर लोहिया जयन्ति, सुखदेव, राजगुरु व भगतसिंह बलिदान दिवस
०४ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र शुक्ल अष्टमी २०७५	२५ मार्च	क्षय तिथि नवमी २९:५६, श्री रामनवमी, गुरु अंगददेव जयन्ति
०६ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र शुक्ल एकादशी २०७५	२७ मार्च	पुष्य -१६:४६, २७ मार्च डॉ. हेडगेवार जयन्ति
०८ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र शुक्ल त्रयोदशी २०७५	२९ मार्च	गुरु अंगददेव पुण्यतिथि, महावीर जयन्ति
०९ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र शुक्ल चतुर्दशी २०७५	३० मार्च	गुरु किशनदेव पुण्यतिथि
१० गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र शुक्ल पूर्णिमा २०७५	३१ मार्च	चैत्री पूर्णिमा, हनुमान जयन्ति, गुरु अंगददेव जयन्ति

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

नया पंचांग छप चुका है कृपया सम्पर्क करें

किसी भी शंका समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें।

अन्य स्त्रोतों से प्राप्त

१४ गते	मधु मास	१९४० शक स.	फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी २०७४	५ मार्च	सन्त दादूदयाल जयन्ति
२३ गते	मधु मास	१९४० शक स.	फाल्गुन कृष्ण द्वादशी २०७४	१४ मार्च	सन्त तुकाराम जयन्ति
२४ गते	मधु मास	१९४० शक स.	फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी २०७४	१५ मार्च	विश्व उपभोक्ता दिवस
२९ गते	मधु मास	१९४० शक स.	चैत्र शुक्ल तृतीया २०७५	२० मार्च	अवन्तिबाई लोधी बलिदान दिवस
३० गते	मधु मास	१९४० शक स.	चैत्र शुक्ल चतुर्थी २०७५	२१ मार्च	विश्व सैन्य दिवस
०१ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र शुक्ल पंचमी २०७५	२२ मार्च	विश्व जल संरक्षण दिवस
०२ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र शुक्ल षष्ठी २०७५	२३ मार्च	वीर बलिदानी हेमू कालानी जयन्ति
०३ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र शुक्ल सप्तमी २०७५	२४ मार्च	विश्व क्षय रोग निवारण दिवस, कर्मा देवी जयन्ति
०४ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र शुक्ल अष्टमी २०७४	२५ मार्च	गणेश शंकर विद्यार्थी बलिदान दिवस

वैदिक संसार के उद्देश्य

■ महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्व राष्ट्रप्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित-पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन-मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।

- वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि -मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुंचाने का प्रयास करना। ●

सम्पादकीय

जीवन साधना के चार चरण

व्यक्तित्व निर्माण के कार्यक्रम की तुलना कृषक द्वारा किए जाने वाले कृषि कर्म से की जा सकती है। जैसे जुताई, बुवाई, सिंचाई और विक्रय की चतुर्विधि प्रक्रिया सम्पन्न करने के बाद किसान को अपने परिश्रम का लाभ मिलता है, व्यक्तित्व निर्माण को भी इस प्रकार जीवन साधना की चतुर्विधि प्रक्रिया सम्पन्न करनी पड़ती है, यह है आत्म-चिंतन, आत्म -सुधार, आत्म-निर्माण और आत्म-विकास। मनन और चिंतन को इन चारों चरणों का अविच्छिन्न अंग माना गया है। इन चतुर्विधि साधनों को एक-एक करके नहीं, समन्वित रूप से ही अपनाया जाना चाहिए।

आत्म-चिंतन अर्थात् जीवन विकास में बाधक अवांछनीयताओं को ढूंढ निकालना। इसके लिए आत्म समीक्षा करनी पड़ती है। जिस प्रकार प्रयोगशालाओं में पदार्थों का विश्लेषण, वर्गीकरण होता है और देखा जाता है कि इस संरचना में कौन-कौन से तत्व मिले हुए हैं। रोगी की स्थिति के लिए उसके मल-मूत्र, ताप, रक्त, धड़कन आदि की जांच-पड़ताल की जाती है और निदान करने के बाद सही उपचार बन पड़ता है। आत्म-चिंतन, आत्म-समीक्षा भी आत्म विकास की प्रथम पायदान है।

इसके लिए अपने आप से प्रश्न पूछने और उनके सही उत्तर ढूंढने की चेष्टा की जानी चाहिए। हम जिन दुष्प्रवृत्तियों के लिए दूसरों की निन्दा करते हैं उनमें से कोई अपने स्वभाव में तो सम्मिलित नहीं है। जिन बातों के कारण हम दूसरों से घृणा करते हैं, वे अपने में तो नहीं है? जैसा व्यवहार हम दूसरों से अपने लिए नहीं चाहते हैं, वैसा व्यवहार हम ही दूसरों के साथ तो नहीं करते? जैसे उपदेश हम आए दिन दूसरों को करते हैं उनके अनुरूप हमारा आचरण है भी अथवा नहीं? जैसी प्रशंसा और प्रतिष्ठा हम चाहते हैं वैसी विशेषताएं हममें हैं या नहीं? इस तरह का सूक्ष्म आत्म निरीक्षण स्वयं व्यक्ति को करना चाहिए और अपनी कमियों को ढूंढ निकालना चाहिए। जब अपनी कमियां दृष्टिगोचर होने लगेगी तो आत्म सुधार का मार्ग स्वत: प्रशस्त होता चला जाएगा।

आत्म-सुधार अर्थात् कुसंस्कारों को परास्त करना। अपने स्वभाव में सम्मिलित दुष्प्रवृत्तियां अभ्यास होने के कारण कुसंस्कार बन जाती है और व्यवहार में उभर-उभर कर आने लगती है। आत्म सुधार प्रक्रिया के अन्तर्गत इसके लिए अभ्यास और विचार संघर्ष के दो मोर्चे तैयार करने चाहिए। अभ्यस्त कुसंस्कारों की आदत तोड़ने

मानव जीवन

मानव जीवन तप के लिए है।
परोपकार और शुभ के लिए है।।
जो पापों के पंक में फसंता।
वह जीवन को नहीं समझता।।
वेदों के पथ पर निरन्तर चलना।
प्रात: सायं ईश-चिन्तन करना।।
मानव-जीवन भक्ति के लिए है।
परोपकार और शुभ के लिए है।।
दयालु प्रभु का सम्बल पाना।
किन्हीं गरीबों को मत सताना।।
ऋषियों-मुनियों के पथ पर चलना।
धर्म के खातिर ही जीना मरना।।
मानव जीवन देश के लिए है।
परोपकार और शुभ के लिए है।।
सचच्चरित्र का निर्माण करना।
दुष्कर्मों के पंकों में न फंसना।।
मानव जीवन मुश्किल से मिलता।
टूटा हुआ फूल कभी नहीं खिलता।।
दिवाकर की ज्योति सबके लिए है।
परोपकार और शुभ के लिए है।।
संध्या द्वारा मन को सजाना।
कवि 'सोम' के पथ पर चलना।।
ईश्वर ने ही दुनिया बनाई।
धरती बनाई और सृष्टि रचाई।।
सोम की शीतलता सबके लिए है।
परोपकार और शुभ के लिए है।।

- डॉ. रवीन्द्र कुमार शास्त्री 'सोम'
आर्ष गुरुकुल, इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद, (हरियाणा)
चलभाष - ९९५३१३१०८४

के लिए बाह्य क्रिया-कलापों पर नियंत्रण और उनकी जड़ें उखाड़ने के लिए विचार-संघर्ष की पृष्ठभूमि बनानी चाहिए। बुरी आदतें भूतकाल में किया गया अभ्यास ही है इस अभ्यास को अभ्यास बना कर तोड़ा जाए और कुसंस्कार सुसंस्कार निर्माण द्वारा नष्ट किए जाएं। जैसे थल सेना से थल सेना ही लड़ती है नभ सेना से लड़ने के लिए नभ सेना ही भेजी जाती है।

जो भी बुरी आदतें जब उभरें उसी से संघर्ष किया जाए। बुरी आदतें जब उभरने के लिए मचल रहीं हों तो उनके स्थान पर उचित सत्कर्म ही करने का आग्रह खड़ा किया जाए और मनोबलपूर्वक अनुचित को दबाने तथा उचित के अपनाने का साहस किया जाए। मनोबल यदि दुर्बल होगा तो हारना ही पड़ेगा अन्यथा सत्साहस जुटा लेने पर तो श्रेष्ठ की स्थापना में सफलता ही मिलती है। इसके लिए छोटी बुरी आदतों से लड़ाई आरम्भ करनी चाहिए। उन्हें जब हरा दिया जाएगा तो अधिक पुरानी और अधिक बड़ी दुष्प्रवृत्तियों को परास्त करने योग्य मनोबल भी जुटने लगेगा और जब ऐसा होने लगेगा तो आत्म निर्माण की ओर अग्रसर हो सकेंगे।

आत्म निर्माण अर्थात् जो सत्प्रवृत्तियां अभी अपने स्वभाव में नहीं है उनका योजनाबद्ध विकास करना। दुर्गुणों को निरस्त कर दिया गया, उचित ही है पर व्यक्तित्व को उज्जवल बनाने के लिए आत्म विकास की अगली सीढ़ी चढ़ने के लिए सद्गुणों की सम्पदा एकत्रित करना भी अत्यन्त आवश्यक है। बर्तन का छेद बन्द कर देना काफी नहीं है। जिस उद्देश्य के लिए बर्तन खरीदा गया है वह भी तो पूरा करना चाहिए। खेत में से कंटीली झाड़ियां, पुरानी फसल की सूखी जड़ें उखाड़ दी गई, पर इसी से तो खेती का उद्देश्य पूरा नहीं हो गया। यह कार्य तो अधूरा है। शेष आधी बात जब बनेगी तब उस भूमि पर सुरम्य उद्यान लगाया जाए और उसे पाल-पोसकर बड़ा किया जाए।

अपने व्यक्तित्व का विकास उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्श कर्त्तव्य अपनाये रहने पर ही निर्भर है। उस साधना में चंचल मन और अस्थिर बुद्धि से काम नहीं चलता इसमें तो संकल्पनिष्ठ, धैर्यवान और सतत प्रयत्नशील रहने वाले व्यक्ति ही सफल हो सकते हैं। अपना लक्ष्य यदि आदर्श मनुष्य बनना है तो इसके लिए व्यक्तित्व में आदर्श गुणों और उत्कृष्ट विशेषताओं का अभिवर्धन करना ही पड़ेगा। यही आत्म निर्माण है और जब आत्म निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई तो आत्म विकास अर्थात् आत्मिक उन्नति का लक्ष्य स्वत: झोली में आ गिरता है।

आत्म-विकास अर्थात्- अपने आत्म-भाव की परिधि को अधिकाधिक विस्तृत क्षेत्र में विकसित करते रहना। यदि हम अपनी स्थिति को देखें तो प्रतीत होगा कि शरीर और परिवार का उचित निर्वाह करते हुए भी हमारे पास पर्याप्त समय और श्रम बचा रहता है कि उससे परमार्थ प्रयोजनों की भूमिका निबाही जाती रह सके। आत्मीयता का विस्तार किया जाए तो सभी कोई अपने शरीर और कुटुम्बियों की तरह अपनेपन की भाव श्रृंखला में बंध जाते हैं और सबका दु:ख अपना दु:ख तथा सबका सुख अपना सुख लगने लगता है। जो व्यवहार, सहयोग हम दूसरों से अपने लिए पाने की आकांक्षा करते हैं, फिर उसे दूसरों को लिए देने की भावना भी उमड़ने लगती है, लोक मंगल और जन कल्याण की सेवा साधना की इच्छाएं जगती हैं तथा उसकी योजनाएं बनने लगती हैं। इस स्थिति में पहुंचा, व्यक्ति सीमित न रहकर असीम बन जाता है और उसका कार्य क्षेत्र भी व्यापक परिधि में सत्प्रवृत्तियों का सम्वर्धक बन जाता है। संसार के इतिहास में जिन महामानवों का उज्जवल चरित्र जगमगा रहा है, वे आत्म विकास के इसी मार्ग का अवलम्बन लेते हुए महानता के उच्च शिखर तक पहुंच सके हैं। चारों दिशाओं की तरह आत्मिक उत्कर्ष के चार आधार यहीं हैं।

आओ! हम भी अपनी जीवन यात्रा को साधना के इन चार चरणों से सफल बनाते हुए कृण्वन्तों विश्वमार्यम् के लक्ष्य में कदम आगे बढ़ाएं।

गाजर

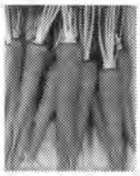

आयुर्वेदिक मत- दीपनसंग्रही वृष्य, वृहका होती है। मधुर तीक्तरस, लघु तीक्ष्ण रस- स्निग्ध गुण, उष्ण वीर्य, मधुर वीपाक, त्रिदोष शामक है। रक्तपित्त, अर्श, संग्रहणी में लाभ करती है। शरीर मुलायम और सुन्दर करने में प्रभावकारी, गुदा की जलन दूर करने में बेजोड़, रोगों के आक्रमण में रक्षक, बौद्धिक विकास में प्रभावकारी होती है।

वैज्ञानिक मत- विटामिन ए की कमी को पूर्ण करने में सर्वश्रेष्ठ, पेट तथा आंतों में रामबाण, प्रोटीन-चर्बी-कार्बोहाईड्रेड, कैल्शियम, फास्फोरस शोधक स्टार्च होता है।कैरोटिन प्रचुर मात्रा में होता है। **शोधक तत्व, रक्त शोधक, ब्लड बैंक-** मूल में कैरोटिन, हाईड्रो कैरोटिन, शर्करा, स्टार्च, पैक्टिन, मैलिक एसिड, विटामिन, लवण तथा एक उड़नशील तेज होता है।

उपयोग

- ☐ भूख को जागृत करने में सर्वोत्तम है।
- ☐ मौसम में अबाल, वृद्ध सभी यथेष्ठ उपयोग करें।
- ☐ अधिक दस्त लगने पर गाजर के सूप का प्रयोग करें।
- ☐ शरीर में शक्ति का संचार होता है, वजन भी बढ़ता है ।
- ☐ बच्चों को गाजर का रस पिलाने से दांत सरलता से निकलते हैं।
- ☐ गाजर की पुल्टिस से फोड़े और घांव पर लाभ होता है।
- ☐ रोगों के आक्रमण से सुरक्षित रखने में सहायक है।
- ☐ अर्श क्षय रोग में गाजर का सेवन हितकारी है।
- ☐ वैज्ञानिक जगत् भी गाजर को पूर्ण भोजन मानता है।
- ☐ गाजर के दूध से बीस गुना अधिक विटामिन 'ए' प्राप्त होता है।

हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता- उपदेश विभाग, अमरोहा (उ.प्र.)
चलभाष- ९४१२३२२४८८

प्राणवीर रक्तसाक्षी पं. लेखराम

- राजेन्द्र 'जिज्ञासु' -
वेद सदन, नई सूरज नगरी
अबोहर, पंजाब
चलभाष- ९४१७६४७१३३

पं. लेखराम जी ने भरी जवानी में धर्म की बलिवेदी पर अपना जीवन वार दिया। वे दीर्घजीवी भले ही न हुए परन्तु अमर हो गए। आयु तो लम्बी न पाई, परन्तु उनका जीवन घटनापूर्ण तथा प्रेरणा का अजस्र स्त्रोत है। किसी विचारक का यह कथन उन पर पूरा-पूरा चरितार्थ होता है।

A long life may not be good enought but a good life is long enought. अर्थात् एक लम्बा जीवन सम्भव है कि बहुत अच्छा न हो परन्तु एक श्रेष्ठ और अच्छा जीवन निश्चय ही बहुत लम्बा है।

पण्डित जी अपनी निर्भिक सत्यवाणी के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। उनके पवित्र चरित्र तथा तप-त्याग व लगन को सब नमन करते थे। उस समय के बड़े-बड़े आर्य नेता उनके गुणों व सेवा के कारण उनकी डांट डपट सुनकर स्वयं को गौरवान्वित मानते थे। पं. धर्मचन्द जी अमृतसरी उस युग के एक प्रतिष्ठित विद्वान, आर्य नेता थे। उनको एक बार पण्डित जी ने रुष्ट होकर डांट दिया। आपने बड़ी विनम्रता से उनको शान्त किया। पण्डित जी के मन में किसी के लिए भी लेश मात्र द्वेष नहीं था।

महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्दजी) ने बड़े गर्व से लिखा है कि एक बार मैंने उनकी मुट्ठी चापी (पांव-टांगे दबाई) की। श्री हरबिलास जी शारदा को एक बार धर्म प्रचार में सक्रिय न होने, कुछ प्रमाद दिखाने पर डाँट दिया। सब बड़े-बड़े नेता पण्डितजी के समर्पण भाव, विद्वत्ता व अथक सेवाओं के लिए उनको बहुत मान सम्मान देते थे।

ऋषि जीवन की खोज में मेवाड़ में निकले तो उन्हें भीषण ज्वर हो गया। तब सैकड़ों और सहस्त्रों व्यक्ति ज्वर से ही मर जाते थे। पण्डित जी ने न तो सभा को रुग्ण होने की सूचना दी और न ही पंजाब सभा को अपनी रुग्णता की जानकारी दी। वजीराबाद के आर्यजन उनको विदा करने के लिए गाड़ी पर बैठाने निकले तो आपने कहा, आपका समय समाज के लिए मूल्यवान है आप यहीं रहिये। केवल चड्ढा जी ही मुझे छोड़ने जाएंगे। चड्ढाजी उस समाज के एक अत्यन्त धर्मात्मा परन्तु बहुत सामान्य सदस्य थे। उनके पवित्र आचरण के कारण पण्डित जी उनका बहुत आदर करते थे। पश्चिमी पंजाब में कहीं पौराणिकों से आपका प्रतिमा पूजन पर शास्त्रार्थ हो गया। उसमें से कई शास्त्री विद्वान पण्डित आए। पण्डित लेखराम जी का संस्कृत का स्वल्प ज्ञान था। व्याकरण को वे क्या जानें? सूझ अद्भुत थी। आपने उस शास्त्रार्थ में जब यजुर्वेद से **'न तस्य प्रतिमा अस्ति'** का प्रमाण दिया तो प्रतिपक्षी पण्डित अड़ गया कि यह 'नतस्य' शब्द है **'न तस्य'** नहीं है। नत का अर्थ प्रतिमा के सामने झुकना है।

तब पण्डित जी ने कहा कि यदि मन्त्र में यहां **'न तस्य प्रतिमा'** उसकी प्रतिमा ये शब्द नहीं है। तो मन्त्र में आगे यस्य (जिसका) शब्द किसके लिए है? महर्षि के जीवन काल से ही पाषाण पूजा के लिए इस मन्त्र का जब-जब प्रमाण दिया गया तब-तब विरोधी यही तर्क देते रहे कि यहां 'नत' (झुकना) शब्द है। जब पण्डित जी ने उत्तर देते हुए कहा कि फिर आगे 'यस्य' (जिसका) शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है तो अन्य पौराणिक पण्डित भी इस युक्ति का लोहा मान गए। तब पौराणिक पण्डित को पं. लेखराम जी ने ललकार कर कहा- ' यह देखो वेद संहिता में ' न तस्य' ही कहा है तो वह बोला मैं स्वामी दयानन्द के वेद को नहीं मानता। यह तुम्हारा छपा है।

पण्डित जी ने प्रीतिपूर्वक कहा- अरे भाई देख तो सही। यह वेद संहिता मुम्बई से आप लोगों ने ही छपवाई है। पण्डित जी की इतनी तैयारी व सूझबूझ को वहां आए सब पौराणिक पण्डित मान गए। यह शास्त्रार्थ लिखित रूप में पण्डित जी के एक मित्र के पास सुरक्षित पड़ा रहा जिसे उन्होंने उनके बलिदान के पश्चात् उर्दू **'आर्य मुसाफिर'** में छपवा दिया। हिन्दी में अनुदित करके मैंने ही इसे प्रथम बार प्रकाशित करवाया।

एक बार लेखक ने पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक सरीखे वेदज्ञ से पूछा- क्या अपने लम्बे इतिहास में किसी शास्त्रार्थ में पं. लेखराम जी की तस्य-ब-यस्य वाली युक्ति हमारे किसी विद्वान ने दी? बहुत गम्भीर मुद्रा में पूज्य पण्डित युधिष्ठिर जी ने कहा- **''यह तर्क तो पं. लेखराम जी की जन्म जन्मान्तरों की ऊहा का चमत्कार है।''** पं. लेखरामजी की ऊहा की ईसाई पत्रिका **'नूर अफशाँ'** ने भी भूरि-भूरि प्रशंसा की है मौलाना, रफ़ीक दिलावरी ने भी अपने एक ग्रन्थ में पण्डित जी के पाण्डित्य की बहुत प्रशंसा की है।

पाठकों को यह जानकर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि भारतीय मुसलमानों के उस युग के सबसे बड़े नेता सर सैयद अहमद पर भी पं. लेखराम जी की लौह लेखनी व मौलिक सूक्त की गहरी छाप थी। इसका प्रमाण सर सैयद का साहित्य है। उनसे एक उच्च शिक्षित पंजाबी मुसलमान ने पूछा कि इस्लाम की हजरत ईसा को इब्ने मरियम (मरियम पुत्र) मानता है। तो क्या ईसा मसीह कुमारी माँ से जन्मे थे? सर सैयद ने इस प्रश्न का वही उत्तर दिया जो पं. लेखराम जी ने लिखा है। वैसे ही दृष्टान्त और वही तर्क दिए जो पण्डित जी ने लिखे हैं।

पाकिस्तान में आज भी ऐसी पुस्तकें छप रही हैं जिनमें इस्लाम के जाने माने लोकप्रिय साहित्यकार पण्डित लेखरामजी के चिन्तन, मनन, व तर्कों को स्वीकार कर इस्लाम को नये ढंग से प्रस्तुत कर रहे हैं। मैं इसे **'शुद्ध इस्लाम'** कहता हूं। यह नया इस्लाम क्या है? जिहादी उन्मादी युग में यह **'वैदिक इस्लाम'** कहा जा सकता है। आप इसे इस्लाम का वैदिक ढंग कह सकते हैं। खेद है कि आज आर्य समाज में थोथे वक्ता व लेखक राजनीति क्षेत्र की, क्रान्तिकारियों की चर्चा करके अपनी इतिहास की जानकारी दिखाते हैं। धर्म पर जान वारने वाले सिर तली पर धर कर धर्म प्रचार, जाति रक्षा करने वालों के आदर्श भुला देने से न तो नया श्रद्धानन्द मिलेगा और न ही कोई पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय, पं. रामचन्द्र देहलवी तथा पं. शान्तिप्रकाश जन्म लेगा। ●

महारानी पद्मनी (पद्मावती)

देश वासियों! सुनो ध्यान से, सच्ची एक कहानी को।
नर-नारी सब याद करो, अब सती पद्मनी रानी को।।
रूपवती, गुणवती, विदुषी, ईश भक्त तपधारी थी।
सदाचारिनी व्रत धारिनी, वीर प्रसूनी नारी थी।।
साहस बल की महापुंज थी, समझदार वह भारी थी।
भीमसिंह राणा की पत्नी, देवी परोपकारी थी।।
वीर जवानो! मत भूलो, भारत पुत्री मर्दानी को।
नर-नारी सब याद करो, अब सती पद्मनी रानी को।।
अलाउद्दीन खिलजी ने जब, चित्तौड़ नगर को घेरा था।
एक लाख सेना थी संग में, खल ने डाला डेरा था।।
कलह फूट थी भारत में, मूढ़ों का यहां बसेरा था।
रात अंधेरी छाई थी, ना आता नजर सवेरा था।।
यहां सैकड़ों शासक थे, पनपाते थे शैतानी को।
नर-नारी सब याद करो अब सती पद्मनी रानी को।।
अलाउद्दीन खिलजी ने राणा भीमसिंह को साफ कहा।
मुझे पद्मनी को दे दो, मैं बात भले की बता रहा।।
बिना पद्मनी के राणा जी! मुझ पर जाता नहीं रहा।
अगर न दोगे रानी को, मैं खून की दूंगा नदी बहा।।
व्यर्थ न झगड़ा करो, सौंप दो, हे राणा! रूपानी को।
नर-नारी सब याद करो, अब सती पद्मनी रानी को।।
राणा भीमसिंह बोले, पापी तू भाग यहां से जा।
बात न तेरी मानूंगा मैं, तू पूरा ले जोर लगा।।
उत्तर सुनकर राणा का, खिलजी ने भारी जुल्म किया।
मारो, काटो रजपूतों को, सेना को था हुक्म दिया।।
मिटे वीर रजपूत युद्ध में, याद करो कुर्बानी को।
नर-नारी सब याद करो अब, सती पद्मनी रानी को।।
समाचार जब मिला सती को, नहीं पद्मनी घबराई।
जौहर व्रत निभाओ बहिनो! सखियों से वह फरमाई।।
चौदह सहस्त्र देवियों ने, रानी संग जौहर व्रत किया।
पतिव्रता भारत बालाएं सकल विश्व को बता दिया।।
कभी न भूलेगी दुनियां, इस घटना दिल दहलानी को।
नर-नारी सब याद करो अब सती पद्मनी रानी को।।
उस पतिव्रता देवी को, जो पापी दोष लगाएंगे।
कान खोलकर के सुन लो सब, वे पापी मिट जाएंगे।।
जो खाते-पीते भारत का, गीत पराए गाएंगे।
वे सब भारत के दुश्मन हैं, जीवित न रह पाएंगे।।
''नन्दलाल'' अब जागो, युवको! कर लो सफल जवानी को।
नर-नारी सब याद करो अब, सती पद्मनी रानी को।।

– पं. नंदलाल 'निर्भय', **बहिन, हरियाणा**

ऋषि महिमा पर एक मालवी गीत

ऋषि बोध दिवस शिवरात्रि पर शत शत नमन

दयानन्द आछो बतायो मारग वेदां वारो
अंधविश्वास से दूर और आनंद से भरपूर।
सबने मिलीग्यो मारग शूद्ध वेदां वारो। **दयानन्द आछो...**

झूठा ग्रंथा ना दल-दल में धंसी रया था
और पाखण्डियां ना जाल मा हीं फंसी रया था।
आई ने करी द्यो उजारो, मीटिग्यो अंधकार सारो।
तमने आछो उगायो सूरज ज्ञान वारो। **दयानन्द आछो...**

अपणा देश नी संस्कृति ने सब भूली गया था।
और परदेशियां नी सभ्यता में घुली रया था।।
सबने करिया सावधान और जगायो स्वाभिमान।
सबना मन से मिटई दीदो भ्रम सारो। **दयानन्द आछो...**

स्वामी जी दु:ख ना बदला में सबने सुख दीदो।
जग ने अमरित बांट्यो ने आपे विष पीदो।।
दीदो सत्यारथ परकाश, कीदो अविद्या नो नाश।
तमने खोली दीदो सबना हिरदा नो तारो। **दयानन्द आछो...**

स्वामीजी तर्क ना तराजू सबने तोली दीदा।
सत और असत ना भेद सारा खोली दीदा।।
ऐसो करियो उपकार याद करेगा संसार
जग में आयो थो एक ऋषि वेदां वारो।।
दयानन्द आछो बतायो मारग वेदां वारो।

नन्दराम आर्य,
२१ सगीतरा गली खाचरौद (उज्जैन)
चलभाष- ९२२९४५८८८२

जन्मदिवस २३ मार्च पर विशेष प्रस्तुति

हेमू कालानी का बलिदान – २१ जनवरी १९४३

- डोंगरलाल पुरुषार्थी -
पूर्व प्रधानाध्यापक, प्रधान-आर्य समाज
कसरावद, जिला-खरगोन (म.प्र.)
चलभाष-८९५९०५९०९९

हेमू कालानी, सिन्ध- प्रान्त का वीर युवक,
यौवन का वह जैसे जलता अंगारा था।
अपनी जननी, मातृभूमि का वीरपुत्र,
धरती का कण-कण उसको प्यारा था।।

अंग्रेजों की तानाशाही के खिलाफ क्रान्ति का बिगुल बजाने वाला बिहार का आदि विद्रोही वीर तिलका माँझी ने सन् १८५७ की आजादी के लड़ाई के पहले फिरंगी सरकार को ललकारने का श्री गणेश किया था। इस वीर योद्धा ने अपनी जंग में गोफण, तीर-कमान का प्रयोग कर अंग्रेज सेना को पछाड़ कर उनसे छीनी गई बन्दूकों का उपयोग किया। सन् १८५७ की क्रान्ति में म.प्र. के मालवा-निमाड़ में आदिवासी बहुल क्षेत्रों में जननायक टन्ट्या भील ने अपने लूट गिरोह के साथ गोफण, तीर कमान, बन्दूकों से मालगुजार, सेठ-साहूकार, अंग्रेजों को तथा ट्रेनों में लूट पट्टी, अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया था। टन्ट्या के गिरोह को पकड़ना अंग्रेजों के लिए मुश्किल ही नहीं असंभव था। ऐसी लूट का फिल्मांकन सन १९६१ में बनी गंगा-जमना में दिलीप कुमार (गंगा) द्वारा अपने गिरोह (टन्ट्या के लूट का पर्वतीय क्षेत्र में ट्रेन को लूट) हेतु दृश्य फिल्माया है। ट्रेन लूटने का कारनामा दि. ०९/०८/१९२५ को दस क्रान्तिकारियों के गिरोह ने ट्रेन को रोक अंग्रेजों का खजाना लूटा, किन्तु बिस्मिल, अशफाक, राजेन्द्र लाहिड़ी, ठाकुर रोशनसिंह आदि पकड़े गए और फांसी की सजा से शहीद हुए। सन १८९२ में कलकत्ता के पास एक गांव में जन्मे सुशील कुमार सेन ने अपने दौदह वर्ष की आयु में सबसे पहले एक पुस्तक को बीच में खोखली कर एक बम को तारों द्वारा ऐसा समायोजित किया कि पुस्तक का मोटा मुख-पृष्ठ खोलते ही खोलने वाले व्यक्ति का राम नाम सत्य होना निश्चित था। सन् १९०८ में खुदीराम बोस और प्रफुल्लचंद चाकी द्वारा जो बम फेंका गया। उसका रचनाकार सुशील कुमार सेन ही था। इस बम ने आसपास के इलाके के साथ अंग्रेजों को दहला दिया था। दि. २३/१०/१९४२ में अहिंसा के पुजारी गांधी जी के **'करो या मरो' के नारे से प्रेरित होकर भारत माता के एक सपूत ने अपनी विचित्र और अमिट छवि को प्रस्तुत करते हुए अंग्रेजों को सफाया करने के मकसद से रेल पटरी उखाड़ने का साहस कर अपनी वीरता का परिचय दिया। यह वीर १९ वर्षीय किशोर हेमू कलानी नाम से विख्यात है।**

वीर हेमू का जन्म सिंध प्रान्त के सक्खर नगर में दि. २३/०३/१९२३ में हुआ था। इनके पिता का नाम पेसूमल कालानी और माता का नाम जेठीबाई कालानी था। हेमू कालानी में बचपन से ही वीरता के अंकुरण फूट चुके थे। सक्खर नगर के स्वतन्त्रता सेनानी डॉ. मंघाराम कालानी ने किशोर छात्रों को संगठित कर **'स्वराज्य सेना'** का संगठन किया। जिसमें हेमू कालानी बहुत ही सक्रिय और ऊर्जावान योद्धा का काम करता था। महात्मा गान्धी ने जीवनभर सत्य, अहिंसा की खूब तूती बजाई और वीर क्रान्तिकारियों की **'करो या मरो'** की हिसात्मक और लूटखसोट की गतिविधियों की फिरंगियों के सामने खूब निन्दा करते रहते थे। अन्ततः दि. ०८/०८/१९४२ को गान्धी जी ने बम्बई में अपने दिए गये भाषण में अंग्रेजों को भारत छोड़ने की सलाह देते हुए भारत की स्वतन्त्रता के महत् लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए क्रान्तिकारियों का ही नारा- 'करो या मरो' का देशवासियों को लिए उद्घोष किया। जिसके कारण अंग्रेजों ने कांग्रेस के बड़े-बड़े नेताओं को अविलम्ब जेलों में ठूंस दिया। आजादी की लड़ाई का दायित्व जनता ने सम्भाला। गली-गली, गांव-गांव, नगर-नगर में यत्र-तत्र-सर्वत्र विदेशी माल की होलियां जलाई गईं, जुलूस निकाले गए, हड़ताले और जनसभाएं आयोजित हुई। हिंसक घटनाएं

१२०वां वार्षिकोत्सव एवं व्यक्तित्व विकास शिविर
दिनांक : ३१ मार्च से १ अप्रैल २०१८ तक

आर्य समाज खेड़ा अफगान (सहारनपुर) के एक सौ बीसवें वर्ष में उत्सव और व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन **३१ मार्च से १ अप्रैल २०१८** तक किया गया है। आइये जाने इस जीवन का लक्ष्य क्या है? हम अपने व्यक्तित्व का विकास कैसे करें? हमारी गौरवमयी संस्कृति क्या है? हम ईश्वर की सच्ची अराधना कैसे करें? जीवन को अन्धविश्वासों से कैसे दूर करें? क्या जीवन में आने वाला सुख, दुःख हमारे कर्मों का फल है? तनाव और क्रोध से मुक्त जीवन कैसे जीयें? आदि विषयों पर इस अवसर पर पधारे **आचार्य कर्मवीर जी अजमेर, श्री वेदपाल जी आर्य** भजनोपदेशक सिनौली, जनपद-बागपत और अन्य अनेक वैदिक विद्वान महात्माओं द्वारा आप अपने जीवन के अनसुलझे प्रश्नों का उत्तर पाकर वास्तविक सफलता की ओर बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करें।

निवेदक- आर्य समाज, खेड़ा अफगान
सम्पर्क- आदित्य प्रकाश गुप्त, ८४४५०४४९२२

खूब हुई। जिससे फिरंगी-सरकार का मलोबल गिरा और उन्हें अहसास हो गया कि अब राज करने के दिन थोड़े ही बचे हैं। आजादी की इस लड़ाई में सभी वर्गों के लोग कूद चुके थे। अनेक देशभक्तों ने अपने जीवन का बलिदान कर दिया। आजादी की इस लड़ाई में हेमू कालानी भी कूद चूका था। हेमू ने अपनी विचित्र कार्यशैली को अपनाया। एक दिन समाचार मिला कि हथियारों से लैस एक फौजी ट्रेन सक्खर नगर से होती हुई बिलोचिस्तान की राजधानी क्वेटा जा रही है और इन हथियारों का उपयोग आजादी के क्रान्तिकारियों, देशभक्तों पर ही किया जाना है। खबर पाते ही हेमू कालानी ने '**न रहेगा बांस, न बजेगी बासुरी**' को सार्थक करने के प्रयास में जुट गया।

संकल्प वीर ने किया, सुला दूंगा अंग्रेजों को,
कैसे बच पाएंगे ये सारे, जब मैं पटरी उखाड़ दूंगा।
जो मस्त हो रहे हैं, भारत का रक्तपान करने को,
इन हिंसक-हत्यारों को, आज मैं ही पछाड़ दूंगा।।
जुट गया वीर हेमू, महानाश के उपक्रम में,
संकल्पों को भी कर्म-क्षेत्र की राह मिली।
जो देख रही थी, हेमू की सारी गतिविधियों को,
निस्तब्ध निशा में शुभ्र-चांदनी थी खिली-खिली।। -सरलजी

हेमू कालानी अपने दो साथी- नन्द और किशन को साथ लिए पटरी को अस्त-व्यस्त करने की योजना सब अत्यन्त गुप्त तरीके से कर रहे थे। इस कार्य से उत्पन्न ध्वनि और चांदनी से आसपास तैनात पुलिसकर्मियों के कान खड़े हो गए और शीघ्र ही इनकी ओर दौड़े आए। हेमू के दोनों साथी पुलिस को अपनी ओर आते देश तुरन्त नौ दो ग्यारह हो गये। किन्तु वीर हेमू वहीं अडिग खड़ा रहा और पुलिस ने हेमू को गिरफ्तार कर लिया।

पुलिस ने हेमू को अमानवीय यातनाएं दिए जाने पर भी वीर हेमू ने अपने साथियों के नाम नहीं बताये तथा अपने कार्य करने का अफसोस प्रकट न किया। कोर्ट मार्शल के सामने उसका मामला गया। हेमू के अपराध को गंभीरता से देखते हुए हेमू को आजीवन कारावास का दण्ड सुनाया गया। जब इस फैसले को हस्ताक्षर के लिए मुख्य मार्शला अधिकारी कमाण्डर रिचर्डसन के सामने पेश किया गया, तो हेमू की निडरता और साहस से अधिकारी बौखला गया। परिणामत: उसने आजीवन कारावास को मृत्युदण्ड में बदल दिया। मौत की सजा सुनकर भी हेमू में कोई डर, कायरता की झलक दिखाई नहीं दे रही थी। किन्तु सिन्ध के गणमान्य नागरिकों ने एक पीटिशन दायर की। वायसराय ने अपील को इस शर्त पर स्वीकार किया कि हेमू अपने साथियों के नाम और पते ठिकाने बता दें। वीर हेमू कालानी ने यह शर्त अस्वीकार कर दी। अन्तत: २१/०१/१९४३ को हेमू कालानी को फांसी की सजा दे दी गई। वीर हेमू कालानी से फांसी के पहले आखिरी इच्छा जब पूछी गई तो वीर हेमू ने कहा-'**मैं फिर भारत में जन्म लूंगा और देश को अंग्रेजों से मुक्त कराऊंगा**' और इन्कलाब जिन्दाबाद, वन्दे मातरम, भारत माता की जय। जयकारों का उद्घोष किया। खेद और अफसोस इस बात का कि गान्धीजी द्वारा उद्घोष- '**करो या मरो**' के आह्वान पर वीर हेमू के बचाव हेतु गणमान्य व्यक्तियों द्वारा अपील जरूर की गई, किन्तु गान्धी जी द्वारा हेमू कालानी के प्रति कोई प्रतिक्रिया प्रकट नहीं की गई। वीर हेमू कालानी की शहादत पर उनकी स्मृति में-

- ☐ म.प्र. के इन्दौर नगर में उज्जैन रोड पर शहीद हेमू कालानी के नाम से एक कॉलोनी विकसित है।
- ☐ इन्दौर में एक चौक का नामकरण हेमू कालानी के नाम पर करके एक प्रतिमा स्थापित की गई है।
- ☐ छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में शहीद हेमू कालानी की प्रतिमा शहर के हृदय स्थल कचहरी पर स्थापित की गई तथा इस चौक के वार्ड का नाम शहीद हेमू कालानी वार्ड रखा गया है।
- ☐ रायपुर में स्थानीय नगर निगम द्वारा शहीद हेतु कालानी को जयन्ति के अवसर पर प्रतिवर्ष समारोह आयोजित किए जाते हैं।
- ☐ छत्तीसगढ़ तिल्दानेवरा में एक चौक का नामकरण शहीद हेमू के नाम पर करके उनकी प्रतिमा स्थापित की गई है।
- ☐ एक प्रतिमा संसद भवन प्रांगण में डिप्टी स्पीकर के ऑफिस के सामने लगाई गई।
- ☐ चेम्बूर बम्बई के एक उपनगर में जहां सिन्धी समाज की जनसंख्या अधिक है, यहां के मार्ग का नाम शहीद हेमू कालानी मार्ग रखा गया है।
- ☐ उल्लास नगर जिसे सिन्धू नगर भी कहते हैं यहां शहीद हेमू कालानी की एक प्रतिमा चौक पर लगाई गई है।
- ☐ राजस्थान के जोधपुर शहर में एक चौक का नामकरण शहीद हेमू कालानी के नाम पर करके उनकी प्रतिमा स्थापित की गई है।
- ☐ अजमेर शहर में दिग्गी बाजार चौक में शहीद हेमू कालानी की प्रतिमा लगाई गई है।
- ☐ अजमेर में ही एक स्थान 'लखन कोठारी' शहीद हेमू कालानी मोहल्ला कहलाता है।
- ☐ राजस्थान की राजधानी जयपुर के आदर्श नगर (सिन्धी कॉलोनी) स्थित हेमू कालानी पार्क का नामकरण और उनकी प्रतिमा स्थापित की गई है।
- ☐ बीकानेर शहर के जयनारायण व्यास कॉलोनी में हेमू कालानी सर्कल तथा वीर सपूत समाधि स्थल है।

इस प्रकार हेमू कालानी का अविस्मरणीय कार्य रेल पटरी उखाड़ना, आजन्म कारावास होना तथा अपने साथियों के नाम न बताना उनकी जिन्दगी को बचाना, अपने आपको फांसी की सजा पर सहर्ष स्वीकार कर फिरंगी सरकार को इस प्रकार ललकारा

गर्जना वीर की थी, मैं तो जाता हूं,
भारत से अंग्रेजी शासन भी जाएगा।
स्वातंत्र्य-भोर को कोई रोक नहीं सकता,
आजादी का वह दिन आएगा, वह आएगा।। ●

– जय भारती

अजब जादूगर ने बजाई गजब वेद-वीणा

- देवनारायण भारद्वाज -
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.
चलभाष -०५७१-२७४२०६१

'वीणा' एक अद्भुत शब्द बोलने में मधुर, सुनने में मधुर, एक वाद्य यन्त्र। सरस माँ सरस्वती का वाद्य यन्त्र सभी प्रकार की दान दात्री माँ सरस्वती का वाद्य यन्त्र।

''**वीणा वादिनी वर दे**'' कवि निराला जी इन्हीं शब्दों में माँ सरस्वती की वन्दना करके अमर हो गए। मूर्ति या चित्र की सरस्वती नहीं छन्दों एवं स्वरों की सरस्वती सबको जो सभी कुछ देती है, यदि उसका अंश भी प्राप्त कर लें तो अमर होने में कोई कमी शेष नहीं रहती है। जब सधी हुई अंगुलियां वीणा के तारों पर थिरकने लगती हैं तो इसमें से उपजते मधुर स्वर वातावरण को अपनी स्वर लहरियों से अलंकृत करने लगते हैं और अन्त:करण को झंकृत एवं चमत्कृत करने लगते हैं। एक ऐसी वीणा कीर्तिकर्मी अवतंस वंश में पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित चली आ रही थी। माता-पिता से पूर्व पितामह, पितामह से पूर्व प्रपितामह, प्रपितामह से पूर्व कुलवासी यथावसर वीणा को बजाकर न केवल आनन्द मग्न होते थे प्रत्युत इसके स्वरों से अपने कर्त्तव्य कर्मों में भी नव स्फूर्ति का संचार करते रहते थे। पुरुषार्थ के द्वारा सफलता के उच्च से उच्चतर सोपान दर सोपान चढ़कर आगे बढ़ते रहते थे। निकट दूर के पड़ोसी इस परिवार से प्रेरणा ग्रहण करते रहते थे।

वीणा को संभाले रखना भी एक तपस्या है। इसके दो अक्षरों पर लगी मात्राएं भी इधर से उधर हो जाएं तो वीणा बन जाती है वाणी, वाणी की मात्रा 'ई' यदि खिसक जाए तो बचा रहता है केवल वाण। यह वाण बहुत भयंकर होता है। धनुष के वाण से भी भयंकर। इस वाण का व्रण भर जाता है, पर वाणी के वाण का घाव इतना गहरा होता है कि भरते-भरते भी हरा हो जाता है। ऊपर नीचे की दो पंक्तियों के मध्य रहने वाली जिव्हा पर दया दिखाते हुए किसी ने दांतों से पूछ लिया- यह कोमल सरस जिव्हा तुम पत्थर समान दांतों से बहुत डरती सिकुड़ती रहती होगी। वज्र दन्त बोल पड़े नहीं-नहीं डरते हम सभी हैं। यह सरल कोमल जिव्हा जब कोई कठोर कटुवचन बोल देती है तो सुनने वाला क्रोध से भर कर कह उठता है। चुप हो जाओ नहीं तो अभी बत्तीसों बाहर निकल पड़ेंगे। शासकों को भोग-विलासिता वेद विद्या के प्रति उदासीनता के वशीभूत पारस्परिक ईष्या-द्वेष के कंटक उगने लगे। उनके साथ चल-चित्र एवं दूरदर्शन जैसे वाद्य घर-घर बजने लगे। घर वाले अन्दर लड़ते तो बाहर वाले उनके शोर को आकाशवाणी की भांति सुनते और लड़ते-झगड़ते व शोर करते लोग घर द्वार पर आ जाते तो बाहर वाले उनको दूरदर्शन की भांति देखते।

'वीणा' को अब कौन बजाता। चौबीस घंटे दूरदर्शन की लीलाओं से आने वाले अपसंस्कृतिक वासनात्मक नग्न नृत्य व शब्द जब सामने प्रस्तुत हो रहे हों तो प्रवीणा वीणा का सीना चूर-चूर हो जाता है। फलत: परिवार में ज्येष्ठ-कनिष्ठ पिता-पुत्र, माता-बेटी, सास-ससुर तथा बाल-वृद्ध सभी की मर्यादाएं भंग होने लगती हैं। वीणा मौन होकर एक ओर पड. गई। वीणा के तार की झंकार क्या बन्द हुई पारिवारिक प्यार सत्कार व मृदु व्यवहार सभी कुछ मन्द हो गया। दूरदर्शन आदि उपकरण संचालन के लिए विद्युत चाहिए, किन्तु इनसे निर्देशित कलुषित गृह कलह व वाद-विवाद के लिए विद्युत की कोई आवश्यकता नहीं। घर में जब बड़े लड़ रहे हों कोई बच्चा कभी-कभार वीणा वादन कर बैठे तो घरवालों को उसके स्वर कर्कश लगने लगते। लड़ाई के रस-रंग को भंग करने वाली वीणा को एक दिन क्रोध में आकर बाहर घूरे पर फेंक दिया गया। ठोंकरे खाते हुए कहां-कहां नहीं मारी-मारी फिरती रही यह वीणा। समय कब ठहरता है, वह तो सिर पर पैर रखकर दौड़ता ही रहता है। परमेश प्रभु के अनूठे मीठे-मीठे गीत गुनगुनाने वाले फकीर ने घूरे पर दबी पड़ी उस वीणा को एक दिन उठा लिया।

बोध गीत

शिव शोध बोध प्रति पल पागो।
जागो रे व्रतधारक जागो।।

जब जाग गये तो सोना क्या।
बैठे रहने से होना क्या।
कर्त्तव्य पन्थ पर बढ़ जाओ,
तो दुर्लभ चाँदी-सोना क्या।
मत तिमिर ताक श्रुति पथ त्यागो।
जागो रे व्रतधारक जागो।।१।।

बन्द नयन के स्वप्न अधूरे।
खुले नयन के होते पूरे।
यही स्वप्न संकल्प जगायें,
करें ध्येय के सिद्ध कंगूरे।
संकल्प बोध उठ अनुरागो।
जागो रे व्रत धारक जागो।।२।।

शिव निशा जहां मुस्काती है।
जागरण ज्योति जग जाती है।
संकल्पहीन सो जाते हैं,
धावक को राह दिखाती है।
श्रुति दिशा छोड़कर मत भागो।
जागो रे व्रत धारक जागो।।३।।

बोध मोद का लगता फेरा।
मिटता पाखण्डों का घेरा।
शिक्षा और सुरक्षा सधती,
हटता आडम्बर का डेरा।
बोध गोद प्रिय प्रभु से मांगो।
जागो रे व्रत धारक जागो।।४।।

कुल-फूल मूल शिव सौगन्धी।
शंकर कर्षण सुत सम्बन्धी।
रक्षा, संचेत, अमरता से,
हो जन्म उन्हीं के यश गन्धी।
योग-क्षेम के क्षितिज छंगा लो।
जागो रे व्रत धारक जागो।। ५।।

- देवनारायण भारद्वाज

बोल पड़ा कितनी उत्तम वीणा, कितनी गन्दी। उसने वीणा को अपने कर कमल लगाकर मल-मलकर धो पोंछ कर स्वच्छ व शुद्ध कर लिया। अब उसके अधरों पर गुनगुनाने वाले गीत वीणा के तारों पर नर्तन कर रही अगुंलियों के साथ संगत होकर नूतन ही तरंगे बिखेरने लगे, जो सुनते वही दंग रह जाते।

वीणा बजाते प्रभु गीत गाते, रोते को हंसाते, सोते को जगाते वह फकीर एक प्रभात को उसी घर के सामने से निकला, जिसके परिवार ने वीणा को बाहर घूरे पर फेंक दिया था। दूरदर्शनीय अशोभनीय दृश्यों से प्रभावित परिवार के भवभोगी लोग जो लड़-झगड़कर देर रात्रि में सोते थे। वे प्रभात वेला में भुवन भास्कर के उदय होने पर भी नहीं जागते। जागती तो बस एक वृद्धा माता ही जागती। वृद्धा माता ने फकीर को रोककर कहा बाबा वीणा तो बहुत अच्छी है तुम्हारी। बहुत अच्छी है इसकी स्वर तंत्री। बांबा सुनाओ अपना गीत वीणा का संगीत। वीणा संगीत तो कानों में रस घोल देता है। फकीर बोला- माता! बोलना तो मात्र मुख से संभव है। वीणा के मुख कहां जो यह बोले। और हां मुख-वचन का समर्थन करने लगती है उसकी अंगुलियां और वीणा के तारों पर नर्तन करने लगती है। मौन तार मुखर हो उठते हैं स्वर फूट पड़ते हैं। मनुष्य संसार में जो कुछ कर्म करता है इन्हीं अंगुलियों से करता है। **''बाहों का यश-बल करतल कर पृष्ठ पर आधारित है। करतल कर पृष्ठ इन्हीं अंगुलियों से संचालित होते हैं।''** सामने वाले व्यक्ति की ओर कोई एक अंगुली उठाता है तो उसकी तीन अंगुलियां पृथक छोटी -बड़ी दिखाई देती है पर मुट्ठी बन्द करते ही सब बराबर स्तर पर आ जाती है। कहा भी गया कि बन्द मुट्ठी लाख की खुल गई तो खाक की। ऐश्वर्य हस्तगत तो मुट्ठी में होता ही है। शत्रु पर प्रहार भी मुष्टिका अर्थात् घूसा से ही करना पड़ता है। यही मनुष्य की हाथ की सफाई है, हाथ की कमायी है। जो उसने अपनी अंगुलियों से पाई है।

वीणा वादक बाबा! यह वृद्धा सब जानती है पर क्या करें, सन्तान ही नहीं मानती है। तुम्हारी वीणा ही अब इन्हें नग से नगीना बना सकती है। **यह वृद्धा माता कोई साधारण माता नहीं विश्ववारा श्रुति संस्कृति, समलंकृता, आर्यावर्ता भारतमाता ही तो है। परिवार वंश कोई साधारण नहीं मनु, मान्धाता, शान्तनु-भीष्म प्रभृति से समृद्ध कुरू कुल है। कुरू कुल का अर्थ कौरव कुल न लगा लेना, कुरू अर्थात् कृती वंश समझ लेना। वीणा भी कोई साधारण वीणा नहीं, परमेश प्रभु के द्रष्टा ऋषि देवता, छन्द स्वर समन्वित अलौकिक वेदवाणी ही वेद वीणा है। यह फकीर कोई लकीर का फकीर नहीं, करषन उर चन्दन अमृता यशोदानन्दन, ईश्वरीय कृति ऋषि-रंजन दयानन्द सरस्वती है।** लेखक! शीर्षक में तो तुमने जादूगर कहा है, किन्तु तुम इन्हें फकीर कहते आ रहे हो! हां आपने ठीक पकड़ा। पर फकीर भी तो जादूगर हो सकता है। **जादूगर उन्हें मैंने नहीं, काशीवासियों ने कहा, वही मैंने भी यहां दोहरा दिया।** बचपन में यह काशी पढ़ने के लिए जाना चाहते थे। पिता ने मोहवश नहीं जाने दिया। उल्टे विवाह की तैयारी कर दी। विवाह महोत्सव के मोद-प्रमोद-उल्लास को ठुकरा कर निकल पड़े घर से। **वे मूलशंकर से शुद्ध चैतन्य, फिर दयानन्द सरस्वती बनकर मथुरावासी गुरु विरजानन्द से दीक्षा लेकर अब काशी जी पढ़ने के लिए पहुंचे थे। सर्वत्र शोर मचा था।** काशी में एक जादूगर आया है। रात की बात नहीं दिन में भी उसके दोनों और मशालें जलती हैं। जादूगर नास्तिक है। नास्तिक भी ऐसा जो वेदशास्त्र का ज्ञाता है। विशाल देहयष्टि, अधिकाधिक ऊंचाई, आकर्षक व्यक्तित्व उद्भट् विद्वान है। **काशी के बड़े-बड़े पण्डित उससे शास्त्रार्थ करने जाते हैं और उसके तेज से पराभूत हो सभी लौट आते हैं।** माताएं बच्चों को घर से निकलने नहीं देती हैं। उन्हें डर है कि बच्चे कहीं उसके फेर में न पड़ जाएं। पुलिस अधिकारियों की पत्नियां भी अपने बच्चों को बचाकर रखती हैं। ऐसी ही सावधानी उस समय दस वर्षीय बालक मुशीराम के लिए रखी गई थी, जो वहां पुलिस अधिकारी के पुत्र थे।

वीणा वाला फकीर अब परिपक्व जादूगर वेद-वाणी वाला बन गया था। दसियों वर्ष बाद वे ही दयानन्द सरस्वती यत्र-तत्र-सर्वत्र शास्त्रार्थ विजय करते हुए बरेली पहुंच गए। बालक मुन्शीराम अब युवा हो गए थे। पिता बरेली में कोतवाल थे। मुन्शीराम संयोगवशात् दुर्गुण-दुर्व्यसन की खान बन चुके थे। धार्मिक क्षेत्र की दुर्व्यवस्था, कुप्रथा-व्यथा से तंग होकर नास्तिक बन चुके थे। संस्कृत शास्त्रज्ञों की कथनी-करनी के अन्तर ने मुंशीराम को धर्म, कर्म पूजा मर्म के प्रति आस्थाहीन बना दिया था। नगर कोतवाल पिता नानकचंद का शासन-अनुशासन सब पर चलता था, पर मुंशीराम पर नहीं। जादूगर फकीर दयानन्द की सभा-व्यवस्था हेतु पहुंचे कोतवाल महोदय, उनके व्यक्तित्व वक्तृत्व से इतने प्रभावित हुए कि आग्रहपूर्वक अपने तगड़े बिगड़े शहजादे को स्वामी जी की सभा में पहुंचा दिया। **दृश्य दर्शन करते ही जादूगर का जादू मुन्शीराम पर चल गया। उस दिव्य आदित्य मूर्ति को देखते ही श्रद्धा जाग उठी।** सभा में पादरी स्काट व अन्य अंग्रेजों को बैठा देख श्रद्धा प्रसिद्धा हो गई। उन्होंने जादूगर से प्रश्नोत्तर किए स्वयं निरुत्तर रहे। जादूगर की चाल-ढाल व उनके भाल विशाल को देखा। पौराणिक श्रोता कह उठते देखो! यह तो कोई अवतार है। बात आई गई हो गई। **मुंशीराम सफल मुख्तार बने। दुर्व्यसन-दोष भी साथ ढलते चले, पर अन्तःकरण में जादूगर दयानन्द के वाक्य भी पलते चले।** मुख्तार मुन्शीराम वकालत पढ़ने लाहौर जा रहे थे। वकीलों द्वारा उनका विदाई समारोह मनाया गया। डटकर मदिरा पान हुआ। किसी साथी ने एक युवती को पकड़ लिया। उसे बचाने दौड़ पड़े मुन्शीराम। अन्दर की आंखों ने अन्तर पट खोल दिए- अरे यह तो वही फकीर वही जादूगर, वही दिव्य मूर्ति महात्मा दयानन्द हैं, उन्होंने जो कहा था, फकीर की उन बातों की लकीर हृदय पर गहरी उभर आई है **और अन्ततः उन्हें लाहौर में हाथ लग गया जादूगर के जादू का पिटारा सत्यार्थ प्रकाश। बढ़ती आयु, बढ़ती आय, बढ़ती मेधा, बढ़ती दृष्टि के**

शेष भाग पृष्ठ ३२ पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्राचीन भारत की संस्कृति व संस्कारों को पुनरावर्ती करके युग की धारा ही बदल डाली

- पं. उम्मेदसिंह विशारद -
गढ़निवास, मोहक्कमपुर, देहरादून
(उत्तराखण्ड)
चलभाष- ०९४११५१२०१९

महर्षि दयानन्द जी का स्वप्न था कि बालक-बालिकाओं का जन्म से ही १५ संस्कारों द्वारा निर्माण किया जाए तो वह युवा होने पर युग को ही बदल देंगें। क्योंकि पुरानी पीढ़ी का स्थान आज के जन्में बच्चे लेंगे और वे जैसे होंगे वैसा ही युग होगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने परतन्त्र भारत में व्याप्त सम्पूर्ण धार्मिक व सामाजिक व राजनैतिक अन्धविश्वास को मिटाने की चुनौती को स्वीकार कर वैचारिक एवं वैदिक संस्कारित क्रान्ति को जन्म दिया।

महाभारत युद्ध के बाद भारतवर्ष का इतिहास ही बदल गया था। भारतवासी अपनी प्राचीन वैदिक संस्कार-संस्कृति व सभ्यता को भूल गए थे। परिणामस्वरूप विश्व गुरु भारत अराजकता और उच्च चरित्र संस्कारहिनता के कारण विदेशियों का गुलाम बन गया था और मानव जीवन के निर्माण के १६ संस्कार लुप्त प्राय: हो गए थे। यदि कहीं दो-तीन संस्कार बने हुए भी हैं तो यहीं वैदिक रूप में है कहीं अवैदिक रूप में प्रचलित हैं और वैदिक संस्कार केवल आर्य समाज के पुरोहितों द्वारा संस्कार विधि के अनुसार किए जाते हैं। चतुर अवसरवादी अनार्ष ज्ञान रखने वाले धर्म के ठेकेदारों ने विकृत धर्म और संस्कार व संस्कृति के द्वारा अपना-अपना मत बनाकर दुकानें खोल रखी थीं। जन साधारण भारतवासी बुरी तरह से इन धर्म के ठेकेदारों के चंगुल में फंस गए थे।

इतिहास गवाह है जब-जब मानवों ने ईश्वरीय नियम व सृष्टिक्रम व वैदिक संस्कारों की अवहेलना की तब-तब मनुष्यता मरती चली गई। आत्म रक्षा, धर्म रक्षा, समाज रक्षा और राष्ट्रीय रक्षा के आधार वैदिक संस्कार होते हैं और जब यह ही समाप्त हो गए थे या विकृत बन गए तो विदेशियों ने इस गिरावट का लाभ उठाया और विश्व गुरु भारत को गुलाम बनाकर नोंच डाला। इस भीषण विभिशिका से बचाने की किसी भी धर्मगुरु को कोई चिन्ता नहीं थी, चिन्ता थी तो केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करने की।

ईश्वर की कृपा से अठारवीं सदी में युग पुरुष महर्षि दयानन्द जी का जन्म हुआ था। यह भी सत्य है कि युग पुरुष संसार के कल्याण के ही लिए जन्म लेते हैं। यह भी सत्य है कि जब-जब ईश्वरीय वैदिक धर्म समाप्त होने लगता है तो चारों और अनैतिकता का वातावरण पैदा हो जाता है। तब ईश्वरीय व्यवस्था से महापुरुष सीधे मोक्ष से लौटकर अधर्म का नाश करने को जन्म लेते हैं। वह कर्मयुक्त जीव होते हैं। संसार के बन्धनों में नहीं फंसते हैं और संसार को सत्य मार्ग दिखाते-दिखाते अपना जीवन

प्रभु मिलन की बेला आई

आ.....आ....., ओ....ओ....
रे मनु,
रे मनु ! जाग-जाग, जाग-जाग।
प्रभु मिलन की बेला आई,
पूरब में शुभ लाली छाई। आ.....आ.....
अब तो निद्रा त्याग, रे मनु! जाग-जाग ।।१।। ओ....ओ....।
दु:खों भरी ये नदियां गहरी,
जीवन-नैय्या मझधार में ठहरी। आ.....आ.....।
प्रभु ही तारनहार, रे मनु! जाग-जाग ।।२।। ओ....ओ....।
ये नरतन अनमोल रतन है,
कैसे चमके करना यतन है। आ.....आ.....।
पगले! कीचड़ में ना डाल! रे मनु! जाग-जाग।।३।। ओ....ओ...।
ना कोई साथी ना संगी तेरा,
ये दुनिया एक रैन बसैरा। आ....आ....।
स्वारथ का संसार, रे मनु! जाग-जाग ।।४।। ओ....ओ....।
नीर भरी क्यों अँखियां तेरी,
जीवन गाथा भी दुखिया तेरी आ.....आ.....।
रोकेगा प्रभु अश्रुधारा! रे मनु! जाग-जाग।।५।। ओ....ओ....।
ओ३म् ही तारक रक्षक तेरा,
दूर करे घनघोर अँधेरा। आ.....आ.....।
सच्चा यही करतार! रे मनु! जाग-जाग।।६।। ओ....ओ....।
प्रभु मिलन की बेला आई,
पूरब में शुभ लाली छाई। आ.....आ.....।
अब तो निद्रा त्याग। रे मनु! जाग-जाग।।
रे मनु!...,

स्वामी सत्यव्रतानन्द सरस्वती
एल.बी. ४२, न्यू इन्दिरा कॉलोनी,
बुरहानपुर (म.प्र.)
चलभाष- ९९२६४-५८५५३

तक बलिदान कर देते हैं।

महर्षि दयानन्द जी ने भी रणक्षेत्र में उतरकर सर्वप्रथम वेदों के रुढ़ी अर्थों पर प्रहार करके उनको इतिहास परक न मानकर योगिक अर्थ किए और उन्होंने समझा था कि सम्पूर्ण भारत में संस्कारहीनता का कारण वेदों के अर्थों का गलत अर्थ करके समाज को दिशाहीन कर दिया है। उन्होंने तत्कालीन तमाम विद्वानों से शास्त्रार्थ किए और वेदों के अर्थों को संसार के सामने रखा। यह एक अद्‌भुत वैचारिक क्रान्ति थी। जमाने के साथ न चलकर जमाने की गर्दन पकड़कर अपने पीछे चलाया। एक नई वैचारिक क्रान्ति का जन्म हुआ।

संस्कार विधि- महर्षि दयानन्द ने समाज में चल रहे विकृत संस्कारों को वेदानुकूल बनाने हेतु संस्कार विधि का निर्माण किया और संस्कार विधि में सोलह संस्कारों को पूर्ण मानव बनाने की योजना तैयार की। उन्होंने समझा संस्कार जन्म से ही बदले जा सकते हैं उन्होंने संस्कार विधि में संविधान किया कि बालक माता के गर्भ से ही तीन संस्कार होने चाहिए वह थे गर्भधान, पुंसवन तथा सीमन्तोन्नयन संस्कार। और जन्म होने के पश्चात् जातकर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णभेद, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास और अन्त्येष्टि कर्म जो दूसरा किया जाता है। ये मानव को पूर्ण मानव बनाते हैं।

उनकी योजना थी कि यदि बालकों को उक्त संस्कारों की भट्टी में तपाया जाए तो युवा होने पर २५ वर्ष की अवस्था में एक नए युग का निर्माण हो सकता है, क्योंकि पुरानी पीढ़ी के स्थान नई पीढ़ी लेती है। **यदि समस्त परिवार सोलह संस्कारों को विधिवत करने लगेंगे तो एक आदर्श युग का निर्माण प्रारम्भ हो जाएगा और वैदिक संस्कारों के चलने से तमाम अर्नाष साहित्य मान्यताएं व क्रियाएं समाप्त हो जाएंगी।**

सत्यार्थ प्रकाश का निर्माण- महर्षि दयानन्द जी ने अनार्ष ज्ञान कर्मों को समाप्त करने के लिए कालजयी ग्रन्थ, सत्यार्थ प्रकाश में चौदह सम्मुलासों में पूर्ण रूप से मानव बनाने का निर्देश दिया। सत्यार्थ प्रकाश ने समाज में एक हलचल मचा दी। कथित धर्म के ठेकेदारों की चूलें हिलाकर रख दी। **संसार सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर आश्चर्यचकित रह गया कि अब तक संसारवासियों को कैसे मूर्ख बनाया जा रहा था। सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ ने एक नया इतिहास ही रच दिया। सत्य ज्ञान प्राप्त करा दिया।**

आर्य समाज का गठन- युग पुरुष दूरदर्शी होते हैं। महर्षि जी ने समझा कि यदि सोलह संस्कारों का चलन नियमित होता रहे और आर्ष विचारों का प्रचार सदैव होता रहे, उसके लिए एक आर्ष संगठन होना चाहिए। उन्होंने कोई भी प्रचलित मत या नया मत न बनाकर आर्य समाज का गठन किया या यों कहें **महाभारत के पश्चात् प्राचीन आर्य संगठन की पुनरावर्ती की और जब तक संसार में आर्य समाज रहेगा। आर्ष विचारों का प्रकाशपुंज प्रकाशित होता रहेगा। यह भी मानव निर्माण योजना थी।**

गुरुकुलों का निर्माण- महर्षि दयानन्द जी के वेदों के आर्ष विचारों से प्रभावित होकर आर्यों ने पूर्ण मानव बनाने हेतु भारत में प्राचीन स्तर पर गुरुकुलों की स्थापना कर दी।

महर्षि दयानन्द के अनुयायियों से निवेदन- महर्षि दयानन्द जी ने मानव निर्माण की पूर्ण योजना हम आर्यों के समझ रखी। ज्यों-ज्यों आर्य समाज की उमर बढ़ रही है वैसे-वैसे हम आर्य समाज के अनुयायी महर्षि के सिद्धान्तों से हटते जा रहे हैं। उन्होंने कल्पना की थी इस योजना से सारा संसार आर्य बन जाएगा, किन्तु हम स्वयं पूर्ण आर्य नहीं बन पा रहे हैं। हम अपने हृदय पर हाथ रखकर सोचें, क्या हम अपने बालकों के पन्द्रह संस्कार कर रहे हैं। १६वां तो अन्तेष्टि कर्म परिवार करता है। **आर्यों के परिवार भी पाश्चात्य सभ्यता के शिकार होते चले जा रहे। केवल तीन चार संस्कार ही अधिकांश आर्यों के घरों में होते हैं। आर्य समाज के १४१ वर्षों में हमने क्या खोया क्या पाया। चिन्तन आवश्यक है।**

आज सन्यासी, वानप्रस्थ व प्रतिनिधि सभायें व प्रमुख आर्य अपनी -अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने में संघर्षरत हैं। हम आर्य–आर्य समाज की आत्मा पर आघात कर रहे हैं। उचित मार्ग दर्शन संन्यासी वर्ग व नेतृत्व व पुरुषार्थी आर्य अच्छी प्रकार कर सकते हैं। आइये हम आज के आर्य समाज को गति देने के लिए महर्षि दयानन्द जी के उक्त सिद्धान्तों पर चलेंगे तो निश्चय ही भविष्य में सम्पूर्ण भारत आर्य बन जाएगा या अपने विचारों को बदलने पर मजबूर हो जाएगा।

आज के संस्कार

आज भारत की शिक्षा पद्धति का उद्देश्य भौतिक है, शिक्षा से मानव में सत्य व अध्यात्म संस्कार बनता है। आज नैतिक शिक्षा का आधार संसार खोता जा रहा है। जब युवक पढ़-लिखकर कार्य क्षेत्र में उतरते हैं तो कोई डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, वकील, साइन्टिस्ट बनता है। उसमें अपने व्यवसाय के प्रति आदर्श सत्यपथ के संस्कार न होने से वह अपने-अपने पदों में भ्रष्टाचार करना शुरू कर देते हैं और सारा सामाजिक वातावरण दूषित हो जाता है। समाज भ्रष्टाचार की दलदल में फंसता चला जाता है और मानव शिक्षा का आधार व्यवसायी हो गया है। ईश्वरीय वैदिक संस्कार लुप्त होते जा रहे हैं। अनेक मत मतान्तरों के परिणामस्वरूप कारण आपसी विवादों में उलझ कर मानवता को खोते जा रहे हैं। •

वेदों में नारी की स्थिति

- शिवनारायण उपाध्याय -
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा, (राज)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

कुछ वर्ष पूर्व मुझे आश्रय भवन कोटा में आयोजित एक संस्कार विषयक गोष्ठी में सम्मिलित होने तथा अध्यक्षता करने का सुअवसर मिला था। गोष्ठी के मुख्य वक्ता स्थानीय श्री बिट्ठलनाथ संस्कृत महाविद्यालय के आचार्य श्री श्यामनन्दन मिश्र थे। उन्होंने जब पुंसवन संस्कार में बताया कि इस संस्कार में परमात्मा से परिवार को एक श्रेष्ठ पुत्र रत्न प्रदान करने की प्रार्थना की जाती है तब प्रसिद्ध पर्यावरण विद् एवं जैन धर्म के गहन अध्येता श्री सूरजमल जैन ने प्रश्न किया कि क्या वेद में एक श्रेष्ठ कन्या प्रदान करने की भी प्रार्थना परमात्मा से की जाती है? इस पर वक्ता का उत्तरा नकारात्मक था। इस पर विवाद छिड़ गया कि वेद में स्त्री जाति की स्थिति दोयम दर्जे की है तो यह स्त्री जाति के लिए सम्मानजनक नहीं है। मैंने अपने व्याख्यान में ऋ. १०.१५९ की प्रथम तीन ऋचाओं की व्याख्या कर विवाद शान्त कर दिया। ऋचाएं निम्ननांकित हैं-

उदसौ सूर्योअगादुदयंमामकोभगः।
अहं तद्विद्वला पतिमभ्यसक्षि विषासहिः। ऋ. १०.१५९.१
अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विचाचनी।
ममेदनु क्रतुं पतिः सेहानाया उपाचरेत। ऋ. १०.१५९.२
मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो में दुहिता विराट्।
उताहमस्मि सञ्जया मे श्लोक उत्तमः। ऋ. १०.१५९.३

परन्तु मैं स्वयं संतुष्ट नहीं हुआ। वर्ष २१ मई २०११ को आर्य समाज भारत हल्ली, बंगलुर में मुझे वेदों में स्त्री की स्थिति पर व्याख्यान देने को कहा गया। इस हेतु मैंने वेदों का विहंगावलोकन किया तो सामवेद के दो मन्त्रों में समाधान होना पाया गया। सामवेद मन्त्र संख्या १४६० तथा ऋ. ७.९६.४ इस प्रकार है-

जनीयन्तोः न्वग्रवः पुत्रीयन्तः सुदानवः। सरस्वन्तं हवामहे।

इस मन्त्र के ऋषि वशिष्ठ हैं। वशिष्ठ ने अपने विवाह के समय पत्नी का हाथ थामते हुए कहा था-

'त्वया वयं धारा उदन्या इव अतिगाहेमणि द्विवः'

तेरे साथ मिलकर हम अप्रीतिकर दुगुर्णों को ऐसे तर जाएं जैसे पर्वतीय जल धाराओं को हाथ पकड़कर हम पार करते हैं। मन्त्र का अर्थ है- ऋषि ने (**जनीयन्तः**) पत्नी की कामना की परन्तु केवल इसलिए कि (**नु**) अब वे (**अग्रवः**) आगे बढ़ सकेंगे। इस संसार सागर को अकेला पार करना अति कठिन है। पति-पत्नी मिलकर इसे पार करने में समर्थ हो सकते हैं। उन्होंने (**पुत्रीयन्तः**) सन्तान (**पुत्र-पुत्री**) को भी चाहा। पर केवल (**सुदानवः**) इस भावना से कि अपने (**सु**) उत्तमांश को (**दानवः**) लोकहित के लिए अपने पीछे छोड़ जावें। (**सरस्वन्तम् हवामहे**) ज्ञान के सागर परमात्मा को हम सदा पुकारते हैं। पण्डित तुलसीराम ने अपने सामवेद भाष्य में इस मन्त्र का भाष्य करने के अनन्तर लिखा है- सामश्रमीजी कहते हैं कि विवरण के मत में यह एक ऋचा का सूक्त नहीं है, किन्तु दो ऋचाओं का प्रगाथ है तथा च अगली 'उत नः..., यह ऋचा इसी सूक्त की दूसरी ऋचा है। अब दूसरी ऋचा पर विचार करते हैं-

उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा। सरस्वती स्तोभ्याभूत्।

इस ऋचा में सुख देने वाली, मनोहर सर्व प्रिय सरस्वती का वर्णन है जो सात बहिनें पांच प्राण, मन और बुद्धि के समान स्तुति करने के योग्य हैं। इससे तो यही सिद्ध होता है कि पूर्व मन्त्र में एक सुलक्षणा कन्या की ही कामना की गई है। वास्तव में वेदों में स्त्री और पुरुष में किसी को यदि दूसरे से श्रेष्ठ बताया गया है तो वह स्त्री ही है। वैसे आत्मा का कोई लिंड् नहीं होता है। परमात्मा को भी सृष्टि का माता और पिता दोनों माना गया है।

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अथा ते सुम्नमीमहे।

हे (**वसो**) सबको निवास देने वाले प्रभो। (**त्वं ही**) निश्चय से आप ही (**नः**) हमारे (**पिता**) पालने करने वाले पिता और (**त्वं**) आप ही हमारी (**माता**) माता (**बभूविथ**) हो। (**मा निर्माता भवति**) (**शतक्रतोः**) आप अनन्त ज्ञान एवं कर्मों के स्वामी हो। (**अथ**) अब (**ते**) आपके ही (**सुम्नम्**) स्तोत्रों को (**ईमहे**) हम चाहते हैं।

वेदों में धर्म शास्त्र के अध्ययन एवं शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार मानव मात्र को प्राप्त है। यजुर्वेद २६.२ देखिये-

यथेमां वाचं कल्याणी मावदानी जनेभ्यः।
ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्रायचार्य्याय च स्वाय चारणाय च।
प्रिया देवानां दक्षिणायै दात्तुरिह
भूयासमयं में काम समृध्यतामुपंमादो नमतु।

यजुर्वेद अध्याय ७ मन्त्र संख्या ३३ के भावार्थ में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं- **'सब विद्वान और विदुषी स्त्रियों की योग्यता है कि समस्त बालक एवं बालिकाओं के लिए निरन्तर विद्या दान करें। राजा एवं धनी पुरुष इन लोगों के लिए धनादि से इनकी आजीविका की व्यवस्था करें।'** वेदों में विद्या और स्त्री शिक्षा पर इतना अधिक बल दिया गया है कि वाणी की दात्री देवी सरस्वती को माना गया है। इतना ही नहीं वेदों की अनेक ऋषिकाएं हैं जिनमें सरस्वती, घोषा, अपाला, सविता, सर्पराज्ञी, सूर्या, सावित्री, अदिति, दाक्षायणी, लोपामुद्रा, विश्ववारा, आत्रेयी आदि अति प्रसिद्ध हैं। कन्या को परिवार पर बोझ नहीं मानकर परिवार का धन माना गया है। विवाह के अवसर पर कन्या का पिता अपने भावों को इस प्रकार व्यक्त करता है-

'सोमजुष्टं ब्रह्मजुष्टं मर्यम्मा संभृतं भगम् ।
धातुर्देवस्थ सत्येन कृणोमि पतिवेदनम् । अथर्व. २.३६.२

(भगम्) मैं इस कन्यारूप ऐश्वर्य को उस (**धातुः देवस्य**) प्रभु के (**सत्येन**) सत्य नियम के अनुसार (**पति वेदनम्**) पति का धन (**कृणोमि**) करता हूं। (**ब्रह्मजुष्टम्**) ज्ञान से वे वित्त हुई है, (**अर्यम्मा संभृतम्**) अत्यन्त संयमी जीवन जीने वाली है। इसी प्रकार अथर्व वेद २.३६.६ में कहा गया है- '**आकृन्दय धनपते वरमामनसं कृणु**' हे (**धन्यते**) कन्या रूप धन के पिता । आप (**वरम्**) वर को (**आकृन्दय**) आदरपूर्वक आमंत्रित कीजिए। उसे उचित व्यवहार से (**आमनसम्**) अनुकूलमन वाला (**कृणु**) कीजिए। फिर कन्या को स्वयंवर विधि से कई योग्य युवाओं में से अपने लिए एक जीवनसाथी, पति चुनने का अधिकार दिया गया है। युवाओं को ऐसा अधिकार प्राप्त नहीं है। हम सभी जानते हैं कि चुनने वाले की स्थिति चुना जाने वाले से ऊंची होती है। युवति अपने वर में किन-किन गुणों का पाया जाना आवश्यकता समझती है, इस विषय पर वेदों में विस्तृत वर्णन हुआ है। यहां हम केवल तीन मन्त्र उद्घृत कर रहे हैं-

'उपयाम गृहीतोऽसि सावित्रांऽसि चिनोघाऽअसिचनो मयि धेहि।
जिन्व यज्ञं निन्व यज्ञ पतिं भगाय देवाय त्वा
सावित्रे।'

यजुर्वेद ८.७

कन्या वर से कहती है- 'आप (**उपयाम गृहीत असि**) उपासना के द्वारा यम नियमों के धारक हो। (**आप सावित्रःअसि**) आप सविता देव के उपासक हो अर्थात् आपका जीवन नियमित है। (**चनोघाः**) आप निश्चय से उत्तम अन्न के धारण करने वाले (असि) हैं। (**चनोमयिधेहि**) मुझमें अन्न धारण कीजिए। (**यज्ञं जिन्व**) आप यज्ञ को भी प्राप्त हैं अर्थात् अपनी आय में से यज्ञ (**परोपकार, श्रेष्ठ कर्म**) में भी व्यय करते हैं। (**यज्ञपतिं जिन्व**) प्रभु यज्ञपति हैं। मैं (**त्वा**) आपको (**भगाय**) ऐश्वर्य के लिए प्राप्त होती हूं। (**देवायत्वा**) मैं आपके दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए स्वीकार करती हूं। मैं (**सावित्रे**) उत्तम सन्तानों को जन्म देने के लिए आपको स्वीकार करती हूं।

इस मन्त्र में वर में अहिंसा, सक्त, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान जीविकोपार्जन में सफलता तथा परोपकारी भावनाओं के गुणों को बताया गया है।

उपयाम गृहीतोऽस्यादितेभ्यास्त्वा।
विष्णऽउरूगायेषत सोम स्त ँरक्षस्व त्वा दमन। यजु. ८.१

वधु वर से कहती है- (**उपयाम गृहीतः असि**) आपका जीवन प्रभु की उपासना द्वारा यम नियमों में से स्वीकृत हुआ है। मैं (**आदितेभ्यः त्वा**) सूर्य के समान प्रज्ञाओं के लिए आपको वरती हूं (**विष्णो**) आप विष्णु हैं। आपका मन विशाल है। आपमें कृपणता नहीं है। (**उरुगाय**) आप प्रभु का बहुत ही गायन करने वाले हैं। (**एषः ते सोम**) यह आपकी सोमशक्ति है (**त्वं रक्षस्व**) उसकी आपको रक्षा करनी है। (**मा**) मत (**त्वा**) आपको (**दमन्**) रोगाति पीड़ित करने वाले हैं।

कदाचन स्तरीर नेन्द्र सश्चसि दादुषे।
उपोपेन्नु मघवन्मूयऽइन्नु ते दानं देवस्य पृच्यतऽ आदितेभ्य स्त्वा।
- यजुर्वेद ८.२

विषय को आगे बढ़ाती हुई कन्या कहती है कि आप (**कदाचन**) कभी भी (**स्तरीः**) अपने स्वभाव के छिपाने वाले (**न असि**) नहीं है। हे (**इन्द्र**) इन्द्रियों के अधिष्ठाता आप (**दाशुषे**) आपके प्रति समर्पण करने वालों के प्रति (**सश्चसि**) प्राप्त होते हो। हे (**मगवन्**) यज्ञशील (**उप उप इत् सु**) आप निश्चय से प्रभु के अति निकट हो। (**देवस्य**) देने वाले से आपको (**भूय इत्**) अधिक ही (**दानम्**) दान (**पृच्यते**) प्राप्त होता है। (**आदितेभ्यः त्वा**) मैं आदित्य तुल्य सन्तानों के लिए आपको प्राप्त होती हूं।

इस मन्त्र में वर के जीवन में पारदर्शिता, समर्पित व्यक्ति के प्रति स्नेह तथा आजीविका के लिए पुष्कल धनराशि अर्जित कर लेने के गुणों का विशेष रूप से वर्णन हुआ है। वेदों में यह भी वर्णित है कि वर वधु में किन गुणों की खोज करता है।

राज्ञयसि प्राची दिग्विराऽसि दक्षिणा दिक् सम्राऽसि प्रतीची दिक् स्वराऽस्युदीची दिगधिपात्यसिबृहती दिक्) यजु. १४.१३

हे वधु! तू (**राज्ञी असि**) शरीर के स्वास्थ्य की दीप्ति वाली है। मन में भक्ति की दीप्तिवाली तथा मस्तिष्क में ज्ञान की दीप्तिवाली है। इसी से (**प्राची दिक्**) तेरी दिशा आगे बढ़ने की बनी है। तू अपने कार्य में अत्यन्त कुशल हो गई है। तू (**विराट् असि**) विशेष रूप से दीप्त हुई है। क्योंकि तू प्रत्येक कार्य को अप्रमाद तथा गम्भीरता से करती है। इसी से (**दक्षिणा दिक्**) तेरी दिशा दक्षिण की हुई है। तू अपने कार्य में अति कुशल हो गई है। (**सम्राट असि**) तू घर पर उत्तम शासन करने वाली है, सारे घर को बड़े व्यवस्थित ढंग से चलाती है। (**प्रतीची दिक्**) तू इन्द्रियों का प्रत्याहरण करने वाली बनी है। (**स्वराट् असि**) तू अपना शासन करने वाली बनी है। (**अधिपत्नी असि**) तू घर की अधिष्ठान रूपेण रक्षिका है। (**बृहती दिक्**) घर को सब प्रकार से बढ़ाने की ही तेरी दिशा है। घर की सर्वोन्मुखी उन्नति करने में तू प्रवृत्त है।

मूर्धासिराड् ध्रुवा सि धरुणा धर्त्र्यसि धारणी
आयुषे त्वा वर्चसे त्वा कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा। यजु. १४.२१

(**मूर्धासि**) तू सूर्य की तरह ज्ञान की दीप्ति से चमकने वाली है तथा (**राट्**) बड़े व्यवस्थित जीवन वाली है। (**ध्रुवा असि**) तू पृथ्वी के समान अडिग है, मर्यादा में रहने वाली है। (**धरुणा**) सबको धारण करने वाली बनती है। (**धर्त्री असि**) तू वायु के समान सबके जीवन को धारण करने वाली है। (**धरणी**) स्वास्थ्य के धारण से दीर्घायु का धारण करने वाली बनती है। (**त्वा**) तेरा सरिवत्व (**आयुषे**) दीर्घायु के लिए स्वीकार करता हूं। (**त्वा**) तेरा सरिवत्व (**वर्चसे**) वर्चस के लिए होता है। (**कृष्यै त्वा**) मैं तेरा सखा बनता हूं और (**क्षेमाय त्वा**) तुझे योग क्षेम के साधन के लिए अपनाता हूं।

यन्त्री राड् यन्त्र्यसि यमनी ध्रुवसि धरित्री।
ईषेत्वोर्जे त्वा रय्यै त्वा पोषाय त्वा। यजु. १४.२२

तू (**यन्त्री**) अपने जीवन पर पूर्ण नियंत्रण रखने वाली है। इसी का परिणाम है कि तू (**राट्**) चमकती है। और वस्तुतः (**यन्त्री**) सबको नियमित जीवन वाला बनाती है। (**ध्रुवा असि**) तू पृथ्वी के समान अडिग है। (**धरित्री**) सबका धारण और पोषण करने वाली है। इतना सुनकर वधु कहती है कि मैं (**त्वा**) तुझको अपना जीवन साथी बनाती हूं। (**इषे**) अन्न की प्राप्ति के लिए मैं (**ऊर्जे त्वा**) आपको वरती हूं। जिससे हमारा जीवन बल एवं शक्ति सम्पन्न बने। (**रय्यै त्वा**) मैंने आपका वरण इसलिए किया है कि आप गृह कार्य के लिए धर्नाजन करने वाले होंगे। (**पोषाय त्वा**) सबका पोषण करने के लिए मैंने आपका वरण किया है।

हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्याय त्वा।
उर्ध्वमिमम्ध्वरं दिवि देवेषु होत्रा यच्छ। यजु. ६.२५

(**त्वा**) तुझे मैं अपना जीवन साथी बना रहा हूं। (**त्वा**) मैं तुमसे यह सम्बन्ध (**हृदे**) हृदय के लिए कर रहा हूं। (**मन से**) मन के लिए (**दिवे त्वा**) मैं तुझे स्वर्ग निर्माण के लिए अपना रहा हूं। (**इमम् अध्वरम्**) सबका पालन करने वाले इस यज्ञ को तूने (**उर्ध्वम्**) सबसे ऊपर स्थापित करना। (**दिवि**) स्वर्ग के निमित्त तथा (**देवेषु**) दिव्य गुणों की प्राप्ति के निमित्त (**होत्रा**) हवियों को (**यच्छ**) देना।

जब विवाह तय हो जाता है तब यज्ञ मण्डप में आकर वर-वधू घोषणा करते हैं-

समञ्जन्तु विश्वे देवा समायोहृदयानि नौ।
सं. मातरिश्वा सं धातु समुदेष्टी दद्यातु नौ। ऋ. १०.८५.४७

हे (**विश्वे**) समस्त (**देवाः**) विद्वत्जन। (**समञ्जन्तु**) अच्छी प्रकार जानो (**नौ**) हम पति और पत्नी दोनों (**सम् आपः**) पानी के समान एक हैं। (**हृदयन्ति**) हृदय (**मातरिश्वा**) वायु हम दोनों के हृदय को (**संदधातु**) समान करे। (**द्याता**) सूर्य (**संदधातु**) समान करे। (**देष्टी**) सरस्वती (**सम् उद धातु**) समान करे (**नौ**) हम दोनों का।

फिर वर-वधु का हाथ थामकर कहता है-

अगस्ते हस्तम ग्रहीत सविता हस्तम ग्रहीत।
पत्नी त्वमसि धर्मेणाहं गृहपतिस्तव।। अथर्व. १४१.५१

(**भगः**) ऐश्वर्यवान् परमात्मा ने (**ते**) तेरा (**हस्तम्**) हाथ (**अग्रहीत**) पकड़ा है।(**धर्माणा**) धर्म से (**त्वम्**) तू (**पत्नी**) मेरी पत्नी (**असि**) है। (**अहम्**) मैं (**त्वा**) तेरा (**गृहपति**) गृहपति हूं। वर उसी विषय को आगे बढ़ाते हुए कहता है-

ममेयमस्तु पोष्या मह्यं त्वा दाद् बृहस्पति।
मया पत्या प्रजावति सं जीव शरद् शतम् । अथर्व. १४.१.५३

यह पत्नी मेरे पोषण योग्य होवे। मुझको तुझे बड़े लोकों के स्वामी ने दिया है। तू मुझ पति के साथ सौ वर्षों तक जीति रहे।

विवाह से पूर्व कन्या का पिता वर से कहता है- हे वर! तू उठ, इस कन्या को स्वीकार कर जिससे यह कन्या मति वाली होवे। तू अपने से भिन्न गौत्र वाली, किसी के घर न ले जाई गई, माता-पिता पर आश्रित, स्पष्ट यौन वाली इस कन्या को चाह। तेरा यही भाग है, इसमें स्वयं पुत्र रूप में उत्पन्न होने के लिए जान (ऋ. १०.८५.२१.)

विवाह के साथ ही वर कहता है- हे वधू! मैं तुझे ब्रह्मचर्य नियम के उस बन्धन से मुक्त करता हूं जिसे कल्याण चाहने वाले तुम्हारे पिता ने बांध रखा है। सत्याचरण के स्थान और सत्कर्म के क्षेत्र इस गृहस्थाश्रम में मुझ पति के साथ तुझे निरापदा करता हूं। (ऋ. १०.८५.२४)
यज्ञ मण्डप में वधु- वर से कहती है-

अहं वदामि नेत् त्वं समाया महत्वं वद।
ममेदसस्त्व केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन। अथर्व. २.३८.४

(**अहम्**) मैं (**न इत्**) अभी (**वदामि**) बोल रही हूं (त्वम् त्वम्) तू-तू (**अह**) भी (**वद**) बोल। (**त्वम्**) तू (**केवल**) केवल (**मम इत्**) मेरा ही होवे (**चन**) और (**अन्यासाम्**) दूसरी स्त्रियों का (**न कीर्तयाः**) तू न ध्यान कर।

विवाह के अवसर पर कन्या का पिता कन्या को दहेज के रूप में अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार कुछ वस्त्र, आभूषण, नकद धन देता है तथा बारातियों के लिए रास्ते के खाने के लिए कुछ पकवान भी भेंट करता है।

इदं हिरण्यं गुल्गुल्वयमौक्षो अथो भगः।
एते पतिभ्यस्त्वामदुः प्रतिकामाय वेत्तवे। अथर्व. २.३५.७

(**इदम्**) यह (**हिरण्यम्**) स्वर्ण और (**गुल्गुलु**) गुलगुले (**अथो**) और (**अयम्**) यह (**औक्षः**) महात्माओं के योग्य (**भगः**) ऐश्वर्य है। (**एते**) इस कन्या पक्षवालों ने (**पतिभ्यः**) पति पक्ष वालों के हितार्थ (**त्वाम्**) तुझे (**प्रतिकामाय**) प्रतिज्ञा पूर्वक कामना योग्य (**पति**) के लिए (**वेत्तवे**) लाभ पहुंचाने को (**अदु**) दिया है।

विवाह में माता-पिता और सम्बन्धी लोग वधू को देय वस्तु के साथ यज्ञाग्नि की परिक्रमा कराते हैं। पुनः यह यज्ञाग्नि प्रजा को उत्पन्न करने वाली इस वधु को पति के प्रति प्रदान करता है।

विवाह के बाद वधु पर गृहस्थी के ठीक प्रकार से चलाने का उत्तरदायित्व आ जाता है। इस विषय में कहा है-

मगस्य नावमा रोह पूर्णामनु पदस्वतीम् ।
तयोपप्रतारय यो वरः प्रतिकाम्यं। अथर्व २.३६.५

हे वधु! (**भगस्य**) ऐश्वर्य की (**पूर्णाम्**) भरी भरायी और (अनुपदस्वतीम्) अटूट (**नावम्**) नावपा (**आ रोह**) चढ़ और (**तया**) इस (**नाव**) से (**अपने वर को**) (**उप प्रतारय**) आदरपूर्वक पार लगा (**यः**) जो (**वरः**) वर (**प्रतिकाम्यः**) प्रतिज्ञा कर के चाहने योग्य है।

आ ते नयतु सविता नयतु पतिर्यः प्रतिकाम्यः।
तमस्यै धेह्योषधे। अथर्व. २.३६.८

हे वधू! (**सविता**) सर्व प्रेरक परमेश्वर (**ते**) तेरे लिए (**उस पति को**) (**आनयतु**) मर्यादा पूर्वक चलावे और (**नयतु**) नायक बनावे (**यः पति**) जो पति (**प्रतिकाम्यः**) प्रतिज्ञापूर्वक चाहने योग्य है। (**ओषधे**) हे तापनाशक परमात्मा (**त्वम्**) तू (**अस्यै**) इस कन्या के लिए (**उस पति को**) (**धेहि**) पुष्ट कर। पत्नी धन की रक्षा करे।

उसको आदरपूर्वक बुलावे और सदा उसे अपने दाहिनी और रक्खे। इस विषय पर कहा गया है-

आ क्रन्दय धनपते वरमामानसं कृणु।
सर्वं प्रदक्षिणं कृणु यो वरः प्रतिकाम्यः। अथर्व २.३६.६

(**धनपते**) हे धनों की रक्षा करने वाली कन्या (**वरम्**) वर को (**आ**) आदरपूर्वक (**क्रन्दय**) बुला और (**आमनसम्**) अपने मन के अनुकूल (**कृणु**) कर (**यः**) जो (**वरः**) वर (**प्रतिकाम्यः**) नियम करके चाहने योग्य हैं।

वधू को सम्मान सहित माता-पिता के घर से पति के गृह ले जाया जावे। इस विषय में कहा गया है-

पूषा त्वेतो नयतु हस्त गृह्याश्विनी त्वा प्रवहतां रथेन।
गृहन्गच्छ गृह पत्नी या थायो वशिनी त्वं विदधमा वदासि।
ऋ. १०.८५.२६

हे वधु! (**पूषा**) पोषण करने वाला वर (**त्वा**) तुझे (**इत**) इस पितृगृह से (**हस्तगृहा**) पाणिग्रहण करके (**नयतु**) ले जावे। (**अश्विन**) पति के सम्बन्धी (**त्वा**) तुझे (**रथेन**) रथ से (**प्रवहताम्**) ले जावें। (**गृहान्**) गृहों को (**गच्छ**) जा (यथा) जिससे (**गृह पत्नी**) गृह पत्नी (असः) हो। (**वशिनि**) सब मृत्यु आदि को वश में करने वाली (**त्वम्**) तू (**विदथम्**) पतिगृह के मृत्य आदिजनों को (**आ वदासि**) उत्तम वचन बोल पति गृह में पहुंचने पर वधु के सम्मान में यज्ञ किया जाता है। जिसमें सभी सम्बन्धी एवं अन्य परिवार के मित्र लोग सम्मिलित होते हैं। वधु को भेंट तथा आशीर्वाद देते हैं।

सुमंङ्गलीरियं वधूरिमा समेत पश्यत
सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्तं वि परेतन। ऋ. १०.८५.३३

(**इयम्**) यह (**वधुः**) वधु (**सुमङ्गली**) शुभ सौभाग्यकारिणी है। (**सम आ इत**) आप लोग आइये। (**पश्यत**) देखिये (**अस्य**) इसे (**सौभाग्यम्**) सौभाग्य का आशीर्वाद (**दत्वाय**) देकर (**अथ**) अनन्तर (**अस्तम**) गृह को (**वि परेतन**) जाइए।

विवाह के बाद भी वर के माता-पिता यह आग्रह करते हैं कि वे उनके साथ ही रहें, अलग गृह बसाकर पृथक न रहें।

इहैव स्तं मा वि पौष्ट विश्वमायुव्यैश्नुजतम् ।
क्रीलन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिमोदमानौ स्वगृहे। ऋ. १०.८५.४२

हे वर और वधु! (**इह**) यहां (**एक**) ही (**स्तम्**) रहो (**या**) नहीं (**वियौष्टम्**) वियुक्त हो, (**विश्वम्**) पूर्ण (**आयुः**) आयु को (**व्यश्नुतम**) प्राप्त करो (**स्वे**) अपने (**गृहे**) घर में (**पुत्रैः**) पुत्रों (**नप्तृभिः**) पौत्रों और नातियों के साथ (**मोदमानो**) प्रसन्न होते हुए (**क्रीडन्तो**) खेलते हुए (**स्तम्**) रहो।

परिवार में वधु की स्थिति क्या रहेगी, इस विषय में ऋग्वेद १०.८५.४६ में स्पष्ट वर्णन इस प्रकार है-

सम्राज्ञी श्व शुरे भव सम्राज्ञी श्वश्रूवां भव।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अभि देवृषु। ऋ. १०.८५.४६

हे वधू! तू (**श्वशुरे**) श्वसुर के अधीन (**सम्राज्ञी**), साम्राज्ञी (भव) हो (**श्वश्रूवां**) सासु के अधीन (सम्राज्ञी) सम्राज्ञी (भव) हो (**ननान्दरि**) ननदों के मध्य (**सम्राज्ञी**) (**भव**) हो और (**देवृषु**) देवरों के (**अधि**) बीच में (**सम्राज्ञी**) साम्राज्ञी (**भव**) हो।

वधु के सासु और ससुर भी उसका स्वागत करते हैं और उसे नाना प्रकार के उपहार देते हैं।

शं. ते हिरण्यं शमु सन्त्वापः शं मेथिर्मवतु युगस्य तद्मे ।
शं त आपः शत पवित्रा भवन्तु शमु पत्या तन्वं सं. स्पृशस्व।
- अथर्व.- १४.१.४०

हे वधू ! (**ते**) तेरे लिए (**हिरण्यम्**) स्वर्ण आभूषण आदि (**शम्**) सुखदायक हो, (उ) और (**आपः**) प्रजाएं (**सन्तान, सेवक आदि**) (**शम्**) शान्ति कारक (**सन्तु**) होवे। (**मेथि**) पशु बांधने का काष्ठ दण्ड (**शम्**) आनन्दप्रद और (**युगस्य**) जुयेका (**तद्यें**) छिद्र (**शम्**) शान्तिदायक (**भवतु**) होवे। (**ते**) तेरे लिए (**शत पवित्राः**) सैकड़ों प्रकार के शुद्ध करने वाले (**आपः**) जल (**शम्**) सुखदायक (**भवन्तु**) होवें। (**शम्**) शान्ति के लिए (**उ**) ही (**पत्या**) पति के साथ (**तन्वम्**) अपनी श्रद्धा को (**संस्पृशस्व**) संयुक्त कर।

गृह कार्यों में पति आदि सब वधु की सहायता करें।

शर्म वर्मैतदा हरास्यै नार्या उपस्तरे।
सिनीवालि प्रजायतां भगस्य सुमतावसत् । अथर्व- १४.२.२१

हे विद्वान! (**एतत्**) यह (**गृह कार्य रूप**) (**शर्म**) सुखदायक (**वर्म**) कवच (**अस्यैनार्ये**) इस नारी को (**उप स्तरे**) ओढ़ने के लिए (**आ हर**) ला। (**सिनीवालि**) हे अन्न वाली पत्नी! तुझसे (**प्रजायताम्**) उत्तम सन्तान होवे और वह (**सन्तान**) (**भगस्य**) ऐश्वर्यवान् परमात्मा की (**सुमतौ**) सुमति में (**असत्**) रहे। वधु का भी कर्त्तव्य है कि अपने व्यवहार से सभी को प्रसन्न रखे।

स्योनाभव श्वशुरेभ्यः स्योना पत्ये गृहेभ्यः।
स्योनास्ये सर्वस्यै विशे स्योना पुष्टायैषां भव।
अथर्व- १४.२.२७

हे वधू! तू (**श्वसुरेभ्यः**) ससुर आदि के लिए (**स्योना**) सुख देने वाली (**पत्ये**) पति के लिए और (**गृहेभ्यः**) घर वालों के लिए (**स्योना**) सुख देने वाली (**भव**) हो। (**अस्यै**) इस (**सर्वस्यैविशे**) सब प्रजा के लिए (**स्योना**) सुख देने वाली और (**एषाम्**) इनके (**पुष्टाय**) पोषण के लिए (**स्योना**) सुख देने वाली (**भव**) हो।

अथर्व वेद- १४.१.६३ में कहा गया है कि सब स्त्री-पुरुष प्रयत्न करें कि पितृकुल से पृथक होकर वधु प्रसन्न रहे और जैसे सुन्दर स्वच्छ शाला के सुन्दर स्वच्छ द्वार में होकर जाने-आने में सुख होता है वैसे ही सुप्रबन्ध वाले गृहाश्रम में वधू को सुख मिले।

इसी प्रकार वेद में कहा गया है कि गृहस्थाश्रम रूपी यज्ञ में स्त्री का स्थान ब्रह्मा का है जैसे यज्ञ में ब्रह्मा ही मुख्य होता है तथा अध्वर्यु, होता, उद्गाता को उसका आदेश मानना होता है, इसी प्रकार गृहस्थ में स्त्री का आदेश सभी को स्वीकार करना होता है।

इस छोटे से लेख में ही हम देखते हैं कि वेदों में स्त्री को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। चारों वेदों में ७०० से भी अधिक मन्त्र स्त्री विषयक ही हैं। अब हम विषय को आगे न बढ़ाकर यहीं विराम देते हैं। **इति शम् ।**●

आदि कवि का काव्य

- नरेंद्र आहूजा 'विवेक' -
६०२ जी.एच. ५३, सेक्टर-२०
पंचकूला, हरियाणा
चलभाष- ९४६७६०८६८६

परमपिता परमेश्वर जिनका मुख्य एवं निज नाम ओ३म् है उन्हें उनके असंख्य गुणों के कारण अनेक नामों से जाना जाता है। इसी क्रम में यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के आठवें मन्त्र में **कविर्मनीषी परिभूः।** कहकर ईश्वर को आदि कवि सर्वत्र सभी जीवों की मनोवृत्तियों को जानने वाला तथा दुष्ट पापियों का तिरस्कार करने वाला बतलाया गया है, **'जहां ना पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि'** यह अक्सर कहा जाता है। इस मन्त्र से ईश्वर के कवि रूप में सर्वव्यापी, सर्वज्ञ सर्वान्तर्यामी गुणों का पता चलता है। सर्वत्र सभी जीवों की मनोवृत्तियां जानने वाला आदि कवि ईश्वर। इसके लिए हर काल में हर स्थान पर होना अर्थात् अनादि, अनन्त और सर्वव्यापी गुणों का होना आवश्यक है। साथ ही सर्व अन्तर्यामी होकर सभी जीवों के मनों में रहकर उनके मनोभावों को जानना और सब कुछ जानने के कारण उस ईश्वर का सर्वज्ञ होना सिद्ध होता है। अपौरुषेय ग्रन्थ ईश्वरीय वाणी वेद में वर्णन से परमपिता परमेश्वर का आदि कवि होना सिद्ध होता है।

परन्तु किसी भी रचनाकार को उसकी रचना के माध्यम से भी जाना जाता है। जैसे चित्रकार की पहचान उसके बनाए चित्र से होती है। शिल्पकार अपने शिल्प से जाना जाता है। ठीक इसी प्रकार जब हम परमपिता परमेश्वर को आदि कवि कहते हैं तो उसकी पहचान उनके काव्य से होगी। अब प्रश्न उठता है कि ईश्वर का काव्य क्या है, जिससे हम आदि कवि को जान सकें। जैसे रचनाकार की रचना उसकी कृति है और वह अपनी रचना के माध्यम से जाना गया, ठीक उसी प्रकार आदि कवि ईश्वर को जानने के लिए उनके काव्य को देखें और उस कवि के संदेश को समझकर जीवन में ढालें और जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करके सार्थक करें।

आदि कवि ईश्वर की रचना क्या है? सृष्टिकर्ता के रूप में इस समस्त सृष्टि का निर्माण परमपिता परमेश्वर ने ही तो किया है और यह समस्त सृष्टि उनकी रचना या काव्य ही तो है। इतना ही नहीं उस परमपिता परमेश्वर ने सृष्टि के निर्माण के समय ही सृष्टि में रहने वाले समस्त प्राणियों के लिए एक नियमावली संहिता के रूप में वेद ज्ञान चार ऋषियों के माध्यम से प्रदान किया, यह अपौरुषेय ग्रंथ ईश्वरीय वाणी वेद ज्ञान उसी आदि कवि का काव्य है। अथर्ववेद में **देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।** कहकर आदि कवि परमात्मा के काव्य को देखने का संदेश दिया गया जो न कभी मरता है और न ही जीर्ण-शीर्ण होता है। यहां प्रश्न उठता है कि हम ईश्वर रचित उसके काव्य को कैसे देखें? उस आदि कवि के काव्य को देखने का अभिप्राय क्या है? अथर्ववेद के इसी मन्त्र के द्वारा ईश्वर के इस काव्य को **अन्ति-सन्ति** अर्थात् समीप से समीप या निकट से भी निकट बताया गया। इतनी निकट होने के कारण जैसे आंखों लगा सुरमा आंखों से दिखाई नहीं देता ईश्वर के काव्य के संदर्भ में भी हमारी यही स्थिति हो जाती है। **ईश्वर के काव्य को देखने के लिए हमें अपनी ओर अपने ईश्वर की स्थिति का बोध होना अत्यंत आवश्यक है। ईश्वर सर्वभूतानां तिष्ठति** अर्थात् वह ईश्वर तो अति सूक्ष्म रूप में हम सभी जीवात्माओं के अन्दर विद्यमान है। इससे स्पष्ट हुआ कि उस ईश्वर और उसके काव्य को देखने समझने के लिए हमें कहीं बाहर भटकने की आवश्यकता नहीं है। वैसे भी हमारी इन्द्रियां बाह्य मुखी हैं अर्थात् हमारी आंखें बाहर की दुनिया को देखती हैं, कान बाहर की दुनिया की आवाजें सुनते हैं, परन्तु उस ईश्वर और उसके काव्य को देखने के लिए तो हमें अन्तर्चक्षु खोलकर अन्दर की यात्रा शुरू करनी पड़ेगी। तभी हम जान पाएंगे कि मैं और मेरा ईश्वर दोनों एक साथ मेरे ही अन्दर विराजमान हैं। बस आवश्यकता है तो अपने ही अन्दर झांकने की अन्तःयात्रा प्रारम्भ करने की।

अथर्ववेद के इसी मन्त्र में **न ममार ना जीर्यति** कहकर यह भी कहा है कि यह काव्य ना कभी मरता है और न ही जीर्ण-शीर्ण होता है। इससे ईश्वरीय संदेश वेद की हर स्थिति हर काल में प्रासंगिकता सिद्ध होती है। क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने भी **वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहकर आदि कवि के इस महान् काव्य की प्रासंगिकता को स्थापित किया है। वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म बताकर आदि कवि के काव्य को देखने का निर्देश दिया है।** सृष्टिकर्ता ईश्वर की सृष्टि को यदि हम उस कवि के काव्य के रूप में देखें तो सूक्ष्म रूप से विभक्त विभिन्न परमाणुओं का संयोग मिलना सृष्टि का निर्माण और इनका विभाजन वियोग अलग हो जाना ही सृष्टि का विनाश या संहार है। **यहां स्पष्ट सिद्धान्त है कि ना तो शून्य से उत्पत्ति और ना ही शून्य में कुछ विलीन होता है। सृष्टि का निर्माण सृष्टिकर्ता ईश्वर द्वारा किया गया और किसी भी कार्य के लिए कर्ता का होना अत्यन्त आवश्यक है।** जैसे छापेखाने के अक्षर बिना संयोजन के स्वयं उठकर किसी पुस्तक को नहीं छाप सकते, ठीक उसी प्रकार बिना सृष्टिकर्ता ईश्वर के सृष्टि का निर्माण असंभव है। अतः यह समस्त सृष्टि प्रकृति इसके रंग में इसमें रहने वाले समस्त जीव ईश्वर की कृति या फिर उस आदि कवि का काव्य ही तो है और ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेद जो सृष्टि में रहने वाले जीवों के लिए नियमावली या संहिता के रूप में है वह भी उसी आदि कवि का काव्य है जो ना कभी मरता है और ना ही जीर्णशीर्ण होता है अर्थात् सदैव प्रासंगिक रहता है। इससे स्पष्ट है कि हम उस आदि कवि के काव्य को देखें उसे समझें जीवन में धारण करें **संश्रुतेन गमेमहि** उसी के अनुसार चलें और **मा श्रुतेन विराधिषी** अर्थात् ईश्वर प्रदत्त सृष्टि के साधनों के संदर्भ में उनका **तेन त्यक्तेन भुंजीथा** अर्थात् त्यागपूर्वक भोग करें। ●

रामचरित मानस- एक आपत्तिकालीन महाकाव्य

- स्वामी हरिश्वरानन्द सरस्वती
तेजेन्द्र नगर-चांदखेड़ा
अहमदाबाद- गुजरात
चलभाष- ८१५५०५५२६०

अतीत में इतिहास के झरोखों से झांकने से पता चलता है कि आज से लगभग ४०० वर्ष पूर्व मुगल सम्राट अकबर के समकालीन महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी थे। वे उस समय के संस्कृत देवनागरी, भोजपुरी आदि भाषाओं के प्रकाण्ड विद्वान थे। जिन्होंने रामचरित मानस जैसे महाकाव्य की रचना चौपाइयों, दोहा, सोरठों एवं मधुर छन्दों में की। जिनकी स्वर, लहरियों से वक्ता एवं श्रोता आज भी भावविभोर हो जाते हैं। इस काव्य में वीर रस, श्रृंगार रस, हास्य रस तथा करुणा रस की प्रधानता है। अस्तु.....

वैसे तो देशी-विदेशी इतिहासकारों ने अकबर को एक महान् सम्राट बताया है। अकबर दि ग्रेट कहा है, मगर भारतीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह मुगल बादशाह भारतीय संस्कृति आदि के लिए बहुत ही घातक सिद्ध हुआ है। यूं तो औरंगजेब को सबसे क्रूर शासक इतिहासकारों ने घोषित किया है। मगर अकबर तो एक मीठी छुरी के समान था। ऐसा भी कुछ इतिहासकारों का मानना है। जो इतिहासकार भारतीयता को प्यार करते हैं। आजादी के पश्चात् सत्ताधारी पक्ष को चाहिए था कि ऐसे राष्ट्रीय कलंकों का गुणगान करने के स्थान पर यथायोग्य स्थान उस इतिहास में दिया जाना चाहिए था। मगर वोट और तुष्टिकरण की राजनीति के लोभ के कारण ऐसा नहीं होने दिया गया।

अकबर ने भारतीय इतिहास में अपने आपको उत्तम स्थान दिलाने के लिए भारतवासियों को जो उस समय तथा आज भी जो हिन्दू नाम से जाने जाते हैं को स्थाई तौर पर इस्लाम सम्प्रदाय का अनुयायी बना देने के कुटिल प्रयास किए थे। उसकी नीतियों से भारत उस काल से २५.५० वर्षों में सम्पूर्ण रूप से मुसलमान बन गया होता और भारत में हिन्दू नाम की कोई चिड़िया दिखाई नहीं देती, आर्य शब्द का तो कहना ही क्या? वैसे हिन्दू शब्द का भी अपना एक इतिहास है। यह हिन्दू शब्द भारतीय धार्मिक ग्रन्थों अथवा पुस्तकों में कहीं भी देखने को नहीं मिलता है, मगर फिर भी हमारे पौराणिक भाई इस हिन्दू शब्द के पीछे ऐसे पड़े हैं कि इस शब्द को छोड़ना ही नहीं चाहते हैं, जबकि इस शब्द का भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में कोई स्थान ही नहीं है। जैसे-वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रन्थ, गीता, महाभारत, भागवत, पुराणों में (यहां तक कि भविष्य पुराण) में भी नहीं है। जबकि भविष्य पुराण की रचना अंग्रेजों के काल में हुई है।

पण्डित श्री रघुनन्दन शर्मा जी ने अपने अमर ग्रन्थ **''वैदिक सम्पत्ति''** में इस हिन्दू शब्द पर अच्छा प्रकाश डालते हुए लिखा है कि यह हिन्दू शब्द किसी भी भारतीय भाषा का न होकर फारसी का शब्द है, जहां उनकी भाषा में इस शब्द का अर्थ होता है । काला, काफिर, धब्बेदार, गुलाम जो इस्लाम पर ईमान न लाये, अर्थात् सर्व अवगुणों से सम्पन्न जो व्यक्ति हो उसका नाम हिन्दू होता है। इसीलिए भारत में रहने वाले भारतीय मुसलमान अपने आपको हिन्दू कहलाना पसंद नहीं करते हैं। जबकि हिन्दू और हिन्दुस्तान उनके पूर्वजों द्वारा ही हमें दिए गए नाम हैं जिनको हम और हमारा देश आजादी के पश्चात् भी अभी तक ढोता चला आ रहा है और अगर यही हाल रहा तो न जाने कब तक हमें ये बदनुमा दाग ढोता रहना पड़ेगा। परमात्मा हमारे कर्णधारों को सद्बुद्धि प्रदान करे।

हिन्दुस्तान में रहने वाले मुसलमान अपने आपको हिन्दू इसलिए कहलाना पसंद नहीं करते हैं, क्योंकि वे भली प्रकार इस हिन्दू शब्द का अर्थ जानते हैं कि हिन्दू किस चिड़िया का नाम है। अंग्रेजों की कूटनीति (हिन्दू-मुस्लिम विभाजन के आधार पर) भारत का विभाजन हुआ तो मुसलमानों ने अपने विभाजित भाग का नाम पाकिस्तान रखा, जिसका अर्थ होता है कि वह भू-भाग जो पवित्र है वह पाकिस्तान, बाकी जो बचा वह अपवित्र अर्थात् हिन्दुस्तान, जो उनके अनुसार अपवित्र है। जबकि इन मुसलमानों के आक्रमणकारी पूर्वजों ने ही यह हिन्दू और हिन्दुस्तान

नाम हमें दिये थे, क्योंकि हमारे सीधे-सादे पूर्वज इस मलेच्छ भाषा को जानते नहीं थे। इसीलिए सहज ही इन नामों को स्वीकार कर लिया। मगर आज भी हम अपने पूर्वजों की पढ़ी-लिखी सन्तानें समझदार होते हुए भी इस हिन्दू बदनाम नाम को आज तक भी अपने गले में घण्टी की तरह बांधे हुए घूमते रहने में ही अपना गर्व अनुभव करती घूम रहीं है।

उसी धूर्त अकबर महान ने भारतीयों की अज्ञानता का लाभ उठाते हुए एक नए सम्प्रदाय को बनाने की घोषणा कर दी, जिसका नाम रखा दीन-ए-इलाही। इस सम्प्रदाय के शब्द का अर्थ उसने यह स्पष्टीकरण देकर किया कि इस नये धर्म में कुछ बातें तो हिन्दुओं की मानी जाएगी और कुछ बातें मुसलमानों की मानी जाएगी। जैसे उदाहरण के लिए हम कहते हैं राजा राम। उसने कहा कि राजा राम नहीं बादशाह राम कहो। हम कहते हैं महारानी सीता, उसने कहा महारानी सीता नहीं बेगम सीता कहो। आदि.... ऐसे शब्दों की कल्पना कर दी जिससे उसके अनुसार भारतीय हिन्दू धर्म के खतरे की संभावनाएँ बढ़ती चली गई।

कहते हैं कि अकबर शिक्षित नहीं था। मगर उस समय के मुल्ला, मौलवियों की सलाह पर उसने दीन-ए-इलाही सम्प्रदाय की घोषणा कर दी। परिणाम जो होना था वही प्रारम्भ हो गया जिसकी संभावनाएं थीं। सामान्य हिन्दू तो इस कुचक्र को समझ ही नहीं पाया, दूसरा यह कि राज आज्ञा का पालन करना उनका कर्त्तव्य भी था, और एक प्रकार से मजबूरी भी थी। मगर कुछ विद्वानों के मतिष्क में खलबली मच गई। इस दीने इलाही सम्प्रदाय के दूरगामी परिणामों को ध्यान में रखकर उन विद्वानों के मनोमतिष्क में एक प्रकार का भूचाल आ गया। उन विद्वानों में से एक उस समय के महान् विद्वान महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी भी थे। वैसे सुना जाता है कि तुलसीदास जी अकबर के नवरत्नों में से एक थे। वे सोचने लगे कि इस दुष्ट की इस नीति से तो आने वाले (२५-५०) वर्षों में न तो हिन्दुओं के सिर पर चोटी रहेगी और न ब्राह्मणों के कन्धे पर यज्ञोपवित ही दिखाई देगा। अर्थात् सम्पूर्ण भारत इस्लाम सम्प्रदाय का अनुयायी बनकर रह जाएगा। अर्थात् सम्पूर्ण भारतवासी मुसलमान बन जाएंगे।

अब मैं करूं तो क्या करूं? क्योंकि मेरे पास धन बल नहीं है और न ही मेरे पास जन बल ही है। और सामने राजबल अर्थात् सत्ता पक्ष है।वे आपको असहाय अनुभव करने लगे। वैसे तो विद्वान साधु, सन्यासियों के पास धन होता ही नहीं है, क्योंकि वे तो स्वयं ही पारिव्राजक का जीवन जीते हैं। और जन बल उनके पास इसलिए नहीं था, क्योंकि उस समय तथाकथित हिन्दू दो भागों में बंटे हुए थे। एक तो शैव जो शिव को अपना आराध्य देव मानते थे, दूसरे वैष्णव जो विष्णु को अपना आराध्य देव मानते थे। और दोनों ही सम्प्रदाय मूर्खता की हदों को पार कर आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे कि मेरा देव तेरे देव से बड़ा, तेरा देव मेरे देव से छोटा है। दूसरा पक्ष भी इसी प्रकार के दावे करता रहता था। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में कोई भी विद्वान करें भी तो क्या करें? यही परिस्थिति उस समय महात्मा तुलसीदास जी की रही होगी।

अपनी विद्वता के तथा अपने अनुभव के आधार पर उन्हें हिन्दुओं की एक आदत कहो या स्वभाव कहो कि हिन्दू बन्दर की तरह नकल करने का स्वभाव रखते हैं। इसी कमजोरी का लाभ उठाकर उन्होंने निश्चय किया कि इतिहास में से किसी ऐसे महान पुरुष का जीवन चरित्र इन हिन्दुओं के सामने रखा जाए कि जिससे ये हिन्दू उस व्यक्तित्व का अनुसरण करके अपना जीवन, वेदों की मर्यादा में रहकर अपना जीवन व्यतीत कर सकें।

ढूंढते-ढूंढते उन्हें महान् संस्कृत के विद्वान एवं संस्कृत के महान् कवि श्री वाल्मीकि जी द्वारा रचित रामायण महाकाव्य मिला जो संस्कृत भाषा में मिला, जो आज भी उपलब्ध है। श्री वाल्मीकि जी, श्री राम के समकालीन थे, इसलिए इस महाकाव्य में कोई अतिश्योक्ति नहीं हो सकती। इस ऐतिहासिक ग्रन्थ में श्री रामचन्द्र जी का जीवन चरित्र को सार रूप में श्री तुलसीदास जी ने चौपाई, दोहा, सोरठा एवं छन्दों के रूप में बड़ा ही सुन्दर एवं मार्मिक वर्णन किया है। उस समय में प्रत्येक घर में रामचरित् की स्थापना हो गई। जिसके कारण हिन्दुओं के सिर पर चोटी एवं ब्राह्मणों के कन्धे पर यज्ञोपवित की रक्षा हो पाई।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित् मानस ने हिन्दुओं पर ऐसा क्या जादू कर दिया कि हिन्दुओं के सिर पर चोटी एवं ब्राह्मणों के कन्धे पर यज्ञोपवित की रक्षा हो पाई। यही एक ऐसा यक्ष प्रश्न है कि जिस पर भोले-भाले विद्वानों का ध्यान नहीं गया। और रामचरित् मानस का पठन-पाठन, ढोल, मजीरा तथा हारमोनियम की ताल पर धाय-धाय पढ़ते और नाचत-गाते हुड़दंग करते रहते हैं मगर अर्थ को न कोई पढ़ता है और न कोई सुनता, न कोई समझता है। वे कभी इन बातों पर ध्यान ही नहीं देते हैं कि वे कौन सी ऐसी मर्यादाएं थीं जिनका पालन मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने किया था। जिनका अनुसरण हमें करना चाहिए। मगर ये सब बातें उनकी समझ के बाहर की बातें हैं। वे तो केवल और केवल श्री राम, हनुमान के चित्रों के सामने दीपक, अगरबत्ती जलाकर केवल धाय-धाय करते रहते हैं और श्री राम की, विष्णु के अवतार के रूप में परमात्मा समझ कर उपासना करने का ढोंग मात्र करते रहते हैं। जो वेद मर्यादाओं के विरुद्ध है तथा असत्य आधारित व्यवहार होने से धर्म नहीं! अपितु अधर्म का कार्य है।

अब हम अपने मूल प्रश्न पर आते हैं कि रामचरित् मानस ने ऐसा कौन सा जादू कर दिया जिससे तथाकथित हिन्दुओं के दोनों धार्मिक चिन्ह अर्थात् आर्य जाति बच पाई। जिन सज्जनों ने भी चाहे वे पौराणिक हिन्दू हों अथवा आर्य विचारधारा के लोग हों, जिन्होंने भी रामचरित् मानस का किसी भी भाव से अध्ययन किया हो, उन्हें पुनः निम्न बातों पर ध्यान देकर अध्ययन करना चाहिए कि रामायण के बालकाण्ड में उपासना, प्रार्थना के पश्चात् शिव-पार्वती का प्रसंग आता है कि जिसमें शिव- पार्वती सम्वाद में, शिवजी के द्वारा विष्णु अवतार रूपी श्री राम की उपासना करवा दी।

जैसे- दोहा संख्या १०५ के पश्चात् की पहली चौपाई।

चौपाई- हरि हर विमुख धर्म रति नाही ते नर तहँ सपने हुँ नहि जाहीं।

तेहि गिरि पर वट विटप विशाला, नित नूतन सुन्दर सब काला।।

श्री तुलसीदास जी द्वारा किया गया भाष्य निम्न प्रकार है जो ध्यान देने योग्य है। जो भगवान विष्णु और महादेव जी से विमुख हैं और जिनकी धर्म में प्रीति नहीं है, वे लोग स्वप्न में भी वहां नहीं जा सकते। उस पर्वत पर एक विशाल बरगद का पेड़ है जो नित्य नवीन और सब काल (छः ऋतुओं) में सुन्दर रहता है।

उपरोक्त चौपाई और भाष्य का गुप्त संदेश यह है कि हे हिन्दुओं जो तुम शिव और विष्णु को लेकर आपस में लड़ते- झगड़ते रहते हो यह ठीक नहीं है, अब समय आ गया है कि एक हो जाओ और विधर्मी से अपने धर्म को बचाओ। अन्यथा सभी विधर्मी बन जाओगे, नहीं तो इन विधर्मियों की तलवार से मौत के घाट उतार दिए जाओगे। बिना आप दोनों की एकता के वह मोक्षरूपी परमपद प्राप्त नहीं कर पाओगे। जहां प्रतिपल आनन्द ही आनन्द है। अर्थात् आप दोनों पक्ष एक हो जाओ। अन्यथा सम्पूर्ण हिन्दू जाति नष्ट-भ्रष्ट होकर समाप्त होकर विधर्मी बन जाएगी। जैसा हम आज देख भी रहे हैं कि अरब आक्रमणकारियों के वंशज तो आज भारत में एक भी नहीं, जितने भी इस्लाम को मानने वाले आज भारत में उपलब्ध हैं वे सभी हिन्दू भारतीयों की जाति, उपजातियों की धर्म परिवर्तन की हुई जातियां हैं और भी अन्य कई जगहों पर शिव जी द्वारा विष्णु के अवतार रूप में श्रीराम की भक्ति और उपासना का चित्रण भली प्रकार किया गया है। सुयोग्य पाठक यथा स्थान अध्ययन कर निरीक्षण कर लें।

अब हम तुलसीदास जी कृत रामचरित् मानस के अन्त भाग के उस भाग को दर्शाने का प्रयत्न करते हैं जहां पर लंका पर चढ़ाई करने से पूर्व रामायण के अनुसार विष्णु रूपी श्री राम द्वारा श्वेत बन्ध रामेश्वर पर बाँध बंधवाने से पूर्व श्री राम द्वारा शिव लिंग की स्थापना करवा कर विष्णु रूपी अवतार श्री राम के द्वारा यह कहलवा दिया गया कि -

''शिव द्रोही मम दास कहावे, सो नर मोहि सपनेहु नहि भावे।''

उपरोक्त का भाव स्पष्ट है कि हे मूर्ख हिन्दुओं मैं स्वयं श्री राम तो शिव जी का ही भक्त और उपासक हूं और आप लोग मुझे मान्यता देकर शिव जी से द्रोह करते हो। अर्थात् हम तो एक-दूसरे के भक्त और उपासक हैं। जब हममें कोई द्वेष भाव नहीं है, तो तुम दोनों आपस में क्यों लड़ते-झगड़ते हो? एक होकर विधर्मियों का सामना करो। बस यही वह गुप्त सन्देश हैं जो तुलसीदास जी ने रामायण के माध्यम से तथाकथित हिन्दू जाति को दिया था। वैसे तो आज भी हिन्दू आन्तरिक रूप से एक नहीं है। मगर उस समय ऐसा अहसास विधर्मी सम्राट और उसके अनुयायियों को हो गया था कि अब हिन्दुओं के दोनों घटक एक हो गए है। इस प्रकार दीन-ए-इलाही का कुप्रभाव समाप्त हो गया और हिन्दुओं की चोटी तथा ब्राह्मणों का यज्ञोपवित बच गया। बाकी तो महात्मा तुलसीदास जी ने समयानुसार तथा पात्र की वैदिक मर्यादाओं को ध्यान में रखकर कल्पना का सहारा लेकर ग्रन्थ को रोचक बनाने का भरपूर प्रयत्न किया है। ●

श्री राम बन जाओ तुम

श्रीराम की महिमा गाओ, सकल जगत् के नर-नारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।।

माता-पिता, गुरु वृद्धों की सेवा, रघुवर करते थे।
दुखिया दीन अनाथ जनों की, पीड़ाएं वे हरते थे।।
चरित्रहीन अन्यायी पापी, श्री राम से डरते थे।
वीर व्रतधारी रघुनन्दन, जग में निडर विचरते थे।।

प्रजा पालक धर्म धुरन्धर, दयावान थे तपधारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।।

बाली, रावण के जुल्मों से दुखी विश्व यह सारा था।
ऋषियों-मुनियों-विद्वानों का जग में नहीं सहारा था।।
त्रिसरा अरु मारीच, सुबाहू, करते थे खल मनमानी।
विश्वामित्र, अगस्त्य, अत्रीय, व्याकुल थे ज्ञानी-ध्यानी।।

श्री राम ने धर्म समझकर, मारे थे अत्याचारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।।

रघुकुल भूषन श्री रामजी, अगर न भारत में आते।
नर्क धाम जग बन जाता, सब ईश्वर भक्त कष्ट पाते।।
ईश्वर भक्त सज्जनों से था, श्री राम को प्यार सुनों।
धर्म-कर्म का, पुण्य-दान का उनको रहा विचार सुनों।।

निषाद राज निर्धन केवट से, श्री राम की थी यारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।।

उद्धार अहिल्या देवी का था, श्री राम ने किया सुनो।
सुग्रीव, विभीषण से दुखियों को राम ने अपना लिया सुनो।।
विघ्न और बाधाओं से वे, कभी नहीं घबराते थे।
मानवता के हत्यारों से वे, निर्भय अड़ जाते थे।।

इसीलिए श्रीराम की महिमा, गाती है दुनिया सारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।।

उग्रवाद, आतंकवाद, दिन पर दिन बढ़ता जाता है।
दानव दल हुंकार रहा है, नजर दुखी जग आता है।।
आपा-धापी मची हुई है, धर्म कर्म सब भूल गए।
नर-नारी बन गए स्वार्थी, झूठे मद में फूल गए।।

छुआ-छात की ऊंच-नीच की पनप गई अब बीमारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।।

श्री राम के पुत्र-पुत्रियों! जागो धनुष उठाओ तुम।
मानवता के हत्यारों का, जग से नाम मिटाओ तुम।।
तरुणाई का जोश दिखाओ, श्री राम बन जाओ तुम।
दुर्गुण त्यागो, सद्गुण धारो, जग को स्वर्ग बनाओ तुम।।

"नन्दलाल" थी श्री राम को, प्राणों से प्रजा प्यारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।।

पं. नन्दलाल निर्भय, बहीन, हरियाणा

हनुमान जयन्ति ३१ मार्च पर विशेष प्रस्तुति

क्या हनुमान, सुग्रीव आदि बन्दर थे?

- डॉ. गंगाशरण आर्य -
ग्राम- शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली
चलभाष- ९८७१६४४१९५

आज जब मैं महाबली वीर हनुमान की खिल्ली उड़ते देखता हूं तो मन में बड़ी पीड़ा होती है। हनुमान की गौरव गरिमा क्या थी और वर्तमान स्थिति में देखने को क्या मिलता है। मंगलवार के दिन हनुमान का व्रत रखने वाले (हनुमान को बन्दर मानते हैं इसलिए) बन्दरों को हनुमान का रूप मानकर गुड़-चने व केले इत्यादि खिलाते हैं और बूंदी दाने का प्रसाद बांटते है व इस दिन अण्डा-मांस, शराब इत्यादि नहीं खाते-पीते हैं तथा अन्य दिनों में शराब-कबाब खूब जम के चलता है। क्या यही हनुमान की भक्ति है? क्या यही हनुमान का आदर्श था? क्या हनुमान ने जीवन पर्यन्त अण्डा, मांस, शराब इत्यादि को छुआ? लेकिन आज बूंदी दाना तो उनके नाम पर खूब खाते हैं पर उनके आदर्श चरित्र को जीवन में नहीं उतारते, न ही उसका प्रचार-प्रसार करते हैं। प्रसाद बांटकर केवल हनुमान के चित्र की पूजा होती है, चरित्र की पूजा का कहीं दूर तक का सम्बन्ध नजर नहीं आता। सत्य सनातन वैदिक ज्ञान धारा को प्रवाहित करने वाली सार्वभौमिक संस्था आर्य समाज की बात लोगों को बड़ी कड़वी लगती है, क्यों आर्य समाज पाखण्डी को पाखण्डी कहने से डरता नहीं, सभी महापुरुषों के सत्य स्वरूप का दिग्दर्शन कराता है एवं उनके चरित्र की पूजा करना सिखाता है या यूं कह लो कि आर्य समाज राम-कृष्ण हनुमानादि महापुरुषों को भी और उनके आदर्श चरित्र और शिक्षाओं को भी मानता है और अन्य लोग महापुरुषों को तो मानते है किन्तु उन महापुरुषों की नहीं मानते हैं। उन्हीं महापुरुषों में से एक महाबली हनुमान भी हैं। अब पाठकगण निम्न लेख को पढ़कर बुद्धिपूर्वक विचार करें कि वीर हनुमान की वास्तविकता क्या है?

पुराणकारों के घिनौनेपन का संक्षिप्त चित्रण

पुराणों में कुछ भी उपयोगी नहीं है, ऐसा तो हमारा कहना नहीं है। उनमें कई शिक्षाप्रद कथाएं और आख्यान (कहानियां) भी हैं, किन्तु पुराणकारों का मूल दृष्टिकोण इतना विकृत है, जिससे उन्हें निश्चय ही जहर मिले अन्न या मीठे की तरह त्याज्य ही माना जाएगा। पुराणों में अनेक ऋषि-मुनि और महापुरुषों विशेषकर योगेश्वर श्री कृष्ण को जैसे घिनौने रूप में प्रस्तुत करने का महापाप किया गया है, उसी प्रकार आर्य जाति के महान् गौरव देव पुरुष महावीर हनुमान की उत्पत्ति कथा भी बड़े ही घिनौने रूप में प्रस्तुत की गई है। हम इस पवित्र लेख में इन घोर घृणित, महाअश्लील और लज्जा को लजाने वाले सभी प्रकरणों को उद्धृत नहीं करना चाहेंगे। यहां हम संकेत मात्र दे रहे हैं भविष्य पुराण अति सर्ग। पर्व-४। अं.१ में श्लोक ३२ से ४१ में बताया है-

एक बार शिवजी मान सरोवर पर्वत पर गए, जहां केसरी नामक वीर की पत्नी अंजना रहती थी। शिवजी का तेज (वीर्य) केसरी के मुंह में चला गया और उससे कामातुर होकर केसरी अंजना से भोग करने लगा। इस बीच में वायु ने भी केसरी के शरीर में प्रवेश किया। और वह बलपूर्वक उसके प्रभाव से १२ वर्ष तक अंजना से विषय भोग करता रहा। इस लम्बे मैथुन से अंजना के गर्भ रह गया और एक वर्ष बाद अंजना ने वानर की शक्ल वाले हनुमान को जन्म दिया जो कि अत्यन्त कुरूप था। माता अंजना ने उसे त्याग दिया। हनुमान बालक ने बलपूर्वक सूर्य को निगल लिया, महादेव जी देवताओं के साथ वहां आए और हनुमान जी को वज्र से मारा परन्तु हनुमानजी ने वज्र से ताड़ित होने पर भी सूर्य को नहीं छोड़ा। तब सूर्य भयभीत होकर बचाओ, बचाओ, त्राहि-त्राहि की पुकार करने लगा, लेकिन हनुमान जी ने सूर्य की दीन दशा व त्राहि-त्राहि रोदन पर भी ध्यान नहीं दिया और नहीं छोड़ा। सूर्य के रूदन और त्राहि-त्राहि के दीन वचनों को सुनकर रावण आ गया और हनुमान की पूंछ पकड़कर खींची। इस पर हनुमान ने सूर्य को छोड़ दिया पर अत्यन्त क्रोधित होकर रावण से युद्ध करने लगे। एक वर्ष तक रावण से मल्लयुद्ध करते रहे। अन्त में रावण मार खाकर भाग गया।' अब शिव पुराण के रुद्र संहिता के अध्याय २० श्लोक ३ से ६ में वर्णित हनुमान की उत्पत्ति की कहानी पढ़िये-

एक समय शिव जी ने विष्णु भगवान का मोहिनी रूप देखा तो कामदेव के वश में होकर अपने आपके बेबस पाकर मोहिनी रूप विष्णु के साथ भागे। अन्त में मोहिनी को न पाकर विवश होकर अपना वीर्य गिराया। तब रामचन्द्रजी के कार्य हेतु शिवजी के संकेत पर सप्तऋषियों ने वीर्य को एक पत्ते पर स्थापित किया और

फिर उस वीर्य को अंजना के कान में डाल दिया। अंजना गौतम की लड़की थी। उस कान में डाले वीर्य के प्रभाव से महाबली तथा पराक्रमी हनुमान उत्पन्न हुए। धन्य हो भविष्य पुराण और शिव पुराण के रचयिता! जरा आप इस चण्डूखाने की गप्पों पर विचार कीजिए। घिनौनेपन और कृतघ्नता की पराकाष्ठा! बड़े शोक (दुःख) की बात है।

हे भगवान! कैसी विचार शून्यता की पराकाष्ठा है। लेखक ने यह लिखने नें तनिक संकोच न किया कि इस पृथ्वी से जो सूर्य १३ लाख गुना बड़ा है एक बच्चे ने जो इस पृथ्वी पर एक गज भूमि में अभी पैदा हुआ है, उस सूर्य को जो जमीन से ९ करोड़ मील की दूरी पर है ८४ खरब मील तक तप रहा है कैसे पकड़ा और निगल लिया? किस प्रकार पेट में रखा? अभी का पैदा हुआ बच्चा इस पृथ्वी के एक भाग में जो अधिक से अधिक ३ फुट का हो सकता है उसने सूर्य को कैसे निगल लिया? वाह रे लिखने वाले! और वाह रे सुनने वालो!!

आज तो चित्रों के माध्यम से भी हनुमान की स्थिति को इतना बिगाड़ दिया है कि रावण को तो १० मुंह बताए थे और अब हनुमान को पंचमुखी व ग्यारह मुखी बना दिया। यह मूर्तिकारों की स्वच्छंदता नहीं तो और क्या है। पौराणिक पण्डों द्वारा मन्दिरों का निर्माण करके उनमें उपरोक्त महापुरुषों की मूर्ति स्थापना करके उनके नाम से लूट का बाजार जोरो पर है। क्या होगा इस देश का? अब तो विदेशी भी **'आईसकोण टैम्पल'** आदि के माध्यम से इस चढ़ावे पर नजर रखने लगे, लूटने के लिए।

बन्धुओं! इन उदाहरणों पर विस्तृत समीक्षा की अपेक्षा नहीं है। घोर दुर्भाग्य तो यह है कि आज के यूनिवर्सिटी के विद्वान जो साइन्स के महा पण्डित कहे जाते हैं जो बतलाते हैं कि सूर्य पृथ्वी से १३ लाख गुना बड़ा है और ९ करोड़ मील की दूरी पर है और ८४ खरब मील तक तप रहा है, अनेकानेक ब्राह्मण्डों को सूर्य धारण कर रहा है, सूर्य सभी प्राणियों का प्राणदाता है, वही प्रोफेसर, वही वैज्ञानिक, वही पण्डित घर में स्नान करने के बाद बड़े चाव से हनुमान जी की स्तुति करते और पढ़ते हैं कि- **'बाल समय रवि भक्ष लियो तब तीनहुं लोक भयौ अंधियारो'** का पता नहीं उनके द्वारा खोजा गया ज्ञान कहां चला जाता है। जो इस मूर्खतापूर्ण पाठ के करने में तनिक नहीं हिचकते। जब भौतिक विज्ञानी ही इस प्रकार अज्ञानता का प्रचार करते रहेंगे तो भगवान ही कृपा करें, सुबुद्धि दें, ताकि संसार में सच्चाई का प्रचार हो। **''धियो यो नः प्रचोदयात्''**

हनुमान के वास्तविक स्वरूप का दिग्दर्शन

आइये! अब हनुमान के जीवन की वास्तविकता को समझने की कोशिश करें। रामायण में श्रीराम के साथ वीर हनुमान का चरित्र भी शिक्षाप्रद है। रामायण में हनुमान का मिलन सर्वप्रथम सीता की खोज में निकले राम-लक्ष्मण से किष्किन्धा काण्ड में ऋष्यमूक पर्वत पर होता है। हनुमान और सुग्रीव बाली के भय से ऋष्यमूक पर्वत पर रहते थे। राम-लक्ष्मण को देखकर सुग्रीव ने विचार किया कि सम्भव है इन दोनों को बाली ने ही भेजा हो। ब्राह्मण का वेष बनाकर हनुमान राम-लक्ष्मण के पास गए और (भाषण की कला में चतुर) बहुत विनीतभाव से, राम लक्ष्मण को प्रणाम करके प्रथम अपना परिचय दिया-

सुग्रीवो नाम धर्मात्मा कश्चिद् वानर पुँगवः।
वीरो विनिकृतो भ्रात्रा जगद् भ्रमति दुःखित। -किष्किन्धा. सर्ग ३

अर्थात् वानरजाति में श्रेष्ठ, धर्मात्मा सुग्रीव अपने भाई बाली से तिरस्कृत होकर इस पर्वत पर रहता है, मैं उसका मन्त्री हूं। वह आपसे मित्रता चाहते हैं। हनुमान की भाषण शैली व व्यवहार से अतीव प्रसन्न होकर श्रीराम ने लक्ष्मण से जो हनुमान जी की विद्वता का वर्णन किया है, वह बहुत ही प्रशंसनीय है-

नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।
नासामवेदाविदुषः शक्यमेवं प्रभाषितुम।।
नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम् ।
बहुव्याहरताऽनेन न किंचिदपशब्दितम् ।। (किष्किन्धा. सर्ग ३)

अर्थात् - हे लक्ष्मण! जिस व्यक्ति ने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद न पढ़े हों वह ऐसी संस्कृत भाषा नहीं बोल सकता। निश्चित रूप से इसने सम्पूर्ण व्याकरण भी पढ़ा है, क्योंकि इसके भाषण में कहीं भी व्याकरण की दृष्टि से एक भी अशुद्धि नहीं हुई।' ऐसे वेद वेदांगों के महान् विद्वान वीर हनुमान जी को, जो व्यक्ति बन्दर मानकर उनकी बन्दर जैसी मूर्ति बनाकर पूजते हैं, हनुमान एवं राम भक्तों को श्रीराम के उपर्युक्त वचनों पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। क्या कभी बन्दर भी वेद-वेदांगों को पढ़कर शुद्ध भाषण कर सकते हैं?

हनुमान सुग्रीव के मन्त्री थे। जैसे प्रशासनिक कार्यों के लिए योग्यता बताते हुए मनु स्मृति ७/५४ में लिखा है- **'मौलाञ्छास्त्रविदः शूरॉ ल्लब्ध लक्षान् कुलोद्भवान् ...०'** । अर्थात् मन्त्री बनने के लिए निम्नलिखित योग्यताएं होनी चाहिए। स्वदेश में उत्पन्न, वेद शास्त्रों का विद्वान, शूरवीर, जिनका लक्ष्य-विचार निष्फल न हो, उच्च कुल में पैदा हुए सुपरीक्षित व्यक्ति को ही मन्त्री बनाया जाए, इससे स्पष्ट है हनुमानजी में भी मन्त्री बनने के योग्य समस्त योग्यताएं थीं। **क्या ये योग्यताएं बन्दर में हो सकती हैं? हनुमान जी राम-सुग्रीव की मित्रता में पुरोहित बने थे और यज्ञ कराया था। क्या बन्दर वेद-व्याकरण पढ़ सकता है? क्या बंदर पुरोहित का कार्य कर सकता है?** वर्षाकाल बीतने और राज्य पर बैठे सुग्रीव को सीता की खोज करने के लिए महामन्त्री के नाते से जो उपदेश हनुमान ने सुग्रीव को किया क्या उसे कोई वेदवित् विद्वान के बिना कर सकता है? (देखो किष्किन्धा काण्ड सर्ग २८/८-२७)

सीता की खोज के लिए जब हनुमान लंका की अशोक वाटिका में गये तो पहले सीता ने उसे रावण समझ बाचचीत में संकोच किया। पर बाद में जब हनुमान ने विश्वास दिलाया कि मैं राम का संदेश लेकर आया हूं तथा राक्षसों के डर से रात को लंका में दाखिल हुआ हूं, तब सीता ने प्रसन्नता प्रकट की। (देखो सुन्दर काण्ड सर्ग ३५) इससे भी पाया जाता है कि हनुमान बंदर नहीं थे, पुरुष थे, क्योंकि एक तो यदि बंदर होते तो हनुमान में रावण का भ्रम न होता। दूसरे हनुमान लंका में रात को न आते, दिन में अन्य पशु-पक्षियों की भाँति आते, क्योंकि राजदूत विदेशी पुरुषों की देखरेख किया करते हैं न कि पशु-पक्षियों की। यहां तक कि वीर हनुमान सीता की खोज के करते हुए लंका नगरी में विशेष रूप से

रावण के अन्त:पुर में प्रविष्ट होकर सब जगह घूम आए, किन्तु कोई इन्हें देख नहीं सका। रामायण में लिखा है-

चतुरंगुल मात्रोऽपि नावकाश: स विद्यते।
रावणान्त पुरे तस्मिन् यं कपिर्न जगाम: स:।। सुन्दर. १२वां सर्ग

अर्थात् रावण के अन्त:पुर में कोई चार अंगुल परिमाण वाला स्थान भी ऐसा नहीं रहा था, जहां हनुमान न गए हों। स्थान-स्थान पर पहरेदारों से घिरे अन्त:पुर में प्रवेश करना कोई सरल कार्य तो था नहीं। इससे स्पष्ट होता है कि हनुमान वीरता के साथ योग सिद्धियों से भी सम्पन्न थे। योगसिद्धियां तो योगियों की साधना का क्षेत्र है, फिर भी योग सिद्धियां प्राप्त करना क्या बन्दरों के लिए सम्भव है?

वीर हनुमान तरह-तरह के वेश बदलते रहते थे। जैसे ऋष्यमूक पर्वत पर राम-लक्ष्मण के साथ प्रथम मिलन के समय ब्राह्मण भिक्षुक का वेष बनाया था।

कपिरूपं परित्यज्य हनुमानं मरूतात्मज:।
भिक्षुरूपं ततो भेषे शठबुद्धितया कपि:।। (किष्किन्धा. सर्ग २)

अर्थात्- हनुमानजी कपिरूप को छोड़कर भिक्षुक का वेष बनाकर राम और लक्ष्मण से मिले। यहां यह विचारणीय है कि क्या कोई बन्दर ब्राह्मण, भिक्षुक का वेष बना सकता है? और वानर, ऋक्ष, राक्षस, निषाद, शबर, गृध्र इत्यादि रामायणकालीन जन जातियों के भारत में ही राज्य थे। क्या इनके वंश अब सर्वथा नष्ट मान लिए जाएं कि जो आजकल उपलब्ध नहीं होते। जैसे सूर्यवंशी राम के वंशज अब भी हैं वैसे ही इनके वंशज अब भी मिलने चाहिए, किन्तु ऐसा न मिलने से स्पष्ट है कि ये पशु-पक्षी कदापि नहीं थे। रामायण काल में मानवों में देव, आर्य वानर और राक्षस यह जातियां विद्यमान थी. सभी जातियां मनुष्य देहधारी थी। वानर राष्ट्र की राजधानी किष्किन्धा (कर्नाटक) थी वानर राजा महाबली बाली के अधीनस्थ कुछ मांडलिक राजा थे। वे रत्नपुर और महेन्द्रपुर में राज्य करते थे। वे शूरवीर तथा धर्म और विद्याप्रेमी थे। प्रहलाद जी की रानी केतुमति के गर्भ से केसरी का जन्म हुआ, वायु तुल्य महाबली होने से उसे पवन कुमार कहते थे।

महेन्द्रपुर के राजा महेन्द्र राय बीरज की पुत्री अंजना थी। अंजना का गठबन्धन केसरी पवन कुमार से हुआ था। दोनों ने गृहस्थ में प्रवेश करके १२ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का कठोर पालन किया, फिर अंजना से वज्र तुल्य अंगवाले महावीर हनुमान का जन्म हुआ। हनुमान की शिक्षा-दीक्षा महर्षि अगस्त्य के आश्रम में हुई थी उसका यज्ञोपवीत (जनेऊ) संस्कार भी किया गया। आश्रम में गदा युद्ध, मल्ल युद्धों और शास्त्रीय विद्या प्रतियोगिताओं में उन्हें प्रथम प्रवीणता प्राप्त थी वे कई बार पुरस्कृत भी हुए थे। उस समय समुद्र पार करने की शक्ति तीन पुरुषों में थी १. गरुड़, २. हनुमान, ३. मारूत। विचार करें कि उपरोक्त विवरण में किसी भी व्यक्ति को बन्दर से उत्पन्न होना नहीं लिखा और जितने भी संस्कारित व्यवहार है वे सब मनुष्यों के हैं बन्दरों के नहीं।

रामायण में प्रयुक्त वानर आदि शब्दों का क्या अर्थ है?

इस विषय में पर्याप्त अनुसंधान की आवश्यकता है। प्रतीत यही होता है कि इस लोक में शब्दों की समानता लेकर ही भ्रान्ति हुई है। जैसे जनकपुत्री का नाम सीता था और हल की रेखा को भी संस्कृत में सीता कहा जाता है। इस शब्द की समता को लेकर ही सीता को हल चलाते हुए प्राप्त करने की बात प्रसिद्ध हो गई। प्राय: ऐसा होता है कि लोकप्रसिद्ध शब्दों के अर्थ शब्द श्रवण करते ही उपस्थित हो जाते हैं। वानरादि के भी बन्दर आदि अर्थ जो लोकप्रसिद्ध हो रहे हैं, उन्हीं को ध्यान में रखकर रामायणकालीन पात्रों के वेष आदि बना लिए गए हैं, परन्तु हमें रामायणकालीन व्यवहार को भी समझना पड़ेगा, तब कहीं सत्यार्थ समझ में आ सकेगा।

इस विषय में आर्य विद्वानों के अतिरिक्त व्यक्ति तो पूर्वाग्रह के कारण विवेक से काम ही नहीं लेना चाहते। उनमें कुछ तो अंधश्रद्धावश वैसा-का वैसा ही स्वीकार कर लेते हैं, अथवा इन पात्रों को काल्पनिक मानने लगते हैं, किन्तु ये दोनों ही बातें तथ्यों को उजागर नहीं कर पाती। आर्य विद्वानों की खोज के अनुसार हनुमान, सुग्रीव आदि वानर तो थे, परन्तु बन्दर नहीं। रामायण में प्रयुक्त वानर, कपि आदि शब्दों का प्रयोग इस प्रकार किया गया है-

वानर- जैसे वर्तमान में भी मनुष्यजाति में अनेक उपजातियां मिलती हैं वैसे ही रामायणकाल में भी थीं उस समय में दक्षिण भारत में कोल, भील, ऋक्ष, वानर, किरात, यक्ष, गन्धर्व इत्यादि सभी मनुष्य जातियां थीं। आज भी उनकी कई जातियां वहां पर है। इसलिए वानर जाति से आजकल के जैसे बन्दर नहीं समझना चाहिए। वे और बाली, सुग्रीव, जाम्वन्त आदि मनुष्य ही थे जैसे नागा जाति के लोग आसाम तथा आसपास पर्वतीय क्षेत्रों में आज भी विद्यमान हैं। वे सब मनुष्य ही तो हैं। नाग का अर्थ सर्प भी है। इसलिए क्या हम उन्हें सर्प कह सकते हैं? नहीं। तो वानर का अर्थ बन्दर होने से हनुमान आदि भी बन्दर नहीं थे। वे बड़े भारी बलवान, विद्वान और योद्धा राजा थे। बन्दर भला कहीं राज करते हैं, वे तो वृक्षों पर कूदते-फांदते हैं। उन्हें मनुष्यों जैसा कुछ ज्ञान नहीं है। फिर भी वानर जाति को वानर कहने का भाव समझिये- "**वानर: विकल्पेन नर**" अर्थात् जो नर तो नहीं है, लेकिन मुखाकृति साम्य से नर जैसा है अत: बन्दर जाति वानर कहलाती है। इसी प्रकार जिस जगह के मनुष्यों की बन्दर जैसी आकृति होती थी (भौगोलिक अन्तर के कारण) वे आकृति साम्य के कारण वानर जाति के कहलाये। इस जाति के व्यक्तियों में स्थानभेद से कुछ आकृति भेद तो हो सकता है, जैसे कि नेपाल व चीन आदि मनुष्यों का भेद देखने में आता है, परन्तु ये थे मनुष्य ही, मनुष्यों जैसी भाषा बोलते थे, इनके सभी व्यवहार मनुष्यों की तरह ही थे। बन्दर की तरह नहीं। आकृति भेद से वानर कहलाए लेकिन वास्तविकता में तो मनुष्य ही थे ठीक वैसे ही जैसे गुण साम्य होने से कोई भी व्यक्ति जिस पशु-पक्षी इत्यादि के जैसा गुण उसमें दिखाई देता है वैसा ही कहलाता भी है उदाहरण जैसे गऊ बहुत सीधी सादी प्राणी है और आपके घर या पड़ोस में भी वैसे ही गुण वाला कोई व्यक्ति रहता हो तो गुण साम्य के कारण आप कहते हैं कि फलां व्यक्ति तो बिलकुल गऊ है, लेकिन वास्तविकता में तो वह गऊ नहीं मनुष्य ही है। हमें यह देखकर महान् आश्चर्य ही होता है कि रामायण के सीरियलों में वर्तमान रामानन्द सागर ने भी हनुमान आदि पात्रों की आकृति (पूंछ आदि लगाकर) बन्दरों जैसी ही बनाई है।

किसी ने यह भी विचार नहीं किया कि रामायण में आए वानर-जाति के स्त्री-पात्रों के पूंछ क्यों नहीं लगाई? क्या बन्दरों की भाँति बंदरियों की पूंछ नहीं होती? और भी लोगों को अन्धश्रद्धा के कूप में धकेलने के लिए हनुमान की पूंछ लगाने की चेष्टा तो कर ली, लेकिन वह भी बन्दर की पूंछ की जैसी न लगाई। गाय, बैल की सी लगाई है। इतना होने पर भी लो अन्धश्रद्धावश यह नहीं समझ पा रहे हैं कि पपीते के पेड़ में पपीता ही लगता है जामुन नहीं तो फिर मनुष्यों के लिए परमात्मा अपने नियम को क्यों बदलेगा, मनुष्य से बन्दर की उत्पत्ति क्यों करेगा? और बन्दर को गाय की पूंछ क्यों लगाएगा? वास्तविकता यह है कि बलवान एवं वीर योद्धा होने के कारण हनुमान की हर जगह पूछ थी, पूंछ नहीं। और भी हनुमान के माता-पिता बिना पूंछ के थे। किसी भी टी.वी. सीरियल में हनुमान के पिता केसरी व माता अन्जना देवी के पूंछ नहीं दिखाई लेकिन दोनों के मनुष्य होने पर भी पुत्र 'हनुमान' को बन्दर बनाया वह भी अपनी प्रजाति का नहीं गाय की सी पूंछ वाला बनाया। जवाब नहीं ऐसे लोगों की बुद्धि का।

कपि-इस शब्द का लौकिक अर्थ बन्दर अवश्य है, परन्तु इसके अन्य अर्थ भी हैं। वैदिक साहित्य में '**कपि**' तथा '**वृषकपि**' शब्द आए हैं जिनका अर्थ है- कपि- कंपाने वाला या धर्म-सुख या जलादि की वर्षा करने वाला अथवा अपनी शूरवीरता से दुष्टों को कंपाने वाला और महाभारत के शान्तिपर्व में (३४२ अं. ८९ श्लोक में) कहा है-

कपिर्वराहः श्रेष्ठश्च।। अर्थात् कपि शब्द का श्रेष्ठ अर्थ भी है।

कपीनां किल लांगूलमिष्टं भवति भूषणम् ।
तदस्य दीप्यतां शीघ्रं तेन दग्धेन गच्छतु।। सुन्दर. ५३ वां सर्ग-३

लांगूल- इसका अर्थ पूंछ भी है, किन्तु रामायण में वानर जाति का एक आभूषण या चिन्ह लागूल कहलाता था। क्रोधान्ध रावण ने जब हनुमान (दूत) को मारने का विचार किया तो विभीषण के सुझाने पर दूत वध योग्य नहीं है, इसलिए इसका वध अयुक्त है ऐसा करने में नीति भंग होती है। यह निंदा योग्य कर्म है इसलिए बहुत विचार के अनन्तर रावण ने आज्ञा दी कि "वानर" लोगों का बहुत प्यारा और पवित्र भूषण लांगूल होता है सो इसका यही दग्ध कर दो, जिससे हीन हुआ यह स्वयं बहुत अपमान समझेगा तथा स्वदेश जाने पर इसके बन्धु, मित्र व जाति के लोग भी लज्जित करेंगे। कहने का तात्पर्य है कि 'कपि अथवा वानर जाति के व्यक्तियों को लागूल नामक भूषण बहुत प्रिय होता था। (लांगूल वास्तव में वानरजाति का एक जातीय भूषण था, जिसका पराये हाथ से बिगड़ जाना वे जाति मात्र का अपमान समझते थे, जैसा कि आजकल भी अंग्रेज लोग टोपी का, सिख पगड़ी का व केशों का, पठान कुरान का, आर्य (हिन्दू) यज्ञोपवित का, राजपूत खण्डे का करते हैं। इसी विचार से रावण ने यह दण्ड विचार किया, क्योंकि इसे वह महादण्ड जानता था, परन्तु लांगूल नाम पुच्छ का होने से जिन्होंने हनुमान को पशु बना लिया उन्होंने लांगूल को पूंछ बना लिया, परन्तु यदि वास्तव में लांगूल पुच्छ का वा किसी अंगविशेष का नाम होता तो रावण वा.रा.सु. कां. सर्ग ५३ श्लोक में ३ में **इष्टं भवति भूषणम् न कहकर अंगं भवति ह्युत्तमम्** कहता। इसकी वे युद्ध के समय रक्षा प्राण-प्रण से किया करते थे। जैसे आर्यों का यज्ञोपवित, शिखा (चोटी) आदि चिन्ह रक्षा करने योग्य होते हैं वैसे यह भी करते थे। हनुमान चालीसा में कितना स्पष्ट लिखा है- "हाथ वज्र और ध्वजा विराजै, कांधे मूंज जनेऊ साजै। इतना स्पष्ट होते हुए भी कि हनुमान जी जनेऊ पहनते थे और हाथ में वज्र और ध्वजा लेकर चलते थे तो भी पौराणिक बन्धु उन्हें बन्दर मानते हैं। उनका बन्दर रूपी वेश धरकर लोगों को ठगते हैं। क्या आपकी बुद्धि को स्वीकार्य है कि इतना बड़ा विद्वान व बलवान जनेऊ धारी व्यक्ति बन्दर था? ऐसा कदापि नहीं हो सकता, क्योंकि यज्ञोपवितादि संस्कार मानवों के होते हैं न कि बन्दरों के। और भी अपने हाथ में ध्वजा या वज्र आदि शस्त्र आदि लेकर क्या कोई बन्दर चल सकता है? असम्भव। इसी प्रकार अन्य शब्द भी अनुसंधान के योग्य हैं। अतः केसरी व अंजना देवी के सुपुत्र हनुमान वानर जाति के कहलाने पर भी वस्तुतः बन्दर नहीं थे। वे अपने वर्ग के मनुष्यों में अपने समय में एक बहुत प्रतिष्ठित बाल ब्रह्मचारी, महाविद्वान, शूरवीर योद्धा,महायोगी और सुग्रीव के महामन्त्री थे। हनुमान श्रीराम के परम सेवक होकर भी बहुत ही निराभिमानी, विनम्र स्वभाव के थे। व्याकरणादि शास्त्रों के ज्ञाता होने से उनका उच्चारण बहुत ही स्पष्ट एवं शुद्ध होता था। बन्दर तो कभी स्पष्ट भाषण कर ही नहीं सकता, क्योंकि उसके गले की रचना मनुष्य से भिन्न है। बन्दर का गला सिकुड़ा हुआ होता है। वह तो किलकारी ही मार सकता है, चीख सकता है, किन्तु मनुष्यों जैसी व्यक्त वाणी कदापि नहीं बोल सकता। अपने यशस्वी एवं परमादर्श हनुमान जैसे पात्रों का पूंछ आदि लगाकर जो उनका अपमान करते हैं वे यथार्थ में अतीव निन्दनीय हैं. केसरी, अंजना, हनुमान, सुग्रीव आदि नाम भी इन्हें बन्दर सिद्ध नहीं करते, क्योंकि बन्दर जाति के नाम होते ही नहीं। हिन्दू जाति (जो पूर्वकाल में आर्य थे) हनुमान के चित्रों की विकृत रचना करके अज्ञानतावश ही तो पूजा करती हैं, हनुमान एवं राम भक्तों को हनुमान के विषय में राम की बात माननी चाहिए या पुराणों के लिखने वालों की? इससे पता लगता है कि इन अन्धभक्तों का मानना इतना ही है कि हमारे सभी दुःखों को दूर करने के लिए यह मन्दिरों में बैठे पुजारी दान-दक्षिणा से प्रसन्न होकर राम या हनुमान का आशीर्वाद दिलवा सकते हैं। इसके अलावा इनके मन में कुछ नहीं है। लुटने वाले और लुटाने वालों के बीच में आर्य समाज के सिवाय इन्हें न कोई टोकने वाला है, न कोई रोकने वाला है, इसलिए आर्य समाजी बुरे लगते हैं। इसलिए निष्पक्ष होकर हमें केवल उनके आदर्श चरित्र व शौर्यपूर्ण गाथाओं की ही पूजा अपने आचरण व व्यवहार में करनी चाहिए।

अंत में पाठकगणों से मेरा नम्र निवेदन है कि अब तो अंधश्रद्धा के इस गहरे कूप से बाहर निकलिए और महर्षि देव दयान्द सरस्वती द्वारा बनाए गए आर्य समाज के चौथे नियम **सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए** के अनुसार सत्य को ग्रहण कर असत्य का परित्याग करें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उपरोक्त लेख के माध्यम से आपने महाबली वीर हनुमान के स्वरूप को जान लिया होगा निर्णय आपको करना है। यदि आप हनुमान के सच्चे भक्त हैं तो उन्हें उनके वास्तविक स्वरूप में स्वीकारें और मूर्ति पूजा सदा के लिए छोड़ दें। ●

आध्यात्मिक जिज्ञासा-समाधान एवं पुस्तक समीक्षा

समाधानकर्ता
- आचार्य सोमदेव आर्य -
महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल
ऋषि उद्यान, अजमेर (राजस्थान:
चलभाष- ८६१९६३५३०७

आदरणीय वैदिक विद्वान महानुभाव, सादर नमस्ते

जिज्ञासा - जब कोई इन्सान अधर्म से जैसे कि रिश्वत से, भ्रष्टाचार आदि से धनसंग्रह कर लेता है और इसी धनसंग्रह का एक अंश आध्यात्मिक संस्थान आदि को दान स्वरूप देकर सम्मान प्राप्त कर लेता है और दानवीर कहलाता है।

मेरी शंका यह है कि परमात्मा इस दानवीर को किस रूप में स्वीकार करते हैं।

- शिवकुमार, रावतभाटा (राज.)

समाधान- कोई शास्त्र या सभ्य समाज अधर्म से धनोपार्जन करने का आदेश नहीं देता। शास्त्र में अधर्मपूर्वक धन संग्रह को पाप कहा गया है। पाप का फल दु:ख ही होता है, सुख कभी नहीं। मनुस्मृति के शुचि प्रकरण में अर्थशुचिता को बहुत महत्व दिया है-

सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्।
योऽर्थे शुचिर्हि स शुचिर्त मृद्भारिशुचि: शुचि:।।

अर्थात् जो धर्म ही से पदार्थों का सञ्चय करता है वहीं सब पवित्रताओं में उत्तम पवित्रता है, अर्थात् जो अन्याय से किसी पदार्थ का ग्रहण नहीं करता वही पवित्र है, किन्तु जल मृत्तिका आदि से जो पवित्रता होती है, वह धर्म के सदृश उत्तम नहीं है।

अब आपकी बात को लेते हैं- जो कोई रिश्वत, भ्रष्टाचार आदि से धन संग्रह कर रहा है वह निश्चित रूप से दोष है, पाप का भागी है ही इतने अंश। इस अधर्म की कमाई का धन वह यदि अपने सम्मान व अन्य कोई अपने दूषित प्रयोजन के लिए किसी धार्मिक संस्था में दान देता है, देकर अपना दूषित प्रयोजन पूरा कर लेता है तो यह उसका दूसरा दोष हो जाएगा। जो कि अधर्म ही होगा और ऐसे व्यक्ति का जो संस्था दान लेकर उस व्यक्ति को सम्मान वा उसका प्रयोजन सिद्ध करती है तो वह संस्था भी उतने अंश दोषी कहलायेगी, क्योंकि संस्था द्वारा ऐसे लोगों का सम्मान करने का अर्थ निकलेगा कि वह इसके (दोषी) व्यक्ति के समर्थन में हैं। कोई व्यक्त जैसे-तैसे धन कमाकर संस्था को देता रहे और संस्था लेती रहे और उसका संस्था सम्मान करती रहे इससे समाज में सन्देश गलत जाता है।

यदि कोई ऐसा धन देता भी है तो संस्था उस व्यक्ति से विशेष व्यवहार न रखे, उसका मंच आदि पर न बैठावे, उसका सामूहिक या व्यक्तिगत सम्मान न करें। उसके धन का सदुपयोग करके संस्था अवश्य पुण्यशाली होगी।

जब हम धर्मपूर्वक अर्जित धन का दान देते हैं तो ही विशेष पुण्य के भागी होते हैं। आपने पूछा ऐसे दानवीर को परमात्मा किस रूप में

आध्यात्मिक जिज्ञासा-समाधान

प्रश्न आपके
उत्तर मूर्धन्य वैदिक विद्वान के

समस्त पाठकगणों से अनुरोध है कि आपकी ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति, पुनर्जन्म, कर्मफल व्यवस्था, मनुष्य जीवन, धर्म- संस्कृति आदि विषयों से सम्बन्धित कोई जिज्ञासा, शंका, अथवा प्रश्न हो तो लिख भेजें। आपकी जिज्ञासा, शंका अथवा प्रश्नों का समाधान वेद शास्त्रों के मर्मज्ञ मूर्धन्य विद्वान आचार्य सोमदेव जी के द्वारा प्रस्तुत किया जावेगा। अपनी जिज्ञासाएं डाक से **आचार्य सोमदेव जी आर्य,** ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड अजमेर (राज.) के पते पर भेजें। एक माह में मात्र एक जिज्ञासा, शंका अथवा प्रश्न करें। **- सम्पादक**

ओ३म्

'सर्वे सन्तु निरामया:'
(हे ईश्वर! सभी नीरोगता से सम्पन्न हों)

''शुभ-नववर्ष-मंगलकामनाएं''

स्नेही, प्रिय आप श्री पाठक, लेखक, समस्त आर्य भद्रजन
शुभ स्थान- भारतवर्ष (पृथ्वी)
सादर नमस्ते!

संघर्षमय व्यस्त जीवन में प्राय: मानव से भूलें होना स्वाभाविक है। अस्तु किसी भी अवसर पर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मेरे द्वारा मन, वचन और कर्म से कोई त्रुटि हुई हो तो, गुड़ी-पड़वा-नव-संवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् २०७५ पावन-पर्व के शुभ अवसर पर उदार हृदय से क्षमा कर अनुग्रहीत करेंगे।

यह नूतन वर्ष आप सभी के लिए सुख, शांति और समृद्धि से भरा हो, इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ।

आपके
शुभेच्छू

सुखदेव शर्मा
प्रकाशक-वैदिक संसार

डोंगरलाल पुरुषार्थी
कसरावद (म.प्र.)

स्वीकार करेगा। इसमें हमारा कहना है कि परमात्मा न्यायकारी होने से जो व्यक्ति जैसा है उसको उसी रूप में स्वीकार करता है। अधर्म धन संग्रह किया उसके उस पाप का फल परमात्मा उसी रूप में देगा और उसी व्यक्ति ने जो पुण्य रूप कर्म किया उसको परमात्मा उसके उस पुण्य का फल भी पुण्य रूप में ही देगा।

हां ऐसा परमात्मा कभी नहीं करता कि कोई अधर्म करें और दान देकर उस अधर्म का फल न दें अथवा अधर्म के फल को कम कर दें। परमात्मा तो जो जैसा कर्म करता है उसको वैसा ही फल देता है। अस्तु।

पुस्तक समीक्षा

सामवेद में गायन आदि विद्या है, इस वेद का विषय मुख्य रूप से उपासना है। प्रभु का भक्त प्रभु की स्तुति गाकर भी करता है, मन से भाव होता हुआ वाणी द्वारा उस परमेश्वर की भक्ति में मग्न होकर गाता है तब भक्त के कण्ठ व हृदय से जैसे अमृत वर्षा हो रही हो ऐसा प्रतीत होता है।

वेद तो ज्ञान का भण्डार है ही इसी ज्ञान भण्डार से युक्त अथर्व वेद अपने में विज्ञान को समेटे हुए हैं। अथर्ववेद को ईश्वर ने विभिन्न विद्याओं से युक्त किया है। वेद मन्त्रों के भाव को बहुत से कविता प्रेमी, पद्य प्रेमी पाठक कविता रूप में पढ़ना चाहते हैं। ऐसा पाठकों को दृष्टिगत रखकर सामवेद व अथर्ववेद के सौ-सौ मन्त्रों के भाव को पद्य रूप में लिखने वाली कवि हृदय की धनी कवयित्री श्रीमती विमलेश बंसल है। मन्त्रों के भाव पद्य में लिख लेखिका ने अपने को और अधिक पुण्यवती बनाया है।

इन दो वेदों के मन्त्रों के भाव को गद्य रूप में लिखा। अपने आर्य जगत् युवा संन्यासी स्वामी शान्तानन्द जी ने, भाव पाठकों के लिए सरल होते हुए गम्भीरता को लिए हुए हैं। वेद मन्त्रों के भाव को सभी पाठक सरलता से ग्रहण कर लें इस एक पुस्तक **'साम अथर्ववेद शतक'** में लेखक-लेखिका ने ऐसा परिश्रम किया है। पुस्तक पाकर ही पाठक इन दोनों के परिश्रम से परिचित हो सकते हैं।

दूसरी पुस्तक **'चतुर्वेद शतकम् भाव गीत'** के लेखक वल्लभमुनि वानप्रस्थी ने भी चार सौ मन्त्रों के भाव को गीतिका रूप में लिखा है। इन दोनों पुस्तकों में वेद के चुने हुए मन्त्र है, जिनके भावों को पढ़ पाठक अपने ज्ञान का और विस्तार कर प्रभु के अधिक निकट होता जाएगा।

दोनों पुस्तकें स्पष्ट छपाई, सुन्दर आवरण से युक्त है। पुस्तकों को प्राप्त कर पाठक लेखकों के परिश्रम को सफल करेंगे। इसी आशा के साथ... – आचार्य सोमदेव।

पुस्तकों का परिचय

१. पुस्तक	**- साम अथर्ववेद शतक**
लेखक-लेखिका	- स्वामी शान्तानन्द सरस्वती
	- विमलेश बंसल आर्या
प्रकाशक	- आर्य समाज सन्त नगर, ३६५, सन्त नगर, पूर्वी कैलाश नई दिल्ली- ११००६५
दूरभाष	- ०११-२६४१२७३५,
चलभाष	- ९८१०९४९१०९
पृष्ठ	- २०८
मूल्य	- ७० रुपए
२. पुस्तक	**- चतुर्वेद शतकम् भाव गीत**
लेखक	- वल्लभमुनि वानप्रस्थी
प्रकाशक	- सन्त श्री ओधवराम वैदिक गुरुकुल भवानीपुर, जिला-कच्छ (गुजरात)
दूरभाष	- ०२३३१-२३३२५५
चलभाष	- ९९९८५९४३१०
पृष्ठ	- १२३
मूल्य	- ४० रुपए

गुरुकुल जमानी में सामवेद परायण यज्ञ सम्पन्न

आचार्य ब्र. नन्दकिशोर द्वारा स्थापित, स्वामी अमृतनन्द जी सरस्वती द्वारा पोषित-पल्लवित तथा वर्तमान में परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा संचालित गुरुकुल जमानी जो कि मध्यप्रदेश प्रान्त के होशंगाबाद जिले के मुख्य रेलवे स्टेशन इटारसी जंक्शन से मंगलवाड़ मार्ग के मध्य जमानी गांव से लगभग डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर प्रसिद्ध स्थान तिलक सिन्दूर मार्ग के किनारे सुदूर वनांचल में वृक्षों से आच्छादित वृहद भू-भाग पर स्थित है। विगत अनेक वर्षों से क्षेत्र में वैदिक धर्म प्रचार तथा गुरुकुल की गतिविधियों को गति देने हेतु छिन्दवाड़ा क्षेत्र के आचार्य सत्यप्रिय जी समर्पित निष्ठा एंव सेवाभाव से सक्रिय है। प्राप्त जानकारी अनुसार विगत वर्षों में यह आयोजन तृतीय आयोजन के रूप में दिनांक २० से २२ जनवरी तक आचार्य कर्मवीर जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ के द्वारा सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ के मुख्य यजमान आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान आचार्य सोमदेव जी आर्य अजमेर थे। आचार्य श्री को आशीर्वाद देने उनकी माताजी भी अन्य परिजनों तथा स्नेहीजनों के साथ हरियाणा से पधारी थी। भजन अमृत की सरिता कुलदीप जी आर्य भजनोपदेशक द्वारा बहाई गई। आयोजन में स्वामी अमृतनन्द जी, स्वामी ऋतस्पति जी, आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी, सेवानिवृत आईजी वेदप्रकाश जी शर्मा, उनकी धर्मपत्नि डॉ. पुष्पांजलि शर्मा सहित अनेक गणमान्य जनों ने उपस्थित होकर आयोजन को गरिमा प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन आचार्य डॉ. अखिलेश जी शर्मा धूलिया द्वारा किया गया। वैदिक संसार द्वारा महापुरुषों की चित्र प्रदर्शनी तथा वैदिक साहित्य का भव्य स्टॉल विक्रयार्थ लगाया गया।

गुरुकुल में संचालित गोशाला तथा सुरम्य वातावरण, सेवाभावी कार्यकर्ताओं ने मन मोहन लिया।

साहित्य में (मिथ) काल्पनिक चरित्र चित्रण

जांगिड कुल गौरव
- देशराज आर्य - सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य
सेक्टर-४, रेवाड़ी, हरियाणा
चलभाष - ०९४१६३३७६०९

साहित्य में सरल व सहज अर्थ होता है कि किसी भी भाषा या देश के उन समस्त ग्रन्थों, लेखों आदि का समूह जिसमें स्थायी उच्च और गूढ़ विषयों को सुन्दर रूप से व्यवस्थित विवेचन किया हुआ हो। अंग्रेजी में साहित्य को लिटरेचर कहते हैं। साहित्य में ही हम ऐसे (मिथ) काल्पनिक पात्रों (चरित्र चित्रण) के विषय में पढ़ते हैं जो अनुश्रुत है, जिन्हें बहुत दिनों से हम सुनते सुनाते चले आए हैं तथा जिनका कोई आधार या प्रमाण होता ही नहीं है। उदाहरण स्वरूप दैत्य, दानव, दाना, असुर, राक्षस, भूतप्रेत, बैताल आदि नाम ऐसी अनुश्रुतियां है जिन पर अंध विश्वासी लोग पूर्ण विश्वास कर लेते हैं तथा उन्हें वास्तविक समझ लेते हैं। प्राचीनकाल से ही लेखकों ने साहित्य में जल, थल व नभ के असम्भव तथा असहज कार्य जो सामान्य मानव द्वारा सम्भव नहीं समझे गए उन्हीं कार्यों को साहित्यकारों ने काल्पनिक मनगढ़ंत व असत्य ऐसे पात्र (मिथ) कल्पित किए जो इन कार्यं को करामाती ढंग से या ऐयारी के माध्यम से पूर्ण करते दिखाये गए हैं।

राजा विक्रमादित्य की कहानियां पढ़ने से ज्ञात होता है कि उन्होंने दो ताल-बैताल नाम के यक्षों को अपने वश में किया हुआ था। (यक्ष का शब्दिक अर्थ है देवयोनि) बैताल नाम का यक्ष अगिया कहलाता था, जो मुंह से आग निकालता (फेंकता) था। परन्तु वास्तविकता में यह एक विद्या है जिसे करना सम्भव है। बेताल रात्रि को नगर भ्रमण कर राजा को नगर की गुप्त सूचनाएं उपलब्ध कराता दर्शाया गया है। ऐसे कार्य करने हेतु समाज को भ्रमित करते हुए ही छलावा, भूत-प्रेत, दैत्य, दानव, पिशाच, जिन (मुसलमानों का भूत) आदि का काल्पनिक चित्रण साहित्य में किया गया है। कालान्तर में ये चरित्र इतने विश्वसनीय बन गए कि इन्हें सभी स्वीकार करने लग गए। यह परम्परा पीढ़ी दर पीढ़ी अभी भी चली आ रही है कि ये पात्र कभी न कभी तो रहे ही होंगे। मानव जन्म लेने के साथ ही सुनना तथा पढ़ना सीख लेने पर पढ़कर अपना ज्ञान बढ़ाता रहता है। बचपन की सुनी बातें उसे आजीवन याद रहती है। उसे घर परिवार, पड़ोस में ऐसी अंध विश्वास की बातें ही सुनने को मिलती हैं। पुस्तकों में ऐसी बातें पढ़कर उसे और भी विश्वास हो जाता है, चूंकि बाल्यावस्था में विवेक नहीं होता तथा सत्य और असत्य का अन्तर नहीं समझ सकता।

जिस प्रकार हिन्दी साहित्य में दाना, दैत्य, बैताल जैसे काल्पनिक पात्र अपना विशेष स्थान रखते हैं उसी प्रकार अंग्रेजी लिटरेचर (साहित्य) में भी ड्रेगन नाम का एक काल्पनिक पात्र है, जिसे विश्वभर में मान्यता है लोग उसे जानते हैं समझते हैं। ड्रेगन एक काल्पनिक, नकली, अविश्वनीय तथा मगरमच्छ व सांप जैसा जीव जिसके पंख तथा पंजे भी हैं तथा यह मुंह से आग निकालता है और इसकी लम्बी पूंछ में लोहे का डंक जैसा बताया गया है। किसी भी बहादुर योद्धा को अपनी वीरता दिखाने के लिए इस ड्रेगन से युद्ध करना आवश्यक माना है। यह ड्रेगन कुंवारी युवा लड़कियों का इन्चार्ज बताया गया है। यह पात्र पूर्णतया काल्पनिक है, परन्तु इसका चित्र अनेक देशों के डाक टिकटों और सिक्कों पर अंकित है। बाजार में इसके मॉडल (नमूने) उपलब्ध हैं। यह साहित्यकारों की कल्पना है उन्होंने विशेष प्रकार के कार्य करवाने के लिए ऐसा पात्र बनाया, जिसे सार्वजनिक स्तर पर भी इतनी मान्यता मिली।

हमें हैरानी होगी कि बुद्धिमान, ज्ञानवान और अपने आपको एडवांस समझने वाले अंग्रेज भी बहुत बड़े अन्धविश्वासी हैं। अंग्रेजी साहित्य में हमें ऐसे अनेक काल्पनिक पात्र मिलते हैं जिन पर यकीन नहीं होता। फॉन (Faun) एक मिथ पात्र है जिसे वन व खेतों का भगवान माना है, उसकी आकृति मानव शरीर के सिर पर बकरी के सींग तथा टांगे भी बकरी की दिखाई हैं। साफिंक्स (Sphinx) एक ऐसा पात्र हैं जिसका शरीर शेर का तथा सिर औरत का बनाया है। मिश्र के लोग इसे देवता मानते हैं। मरमेड़ (Mermaid) जो मुंह से स्त्री पीछे से मछली, ग्रीफिंस (Griffins) जिसका सिर तथा पंख चील के तथा शरीर शेर का बनाया गया है। इस आकृति को कवच (armout) में भी चित्रित कियागया है। आंग्रेजी साहित्य में पैंच पैर का कुत्ता, तीन सिर का कुत्ता (Three headed dog) नरक के द्वार पर चौकीदार दर्शाया है। ये सब पात्र Imaginary, Fictititious, Unreal, Absurd, Unreasonable, Foolish, Incredible, Ridiculous, Inrented, Concept, Myth Fabulous, beliefs, Mystery, Sorcery, Enigmatic, Legend and impossible) हैं। जिन पर विश्वास नहीं किया जाता, केवल साहित्य में हमें पढ़ने को मिलते हैं तथा अनुभूतियों के आधार पर ये आज तक चले आ रहे हैं। बहुत कम लोग यह जानते होंगें कि अंग्रेजी भी ट्रेडिशनल हैं। रुढ़ीवादी हैं, वे अपनी पुरानी परम्पराओं को विश्वास के साथ निभाते हैं। उन्होंने बारह राशियों Zodiac में नौंवी राशि को घोड़े के शरीर पर धनुष लिए मनुष्य तथा दसवीं राशि में बकरी का पिछला भाग मछली का बनाया दिखाया है। गुलिवर ट्रेवल में बिलस्त बराबर मानव बताये हैं तथा इसी में गुलिवर स्वयं ऐसे मानवों के पास पहुंच जाता है कि वह स्वयं बिलस्त दिखाई देता है, यह सब मिथ है।

हिन्दी साहित्य में बाबू देवकीनन्दन खत्री के प्रसिद्ध उपन्यास चन्द्रकान्ता संतति तथा भूतनाथ में तिलिस्मी पात्र हैं, जिन्हें ऐयार कहा गया है। एलिफ लैला की कहानियां जिसे अंग्रेजी में ऐरे बियन नाईट्स कहा जाता है एक हजार रहस्यमयी कहानियों का संग्रह है, जिसमें पशु, पक्षी, आपस में बातें करते दर्शायें हैं। महाकवि कालीदास के समकालीन अंग्रेजी लेखक शेक्सपियर ने भी शेष भाग पृष्ठ ३२ पर

जानें! नव संवत्सर (नव वर्ष) को

- रमेश चन्द्र भाट -
उप मंत्री, आर्यसमाज रावतभाटा
वाया कोटा, (राजस्थान)
चलभाष - ०९४१३३५६७२८

ओं तत् सत् श्री ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्द्धे वैवस्वत मनवन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे अमुक संवत्सरे. ..अमुक...अयने..अमुक...ऋतो..अमुक...मासे.. अमुक.. पक्षे.. अमुक ..तिथो...अहम् .अमुक..कर्म करणाय भवन्तं वृणे ।

हमारे विद्वान ऋषियों ने नित्यप्रति ''ओं तत् सत्'' परमेश्वर के इन तीन नामों के साथ उपरोक्त उच्चारण करके कार्यों का प्रारंभ करने कि परम्परा डाली जिसका अर्थ हे- ब्रह्म दिन के दूसरे प्रहर, वैवस्वत मनवन्तर (स्वायम्भुव-१, स्वारोचिष-२, औतमि-३, तामस-४, रैवत-५ व चाक्षुष-६, यह छ मन्वन्तर बीत गये हें व सातवाँ वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है) के अठाईसवे कलियुग के प्रथम चरण का भोग चल रहा है। आदि सृष्टि से संकल्प संवत्-१ अरब, ९७ करोड़, २९ लाख, ४९ हजार, १२० वर्ष, वर्तमान सृष्टि संवत-१ अरब, ९६ करोड़, ०८ लाख, ५३ हजार, १२० वर्ष, वैवस्वत मनु से आर्य संवत्-१ अरब, २० करोड़, ५३ लाख, ३३ हजार, १२० वर्ष, कलियुग का ५१२० वर्ष व विक्रमी संवत् २०७५ का शुभारंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के प्रथम प्रहर तदनुसार १८-मार्च २०१७, मंगलवार के दिन होना है। इस प्रकार नित्य बोलने से सृष्टि की काल गणना का इतिहास कण्ठस्थ कर रखा है। जैसे बही खाते में मिती डालते है और तिथि, महीना, वर्ष बढ़ाते चले जाते हैं। इसी प्रकार आर्य लोग उपरोक्त वचन में तिथि, महीना, वर्ष बढ़ाते चले आ रहे हैं, जिससे सृष्टि की काल गणना का इतिहास आज तक सम्पूर्ण आर्यावर्त्त में एक समान हें ।

ऋषियों ने काल के बारे में गहराई से चिन्तन किया और मोक्ष प्राप्ति के साधनभूत द्रव्यों में काल को भी द्रव्य रूप में सम्मिलित किया है। महर्षि कणाद ने वैशेषिक दर्शन में कहा हैं **''पृथ्वीव्यापस्ते जो वायुराकाश कालो दिगात्मा मन इति द्रव्याणि।''** अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, काल, दिग्, आत्मा व मन ये वो द्रव्य हें जिनका मोक्ष प्राप्ति हेतु तत्वज्ञान अनिवार्य है। काल शब्द 'कल' धातु से "धन' प्रत्यय करने से बनता है, यास्क इसको गत्यर्थक 'कल' धातु से व्युत्पन्न मानते हें। इस प्रकार काल का अस्तित्व गति में निहित है। वेदों में इसे आकाश, द्युलोक, पृथ्वी और अन्य सब पदार्थों एवं भूतों का जन्म दाता बताया है । यह सारे ब्रह्माण्ड को व्याप्त करता है इसमें ही मन प्राण और नाम समाहित है। सृष्टि का आदि और अंत काल ही है। हिरण्यगर्भ के विस्फोटित विश्व द्रव्य का प्रथम पदार्थ जब गतिमान होता है तो सर्वप्रथम काल की स्थापना होती है। **''समुद्रा दर्णवादधि संवत्सरो अजायत, अहोरात्राणि विदध विश्वस्य मिश्तोवशी।।''** (ऋ. १०/१९०/२) फिर काल के विभाजक त्रुटि, पल, मुहूर्त, दिन-रात, पक्ष, मास, संवत्सर आदि बनते जाते हैं ।

हमारे ऋषियों ने चन्द्र, सूर्य, पृथ्वी व नक्षत्रों का अध्ययन कर यह पता लगाया की पृथ्वी पर होने वाले दिन व रात का समय घटता-बढ़ता रहता है, लेकिन दिन और रात (अहो-रात्र) का संयुक्त समय एक ही होता है। चन्द्रमा का प्रकाश घटता-बढ़ता रहता है और निश्चित समयावधि पर पूर्णिमा या अमावस्या आती है। पूर्णिमा व अमावस्या की भी एक निश्चित समयावधि लगभग २९ दिन पर पुनरावृति होती है, जिसे चांद्र मास के नाम से जाना जाता हे। वर्षा, सर्दी व गर्मी ये तीनों मौसम व सभी ६ ऋतुएं भी एक सुनिश्चित चक्र से आती हैं। बारह पूर्णिमाओं के बाद हम उसी स्थिति में होते हैं जिसमें बारह माह पूर्व थे। इस प्रकार बारह माह की समयावधि को एक वर्ष का नाम दिया गया। ३६५ दिन, ५ घंटे, ४८ मिनिट व ४६ सेकेण्ड में पृथ्वी अपने क्रांतिवृत पर बारह राशियों में सूर्य के चारों और एक परिक्रमा पूरी करती है, इसे एक सौर वर्ष (संवत्सर) कहते हैं। सूक्ष्म गणनानुसार चन्द्रमा के बारह महीनों का वर्ष सौर वर्ष से ११ दिन ३ घटि ४८ पल छोटा होता है। इस प्रकार ३२ माह में चांद्र वर्ष सौर वर्ष से लगभग एक माह पिछड़ जाता है। चांद्र वर्ष एवं सौर वर्ष की गणना में सामंजस्य बनाये रखने के लिए हर ३२ माह के बाद एक अधिमास जोड़ा जाता है। वि. २०७३ आषाढ़ मास तदनुसार १७-जून से १६-जुलाई २०१५ तक को अधिक मास माना गया।

जब काल चक्र एक संवत्सर का समय पूर्ण कर अपनी आयु में एक अंक की वृद्धि कर नवीन शुरुआत करता है उस दिन को संसार की सभी सभ्य जातियों में नव वर्ष के रूप में मनाया जाता है। आर्यावर्त्त में चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की पहली तिथि वर्ष भर की सभी तिथियों में सबसे अधिक महत्त्व रखती है क्योंकि इस दिन ईश्वर ने सृष्टि की रचना प्रारम्भ करी इसलिये इसे प्रवरा तिथि कहा था, जिसका अर्थ है सर्वोत्तम दिन, जो हमें सिखाता है कि हम अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में जो भी काम करें वह लोक कल्याण की दृष्टि से श्रेष्ठ स्थान पर रखे जाने योग्य हों। इस तिथि को प्रथम स्थान मिला इसलिये इसे प्रतिपदा कहा जाता है और यह दिन नववर्ष के प्रथम दिन के रूप में मनाया जाता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बसंत ऋतु के चैत्र व वैशाख मास की अलग-अलग तिथियों को नववर्ष मनाया जाता है-

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा- ज्यादातर उत्तर भारतीय राज्यों में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन नव संवत्सर मनाते है, महाराष्ट्र में इसे गुड़ी पड़वा, कन्नड में उगाड़ी व सिंधी नववर्ष चेटीचंड के नाम से मनाया जाता है। शुक्ल पक्ष में चांद अपने पूरे सौन्दर्य के साथ आकाश में दिखाई देता है, इसलिए चैत्रचंद्र का देशज रूप हुआ चैतीचांद और फिर सिंधी भाषा में हुआ चेटीचंड।

वैशाख मास- वैशाख कृष्ण पक्ष की दसमी को बैशाखी-पंजाब में, आसाम में बिहू, पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश में बंगाली नया

साल पोहेला बैसाखी नाम से, तमिल में नया साल पुथांडू नाम से, मलयाली नव वर्ष विशु केरल में, आंध्रप्रदेश में उगादी (युगादि), मैथली क्षेत्र में जुड़ें शीतल और कश्मीर में नवरेह के नाम से नया साल मनाया जाता है ।

व्यापारी वर्ग में मारवाड़ी नया साल दीपावली के दिन व गुजराती नया साल दीपावली के दूसरे दिन होता है । भारत सहित संसार के अधिकतम देशों का बजट वर्ष मार्च महीने में आता है।

इस्लामी नव वर्ष - इस्लामिक कैलेंडर का नया साल मुहर्रम की पहली तारीख से होता है। इस्लामी कैलेंडर पूर्णतया चन्द्र आधारित कैलेंडर है जिसके कारण इसके बारह मासों का चक्र ३३ वर्षों में सौर कैलेंडर को एक बार घूम लेता है। इसके एक वर्ष में ३५४ दिन होते है जो की ग्रेगरी कैलेंडर के अनुसार ग्यारह दिन कम है इसलिये हिजरी नववर्ष ईस्वी सन् की अलग-अलग तारीखों व अलग-अलग ऋतुओं में आता है।

पश्चिमी नव वर्ष - बेबिलोनियन सभ्यता में अनुमानत: ४००० वर्ष पूर्व से ही नववर्ष मनाते रहे हैं, उस समय नव वर्ष का ये पर्व २१ मार्च को मनाया जाता था जो कि वसंत के आगमन की तिथि होती थी।

रोमन कैलेण्डर- आज के ई० सन् का मूल रोमन कैलेण्डर है जो ईसा के जन्म से ७५३ वर्ष पूर्व रोम नगर की स्थापना के साथ प्रारंभ हुआ। इसमें मार्च से दिसम्बर तक दस माह होते थे तथा ३०४ दिन का वर्ष होता था और वर्ष की शुरुआत १-मार्च से होती थी। ७१३ ईदपूद में राजा नूमा पिम्पोलियस ने इसमें दो माह जनवरी और फरवरी जोड़कर १२ माह का वर्ष बनाया जिसमें ३५५ दिन थे। पर आगे के वर्षों में ग्रहीय गति से इनका अंतर बढ़ता गया जिसे ठीक करने के लिये जूलियस सीजर ने नये कैलेंडर का आदेश दिया जिसमे क्रम से ३१ व ३० दिन के माह बनाये व फरवरी माह २९दिन का रखा इस प्रकार वर्ष ३६५वें दिन का हो गया। इसे जूलियन कैलेंडर के नाम से जाना जाता है। इतिहास में अपना नाम अमर करने के लिए उसने वर्ष के सातवें महीने के नाम को बदलकर अपने नाम पर जुलाई किया, जो ३१ दिन का था। बाद में सम्राट आगस्टस हुआ, उसने भी अपना नाम इतिहास में अमर करने हेतु आठवें महीने का नाम बदलकर अगस्त कर दिया। तब अगस्त ३० दिन का होता था पर 'सीजर से मैं छोटा नहीं', यह जताने के लिए फरवरी के माह जो उस समय २९ दिन का होता था से एक दिन लेकर अगस्त भी ३१ दिन का कर दिया। तब से मास और दिनों की संख्या वैसी ही चली आ रही है।

ग्रेगोरियन कैलेंडर - १६वीं सदी में जूलियन कैलेन्डर में १० दिन बढ़ गए और चर्च के ईस्टर आदि त्यौहार गड़बड़ाने लगे, तब पोप ग्रेगोरी-तेहरवे ने १५८२ के वर्ष में इसे ठीक करने के लिए यह हुक्म जारी किया कि ४ अक्टूबर के अगले दिन को ५ की जगह १५ अक्टूबर माना जाए जिससे १० दिन का अंतर खत्म हो गया और वर्ष का आरम्भ २५ मार्च की बजाय १ जनवरी से करने को कहा। रोमन कैथोलिकों ने पोप के आदेश को तुरन्त माना, पर प्रोटेस्टेंटों ने धीरे-धीरे माना। ब्रिटेन जूलियन कैलेंडर मानता रहा और १७५२ तक उसमें ११ दिन का अंतर आ गया। अत: उसे ठीक करने के लिए २ सितम्बर के अगले दिन को ३ की जगह १४ सितम्बर माना गया जिससे ११ दिन का अंतर खत्म हो गया ।

इस प्रकार पश्चिमी कैलेण्डर कई परिवर्तनों के दौर से गुजरा, जब पश्चिम के देशों में ईसाई मत का प्रभाव बढने लगा तब इस मत से संबंधित दिनों पर भी नव वर्ष मनाया जाता था। २५ मार्च- इस दिन देवदूत ने मेरी को बताया की तुम ईश्वर की संतान को जन्म दोगी और १जनवरी- ईसा के जन्म के बाद खतना की रस्म का दिन ।

यह भी मान्यता है की प्राचीन समय में, व्यापार व युद्धों के दौरान पश्चिम के लोगों का भारतीयों से सम्पर्क बढ़ने पर उन्हें हमारी काल गणना ने प्रभावित किया। भारतीय काल गणना सूर्य-चंद्र व नक्षत्रों की गति पर आधारित एक जटिल गणना है जिसे समझने के लिये ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान होना आवश्यक है, साधारण आदमी इसे आसानी से नहीं समझ सकता। भारतीय पंचांग को अपने यहाँ लागु करने के लिये रोम वालों ने साल को १२ भागों में बांटकर उनके नाम एकाम्बर (३१), द्वितीयाम्बर (३०), तृतियाम्बर (३१), चतुर्थम्बर (३०), पञ्चाम्बर (३१), षष्ठम्बर (३०), सप्तम्बर (३१), अष्टाम्बर (३०), नवम्बर (३१), दशम्बर (३०), इकादाशम्बर (३१), द्वादाशम्बर (३०/२९) नाम रख दिये। समय-समय पर इनमे परिवर्तन होते रहे। कुछ के नाम यूनानी देवताओं के नाम पर जैसे इकादाशम्बर को समय व शुभारंभ के देवता जनुयारियस, द्वादाशम्बर को शुद्धिकरण के देव फेब्रूयारियस, एकाम्बर को युद्ध के देवता मार्श्स, द्वितीयाम्बर को कृषि से सम्बद्ध एप्रिलिस, तृतियाम्बर को उर्वरता व समृधि की देवी मेयस, चतुर्थम्बर को विवाह के देव जुनिस, पञ्चाम्बर का नाम Quinitiles वा उसके बाद जुलाई, षष्ठम्बर का नाम Sextilis व उसके बाद अगस्त कर दिया गया परन्तु सप्तम्बर, अष्टाम्बर, नवम्बर, दशम्बर वैसे ही रहे । वर्तमान ईस्वी कैलेन्डर के माह के नामों को देखे तो सप्त, अष्ट, नव व दश अम्बर , सात, आठ, नो व दस को व्यक्त करते हैं व अम्बर मतलब आकाश। इन महीनों का क्रम तो बदल गया लेकिन नाम नहीं बदला।

वर्त्तमान में पुरे संसार में ग्रेगोरियन कैलेंडर ही सर्वाधिक प्रचलन में है। भारत देश पर बहुत समय तक अंग्रेजों ने राज किया इसलिये सारी व्यवस्थाएं ईस्वी सन् के आधार पर विकसित हुई व हमारा राजकीय कार्य इसी कैलेंडर के अनुसार चलता है। इस कारण भारतीय भी इसे नव वर्ष के रूप में मनाते आ रहे हैं इसलिए नई पीढ़ी तथा शहरों में पले बढे लोगों को भारतीय कालगणना की वैज्ञानिकता की जानकारी नहीं है।

भारतीय काल गणना में ऐसी व्यवस्था कर रखी है की सदियों-सदियों से एक पल का भी अंतर नहीं आता। जबकि पश्चिमी कैलेंडर में अनेको परिवर्तन किये हर चार वर्ष बाद लीप इ्यर में फरवरी को २८ से २९ दिन का कर देते है, फिर भी पूर्णांकन नहीं हो पाता। विश्व की मानक संस्था एक दिन का औसत मान ८६४०० सेकेण्ड मानती है। पृथ्वी की गति में परिवर्तन होता रहता है जिससे अंतरराष्ट्रीय परमाणु घड़ी और पृथ्वी के गमन के आधार वाले समय में अन्तर आता रहता है। पृथ्वी के घुमने की गति को तो वैज्ञानिक नहीं बदल सकते इसलिये सामंजस्य बैठाने के लिये अंतरराष्ट्रीय परमाणु घड़ी को एक सेकेण्ड धीमा कर देते है जिसे

लीप सेकेण्ड कहते हैं। ३०-जून' २०१५ को लीप सेकेण्ड जोड़ा गया था और १-जनवरी २०१७ से पूर्व भी लीप सेकेण्ड जोड़ा जायेगा।

पृथ्वी ० से १८०० पूर्वी व ० से १८०० पश्चिमी देशांतर में बटी है, इन ३६० अंश को घूमने में पृथ्वी को २४ घंटे का समय लगता है। भारत ९०० पूर्वी और रोम आदी ०० पश्चिमी देशांतर पर स्थित है अत: इनके समय में ६ घन्टे का अन्तर रहता है, यानी जब हमारे यहाँ सूर्यादय होता है तब वहाँ पर अर्धरात्रि होती है।

जब रोम वालों ने भारतीय पंचांग को अपने यहाँ लागू किया तब नव वर्ष भी भारतीय समय के अनुसार मनाते थे। आर्यावर्त्त में शुभ कार्य शौच व स्नान से निवृत होकर प्रात: काल में ६ बजे के आस-पास करने की परम्परा रही है, इसलिये नववर्ष के हवन-पूजन आदि प्रात: काल में ही शुरू हो जाते हैं उस समय यूनान, रोम आदि में मध्य रात्री होती है, तब वो हमारा अनुकरण करते थे और वो हमारे साथ उसी समय नववर्ष मनाना शुरू कर देते थे जब उनके यहाँ मध्यरात्री होती थी। उनके यहाँ नव वर्ष का आरम्भ मार्च के स्थान पर जनवरी से कर दिया लेकिन नववर्ष के पर्व का आयोजन मध्यरात्री को ही मनाते आ रहे हैं, क्योंकि अब हम उनका अनुकरण करने लगे हैं इसलिये हम भी उनके साथ बिना सोचे समझे शीत की मध्यरात्री को हैप्पी न्यू ईयर का शोर मचाकर ऐसे पर्व को मनाना शुरू कर देते है जिसकी कोई वैज्ञानिकता नहीं है।

महान गणितज्ञ भास्कराचार्य ने भी प्रतिपादित किया है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से दिन, मास, वर्ष व युग का शुभारंभ होता है। इस समय शीत व्यतीत होकर ग्रीष्म के आगमन से पूर्व बसंत ऋतु का सुहाना मौसम रहता है। वन उपवन में पुष्पों, फलों से आच्छादित पेड़ पौधे सुगंध बिखेरते हुए नववर्ष के आतिथ्य के लिये तैयार रहते हैं, कहीं पलाश की लालिमा तो कही सरसों का पीला रंग छाया हुआ है, आम बौरा रहें हैं, वायु में सुगंध और मादकता की मस्ती अनुभव हो रही होती है। होली के पश्चात् बसंत ऋतु के आगमन के साथ नववर्ष के महोत्सव का आरंभ हो जाता है।

भारतीय कालगणना का वैशिष्टय यह है कि यह उस काल तत्व पर आधारित है जो सारे ब्रह्माण्ड को व्याप्त करता है। यह कालगणना समस्त ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति एवं पृथ्वी पर सृष्टि चक्र के प्रारंभ को इंगित करती है। यह विश्व की अन्य कालगणनाओं की भांति किसी घटना विशेष या व्यक्ति विशेष पर आधारित किसी देश विशेष की कालगणना नहीं है, अपितु नक्षत्रों की गणना पर आधारित होने के कारण यह कालगणना वैज्ञानिक एवं वैश्विक है , इसलिये इसे सृष्टयाब्द या कल्पाब्द के नाम से भी जाना जाता है। वर्तमान समय में अधिसंख्य लोग वैदिक काल गणना व पंचांग से अपरिचित है और इसका उपयोग केवल धार्मिक पर्वों व त्योहारों की तिथी जानने तक ही सिमित रह गया हैं। यह हमारा कर्त्तव्य है की हम अपने ऋषियों के ज्ञान व उसके वैज्ञानिक स्वरुप को समझे व आने वाली पीढ़ी को समझाने का प्रयत्न करे जिससे की वह अपने पूर्वजों के ज्ञान पर गर्व कर सकें। ●

पृष्ठ १२ का शेष भाग ....

अजब जादूगर

फलस्वरूप वह मुख्तार मुन्शीराम, वकील मुन्शीराम, महात्मा मुन्शीराम, आचार्य मुन्शीराम से आगे निकल गया। स्वयं एक फकीर स्वामी श्रद्धानन्द, जादूगर श्रद्धानन्द बन गया। उन्होंने खोल दिया कन्या विद्यालय, गुरुकुल आर्य समाज और न जाने क्या-क्या। ऐसा एक नहीं और न जाने कितनों पर उस जादूगर का जादू चला और उन सब पुरुषों ने महापुरुष बनकर वेद वीणा को न केवल विश्व व्यापी बनाया, प्रत्युप लुप्त प्राय: वेद धर्म को पुन: प्रतिष्ठित कर दिया।

आकुल-व्याकुल अश्रुपात करती परतन्त्र वृद्धा भारत माता की बेड़ियां कट गई। खोई हुई घूरे पर उपेक्षित पड़ी हुई वेद वीणा को स्वच्छ शुद्ध करके फिर से भारत माता को, मानवता की माता को प्रदान करने के लिए ही तो उस जादूगर का जन्म वीणा की टन-टन टंकारा में हुआ था। प्रतिवर्ष जहां देश देशान्तर से आर्य आते, मेला लगाते, ऋषि बोध से निज बोध जगाते। **टंकारा वाले जादूगर! तुम प्रणम्य हो, परिपुण्य तुम्हारा जादू और धन्य तुम्हारी वेद वीणा।** अखिल विश्व के सर्वोच्च संगठन संयुक्त राष्ट्र संघ ने यदि वेद वीणा-ऋग्वेद को विश्व धरोहर घषित करके संरक्षित किया है तो कभी वह दिन भी आएगा जब वेद वीणा के प्रभुदत्त स्वर **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** न केवल बोल उठेंगे, अपितु प्रभावी होकर विश्व मानवता को **''वसुधैव कुटुम्बकम् एवं विश्वएकनीडम्''** के लक्ष्य की ओर अग्रसर करने में समर्थक होंगे। **वेदों की वीणा अखिल विश्व में बजवा दी देव दयानन्द ने। धन्य हो टंकारा, धन्य हो देव दयानन्द आपका हुंकारा जादू का पिटारा सत्यार्थ प्रकाश तुम्हारा। धन्य हो धन्य हो, महर्षि तुम धन्य हो।** ●

पृष्ठ २९ का शेष भाग ....

साहित्य में

अपने नाटकों (ड्रामों) मैक्बैथ, हैमलेट आदि में चुड़ैल, डायन, का पार्ट अदा करवाया है। अर्थ यह है कि ऐसे पात्र केवल साहित्य में उपयोग किए गए जो लेखक की अपनी मान्यता व कल्पना थी। कालान्तर में इन्हें मान्यता मिलती गई।

अंग्रेजी साहित्य में हमें ऐसे पात्र पशु-पक्षियों के रूप में मिलतें हैं, परन्तु हिन्दी साहित्य में हमारा बड़ा दुर्भाग्य है कि हास्यास्पद पात्र मनुष्यों ने गढ़ लिए। महावीर हनुमान जैसे ब्रह्मचारी अजेय योद्धा के भी बन्दर, सुअर, नरसिंह, गरुड़ और अश्व के पांच मुख लगा दिए। ब्रह्मा जिसने चार ऋषियों से चार वेद पढ़े के भी तीन मुख बना दिए। भला पांच या तीन मुंह का मानव सम्भव है? अनेक देव-देवी बनाकर चरण या अनेक हाथ बना दिए। अगर आप चित्र की बजाय वास्तव में ऐसे व्यक्ति को देखें जिसके अनेक हाथ तथा मुंह बनें हो तो कितना विभीषक, भयंकर और डरावना लगेगा। आज विज्ञान का युग है। नई पीढ़ी के नौनिहाल, भावी राष्ट्र के कर्णधार बच्चों को यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि ये सब पात्र कल्पित हैं। केवल साहित्य की रचनाएं हैं। वास्तव में ऐसे मनुष्य जीव जन्तु नहीं थे और न ही हो सकते। केवल पढ़ने हेतु, किसी बात को समझाने हेतु या मनोरंजन करने के साधन मात्र हैं। वास्तविकता से इनका कोई सम्बन्ध नहीं है। ●

संकल्प पाठ का आवश्यक संज्ञान

- दार्शनेय लोकेश -
सम्पादक-श्री मोहन कृषि आर्ष पत्रकम्
ग्रेटर नोएडा, जि.-गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र.)
चलभाष- ०९४१२३५४०३६

केरल के एक गुरुकुल से आचार्य श्री के.एम. राजन चाहते हैं कि देशभर की आर्य समाजों या आर्य समाज के सभी प्रतिष्ठानों में सिद्धान्त सम्मत एक ही संकल्प पाठ होना चाहिए। ऋषि उद्यान अजमेर और दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़, गुजरात के दैनिक यज्ञों में चल रहे संकल्प पाठों की उन्होंने प्रतियां भेजते हुए एक अपेक्षा के साथ मुझे लिखा-

"I Suggest Acharya Darshaney Lokesh ji To Make a Correct format of sankalp Paath and make it for Circulation among arya scholars for making corrections, if any." मुझे भी सुझाव अच्छा लगा।

यद्यपि हमारे वैदिक पंचांग ' श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् ' में हम प्रतिवर्ष काल गणना के अन्तर्गत वर्तमान सृष्ट्यादि संवत् की गणना देते ही हैं और साथ ही पत्रकम् के मुख पृष्ठ पर भी संकल्प पाठ भी दिया होता है, तथापि इस विषय पर मैं यहां एक स्पष्ट लेख दे रहा हूं।

ऋषि उद्यान के दैनिक यज्ञों में हो रहे संकल्प पाठ में भी लगभग सारी बातें वही हैं जो कि रोजड़, गुजरात के दर्शन योग महाविद्यालय के यज्ञों में वाचन हो रही है। दर्शन योग महाविद्यालय के संकल्प पाठ पर मैं पहले भी टिप्पणी कर चुका हूं। अन्तर अगर है तो केवल ये है कि महाविद्यालय प्रांगण में संख्यात्मक रूप से कही गई सृष्टि गणना (१९६०८५३११८) ही अजमेर में गद्यात्मक रूप से 'अंकानाम वामतो गति' के अनुसार **'अष्टैकेन्दुगुणभूतव सुर्खार्तुनवेन्दौ सृष्टिवत्सरे वेदर्शिखनेत्रे वैक्रमाब्दे कालानकचन्द्रे.....'** कहकर पढ़ी जा रही है। अष्ट (८) एक (१) इन्दु (१) गुण (३) भूत (५) वसु (८) ख (०) ऋतु (६), नव (९) और पुनः इन्दु (१) अर्थात् (बायीं और से क्रम देने पर) वही १९६०८५३११८ की गिनती बनती है। अब सांस्कृतिक महत्व की बात ये है कि १९६०८५३११८ गिनती की इस गणना को सृष्ट्यादि के सन्दर्भ से गलत कह नहीं सकते और सही ये है नहीं। इसको भी साथ ही साथ स्पष्ट करते चलें।

वेद मार्गी बनो

लोग हमें मन्दिर जाने को कहते हैं।
पर हम तो रोज मंदिर में ही रहते हैं।।
इसीलिए उस मन्दिर जाने को देते नहीं तूल।
हम मन्दिर में ही रहते हैं ये लोग जाते भूल।।
मूर्ति को पूजना, है ईश्वर भक्ति के प्रतिकूल।
ईश्वर को सीमित करने की, मत करना ये भूल।
ये संसार है उसके गर्भ में, कण-कण में वह रम रहा।।
जब वो सर्व व्यापक है, फिर किस जगह वह कम रहा।।
उसकी बनाई विभिन्न मूर्तियां हम रोज ही पूजें।
इसीलिए इस जग में हमको, पर उपकार ही सूझे।
परमेश्वर की करो उपासना, चर्म चक्षु उसे देखें कभी ना।
गूढ़ ज्ञान की बात जरा ये, सोच समझ कर देखो।
चर्म चक्षुओं को बन्द करो, बस ज्ञान चक्षु से देखो।।
भांति-भाँति के रूप दिखेंगे, भांति-भांति की लीला।
सब ही रंग का वह दिखता है, न केवल लाल या पीला।।
उसका रंग जिस पे चढ़ जाए, वो नहीं पड़ता ढीला।।
अलग ही से आता नजर, वो लाखों की बस्ती में।
परवाह नहीं रहती दुनिया की, रहता अपनी मस्ती में।।
सारी दुनिया चाहे बैरी हो जाए, वो न किसी से डरता है।
जगह-जगह न मांगे भीख, बस प्रभु से प्रार्थना करता है।।
उसी के दिए हुए में वो पाता है आनन्द।
ईश्वर की उपासना से मिलता परमानन्द।।
जग को सच्ची राह बताने आये थे दयानन्द।
वेद मार्ग से ही मिलेगा, सबको परमानन्द।

- आर्य पी.एस. यादव -
आर्य समाज मण्डीदीप, रायसेन (म.प्र.)
चलभाष- ९४२५००४३७९

ध्यान देने की पहली बात ये है कि प्रहर और परार्द्ध का अलग-अलग और विशेष महत्व है। कालमान में पूर्वार्द्ध और परार्द्ध २ ही भाग होते हैं, जबकि दिवस मान में प्रहर दिनमान Day Duration और रात्रि मान Night Duration के हिसाब से ४-४ होते हैं। प्रहर दिनमान या रात्रिमान की बात करता है जबकि पूर्वार्द्ध और परार्द्ध सकल आयु का काल की (यहां ब्रह्मा की शतवर्षीय आयु का संदर्भ है) व्याख्या करता है। यत् पिण्डे तत् ब्रह्ममाण्डे व **''जीवेम् शरदः शतम्''** के अनुसार ब्रह्मा की आयु १०० वर्ष की कही गई है। अब प्रहर की बात करेंगे तो ब्रह्मा के वर्तमान दिनमान के भोग्य भाव की बात हम कर रहे होते हैं। ये दिनमान (४३२०००००० मानव वर्ष) ब्रह्मा (कल्पाधिपति) की वर्तमान आयु के अन्तर्गत का है और वह उनके ५१वें वर्ष का प्रथम दिनमान है। इसके सन्दर्भ मन्त्र अथर्ववेद ८/२/२१, गीता ८/१७ और मनुस्मृति १/७५ तथा विष्णु धर्मोत्तर पुराण आदि के प्रमाण हैं। संकल्प मन्त्र का पाठ प्रहरों के माध्यम से भी किया जा सकता है और परार्धों के माध्यम से भी। ध्यान रखने की बात ये है कि यदि हम परार्द्ध की बात से संकल्प वाचन करते हैं तो हम अपने ब्रह्मा के १५५५२१९७२९४९११९ वें

वर्ष में अपनी उपस्थिति दर्शाते हैं और जब हम '**द्वितीय प्रहरोत्तराद्धे**' कहकर संकल्प वाचन करते हैं तो हम ब्रह्मा के वर्तमान दिनमान मात्र (१९७२९४९१११९ वर्ष) की बात कर रहे होते हैं। निश्चित बात है कि अपनी संस्कृति से जुड़ा हुआ जितना लम्बा और तथ्यपूर्ण कालमान हम विश्वपटल पर रखेंगे उतने ही हम विश्वगुरु और प्रौढ़ और वरिष्ठ कहलाए जा सकने का एक दृढ़ आधार प्रस्तुत कर रहे होंगे।

यहां पर मैं एक रोचक जानकारी का उल्लेख करना अनुचित नहीं समझ रहा हूं। यह जानकारी मुझे देश की एक मान्य विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष जी से मिली है। कलेण्डर रिफार्म कमेटी के अधिक लोग विक्रम संवत् को ही भारतीय संवत् के रूप में लिए जाने के पक्ष में थे, किन्तु हमारे चाचा जी जैसा कि सभी जानते हैं पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित थे। उनको ये बात हजम नहीं हो पाई और वो इसलिए कि उससे अंग्रेजों का संवत् पीछे हो रहा था। देश भक्त चाचाजी को शक संवत् कुछ ठीक लगा। बेचारा उनके संवत् से जूनियर तो है ही। जो भी हो लेकिन १५५५२१९७२९४९११९ की गणना विश्व पटल पर सर्वथा वर्चस्वी तो है ही।

अहर्गण या कुल दिनों की गणना की सुविधा बनाए रखने के लिए सृष्ट्यादि गणना हमेशा गत वर्षों में दी जाती है। अहर्गणों की जरूरतों का विषय अलग है, उसकी यहां चर्चा करना अनपेक्षित है। परन्तु यहां पर ये जान लेना आवश्यक है कि संकल्प वाचन कभी भी गत वर्ष की भाषा में नहीं होता, इसीलिए आपको वर्तमान वर्ष का संकल्प '**शतमष्टदशतमे**' (११८) नहीं अपितु '**शतमनवदशतमे**' (११९) ही कहना होगा।

अहर्गणना (दिनों की गिनती) की सुविधा के लिए गत संवत १९७२९४९११८ भले ही लिया जाएगा, किन्तु संकल्प पाठ वर्तमान सृष्ट्यादि संवत् से ही किया जाएगा, अन्यथा वह पाठ शुद्ध नहीं कहा जा सकेगा। इसी प्रकार संवत् , अयन, ऋतु, मास, पक्ष तिथ्यादि सभी वर्तमान में जो संकल्प उपलब्ध होते हैं वही लिए जाते हैं। वर्तमान की काल गणना (अर्थात् काल क्रम से मैं कहां पर हूं), भौगोलिक गणना (अर्थात् ब्रह्माण्ड में मैं कहा पर हूं) और योनि श्रृंखला (अर्थात् मनुष्य योनि से अपने गोत्र क्रम से मैं कहां पर हूं) के अनुसार किया जाता है। इस मामले में हमारे पुरोहित जागृत और स्पष्ट हो जावें, यही अभीष्ट है।

अस्तु ''**ब्रह्मणो द्वितीये पराद्धे**'' जो कि प्रचलन में भी है कहना चाहिए। चाहे तो उसके साथ द्वितीये प्रहारोत्तरार्द्धे भी कह सकते हैं और नहीं भी, क्योंकि ''**वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे.... द्वितीये प्रहारोत्तरार्द्धे** की ही स्थानापन्न गणना है।

हमारे कई विद्वान अपने वक्तव्यों में कथन करते हैं कि सृष्टि को बने हुए १९६.... वर्ष हो चुके हैं। बने हुए अर्थात् ये 'आदि' का नहीं किसी मध्यांतर का समय है किन्तु कल्पादि वास्तव में सृष्ट्यादि हैं। वह विकासक्रम के अन्तर्गत का मध्यान्तर समय नहीं है।

स्पष्ट तथ्य ये है कि भरत खण्डे के बाद भारतवर्षे नहीं अपितु भारतवर्षे के बाद भरतखण्डे और तब 'आर्यावर्त्ते' कहा जाना चाहिए। वास्तव में '**राजा भरत का भारत**' जिस भारतवर्ष का एक अवशिष्ट खण्ड है। उसका प्राचीनतम नाम '**अजनाभवर्ष या हिमवर्ष**' था। ऐसा ही प्राचीनतम काल के संकल्प पाठ में मिलता है। इन नामों का तीसरा रूपांतरण **भरतवर्ष** हुआ। महर्षि व्यास ने **भारतवर्ष** के लिए **भारताजिर** शब्द का भी प्रयोग किया है, अस्तु महाराज भरत के नाम से जाना जाने वाला भू-भाग '**भरतखण्ड**' है और आर्यावर्त उस '**भरतखण्ड**' का ही भू-भाग है। मूल नाम '**भारतवर्ष**' महाराज भरत के नहीं अपितु अति प्राचीनतम काल में हुए तीर्थंकर ऋषभदेव जी का '**अजनाभवर्ष**' ही उनके जेष्ठ पुत्र भरत के नाम से '**भारतवर्ष**' हुआ।

विष्णु महापुराण के अनुसार-

ऋषभाद्भरतोः जज्ञे ज्येष्ठः पुत्रशतस्य सः।
ततश्च भारतं वर्षमेतल्लोकेषु गीयते।
भरताय यतः पित्रा दत्तं प्रतिष्ठिता वनम् ।

इस सन्दर्भ की अन्तिम बात ये है कि संकल्प पाठ में गोत्रोच्चार भी आवश्यक है। इस अर्थ से संकल्प, यजमानों का अपना-अपना ही होता है। हम गोत्रोच्चार को हटाकर केवल '**अस्माभिरत्र**' करके वाचन करें तो कदाचित अपूर्ण ही होगा। पूरे भारत वर्ष में एक ही प्रकार से संकल्प पाठ होवे तो मुझसे अधिक इस बात की खुशी, भला किसको हो सकती है?

इस सारी दृष्टि से उपरोक्त संकल्प पाठ को सुधारने की अति आवश्यकता है। जो कि इस प्रकार से होगा-

(आज प्रातः (कल्पित) स्थान पाणिनि कन्या गुरुकुल महाविद्यालय प्रांगण, वाराणसी, नाम, सुरेश कुमार, गोत्र भारद्वाज के संदर्भ में)-

ओ३म् तत्सत् श्री ब्रह्मणो द्वितीये पराद्धे वैस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे एकोवृन्दः सप्तनवति कोट्यः एकोन त्रिंशत् लक्षाणि एकोन पञ्चाशत् सहस्त्राणि शत् नवदशतमे सृष्ट्यब्दे चतुस्सप्त्युत्तर द्विसहस्त्रतमे वैक्रमाब्दे विरोधकृत संवत्सरे हेमन्त ऋतौ मासानां मासोत्तमे सहस्य मासान्तर्गते मार्गशीर्ष कृष्ण नवम्यां तिथौ उत्तराफाल्गुन नक्षत्रे शिव मुहुर्ते मकर लग्नोदये- ** भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारत वर्षे भरत खण्डे आर्यावर्तान्तर्गते पुण्य भूमौ उत्तरप्रदेशैकदेशे वाराणस्यां स्थिते पाणिनि कन्या गुरुकुल महाविद्यालय प्रांगणे भारद्वाज गोत्रोत्पन्नोऽहं सुरेश कुमारः भगवत्कृपा प्राप्त्यर्थं देव यज्ञं करिष्ये।

****यहां पर स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के सुझाव पर मैंने अपने पञ्चाङ्ग में कुछ ऋषियों (कृपया वैदिक पञ्चाङ्ग' श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम का मुख पृष्ठ देखें) का नामोल्लेख भी किया है। कोई इन्हें स्वेच्छानुसार ले सकता है।** मुख्य यजमान बायीं हथेली पर रखी अपनी सीधी हथेली में जल चावल लेकर संकल्प पाठ करें और संकल्प पूर्ति पर वह जल चावल अपने आसन के सामने छोड़ दें। इस प्रकार के संकल्प पाठ से निश्चित ही हमारे पुरोहितों का सम्मान बढ़ेगा और आयोजन में और भी श्रद्धामय वातावरण बनेगा। **यदि प्रातः के वक्त का नक्षत्र अथवा तिथि आयोजन के वक्त पर बदल जाए तो 'तदुपरि वर्तमाने..... नक्षत्रे/ तिथौ'' कहकर वर्तमान नक्षत्र और तिथि का पाठ होगा।**

आशा है मेरे इस प्रयास का अन्य भी सभी माननीय विद्वज्जन भली-भाँति संज्ञान लेंगे। स्वस्ति ओं शम् । ●

सृष्टि का नवसंवत्सर प्राणी मात्र के लिए मंगलकारी हो

- नानालाल शर्मा -
महर्षि आर्य समाज, देहरी,
जिला-मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष- ९००९८१६८११

महर्षि आर्य समाज देहरी (मन्दसौर)- श्री हीरालालजी आर्य सपत्निक शान्तिदेवी आर्या वैदिक भजनोपदेशक की प्रेरणा से प्रेरित व श्री कमलेश कुमार कमलेश, अग्निहोत्री अहमदाबाद के वैदिक मार्मिक प्रवचन से संकल्पित स्व. श्रीमती राजकुंवर शर्मा (राजमाता) ने अपने स्वगृहे आर्य समाज की स्थापना कर विगत १६ वर्षों से दैनिक वैदिक यज्ञ, संध्या प्रवचन व वेद प्रचार, सदस्यों के सहयोग से विभिन्न वैदिक कार्य, रोग निदान शिविर, वृद्धजन सम्मान समारोह व नववर्ष पर ओ३म् ध्वज वितरण आदि कार्य सम्पन्न होते आ रहे हैं, आगे परम पिता की इच्छा।

सृष्टि का नवसंवत्सर व विक्रम संवत् का नववर्ष २०७५ चैत्र (मधु) मास शुक्ल प्रतिपदा रविवार पर आगमन हो रहा है, उसके लिए बधाई व स्वागत में परमात्मा से प्राणीमात्र के लिए मंगलकामना करते हैं। ऐसे पुनीत अवसर पर पूर्व संध्या को घरों में दीप प्रज्वलित करें व प्रातः में सृष्टि संवत्वसर १९७,२९,४९,१२० वर्ष, कलिकाल का सम्वत् ५१२०, विक्रम सम्वत् २०७५ का स्वागत बड़ी आत्मीयता, श्रद्धा, हर्ष, गौरव सौहार्द्रपूर्ण मनोभाव से चैत्र (मधु) मास, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा, रविवार को तदनुसार १८ मार्च २०१८ को आग्रह व अपेक्षा के साथ स्थानीय स्तर पर धार्मिक, सार्वजनिक, आर्य समाज, चौपाल या अपने घरों में वैदिक 'ओ३म्' ध्वज, ध्वजगान के साथ फहराएँ, वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना व शान्ति पाठ करें, दरवाजों पर आम्रपत्तों का वन्दनवार, स्वास्तिक चिन्ह लगाएं, घरों में देशी गाय का गोबर लीप कर वैदिक यज्ञ करें, बड़े-बूढ़ों से आशीर्वाद प्राप्त कर अनुजों के लिए मंगलकामना करते हुए विशेषकर कन्याओं के चरण छूकर उन्हें कुछ दक्षिणा भेंटकर नीम की पत्तियां व मिश्री की प्रसाद वितरण करें। ऐसे सृष्टि संवत्सर की कुछ विशेषताएं निम्नानुसार है-

सृष्टि सम्वत् को विभिन्न धर्मों से कालगणना करने पर सबसे प्राचीन माना गया है। ज्योतिष शास्त्रों के प्राचीन ग्रन्थों के हेमाद्रि व वाल्मीकि रामायण आदि के प्रमाण व श्रुतियों के आधार पर मधु (चैत्र) माह, शुक्ल प्रतिपदा मैथुनी सृष्टि का प्रथम दिन है। वेदादि शास्त्रों में सम्पूर्ण सृष्टि एक हजार चतुर्युगी

(१) सतयुग -४×४,३२,०००- १७२८,००० वर्ष
(२) त्रेतायुग- ३×४,३२,०००- १२,९६,००० वर्ष
(३) द्वापर- २×४,३२,०००- ०८,६४,००० वर्ष
(४) कलियुग- १×४,३२,०००- ०४,३२,००० वर्ष।

इस प्रकार एक हजार चतुर्युगी के मान से ४,३२,००,००,००० (४ अरब ३२ करोड़) वर्ष होते हैं। जड़ सृष्टि- ६×४३,२०,०००=२५,९२,००,००० वर्ष + ९९४- ४३,२०,०००=४,२९,४०,८०,००० इस प्रकार कुल योग ४,३२,००,००,००० (४ अरब ३२ करोड़)यानी एक चतुर्युगी वर्ष। मानव सृष्टि में १४ मन्वन्तर होते हैं। (१) स्वायम्भुव, (२) स्वरोचिस, (३) औत्तामी, (४) तामस, (५) रैवत, (६) चाक्षुस, (७) वैवस्वत (८) दक्ष सावर्णि, (९) ब्रह्म सावर्णि, (१०) धर्म सावर्णि, (११) मेरू सावर्णि, (१२) रूद्र सावर्णि, (१३) रुचि और (१४) भौम। वर्तमान में सातवें मन्वन्तर वैवस्वत का २७वां चतुर्युग समाप्त होकर २८वें चतुर्युगी के सत+त्रेता+द्वापर, समाप्त होकर कलियुग का ५११९ वर्ष बीत चुका है। इस प्रकार २८ वें चतुर्युग का शेष काल- ४३,२०,००० वर्ष सत+त्रेता+द्वापर+ कलि का ५११९- ४,२६,८८१ वर्ष शेष हैं।

इतना विस्तृत, स्वयंभू प्रमाणित, सनातन, सम्वत् की अगवानी चर-अचर, जड़-चेतन कैसे कर रहे हैं। वनस्पति में नवीनता, मौसम, सम शीतोष्ण, मधु (चैत्र) मास, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा, चित्रा नक्षत्र, कोयल की कूक, पशुओं के नये बाल उग आना, सांप की केंचुली बदलना, ऋतुं में बसंत, रबी की फसल घरों में आना व खरीब की फसलों के लिए खेत तैयार करना, गुड़ी पड़वा, वासन्तीय सम्वत् घट स्थापना चैत्री नवरात्रि, शक्ति की उपासना, मन्त्र व सिद्धियों के लिए साधना, व्रत-उपासना, शिक्षा सत्र व शासकीय लेखा-जोखा, प्रारम्भ, कई महापुरुषों का जन्मदिन निर्वाण दिवस, शौर्य दिवस, ऐतिहासिक तिथि, राज्याभिषेक, लेखा-जोखा प्रारम्भ, कई महापुरुषों का जन्मदिन, निर्वाण दिवस, शौर्य दिवस, ऐतिहासिक तिथि, आर्य समाज की स्थापना दिवस, नवनिर्माण में शुभ मुहुर्त आदि कई विशेषताएं भरी पड़ी हैं। ऐसे सनातन की तुलना में अर्वाचीन कालगणना बिलकुल हासिये पर ही है। इन अर्वाचीन में ऐसी एक भी विशेषता नहीं है।

अतः विश्व के सभी आर्य (श्रेष्ठ) जनों को सनातन सम्वत्सर की ही अगवानी में उद्यत रहना चाहिए। सनातन धर्म व वैदिक संस्कृति को अपनाते हुए आने वाली पीढ़ियों को धरोहर के रूप में सौंपते जाएं। हमें अंधानुकरण व पाश्चात्य संस्कृति से बचना चाहिए जैसे फ्रांस के राजा चार्ल्स दशम ने १५६४ ई. में एक राजाज्ञा घोषित कर एक अप्रैल को नववर्ष न मानते हुए एक जनवरी को ही नववर्ष मनाया जाए, प्रजावर्ग में अधिकांश ने राजाज्ञा का पालन कर एक जनवरी को नववर्ष के रूप में मनाया पर कुछ लोगों ने विरोध कर एक अप्रैल को ही नववर्ष मनाया। ऐसे लोगों को मूर्ख (एप्रिल फूल) की संज्ञा दी जाने लगी। भारत की अनपढ़, भोली व विवेक रहित जनता इतना समझकर एक जनवरी पर काफी धन, समय, स्वास्थ्य व श्रम का दुरुपयोग करने लगी है। परमात्मा उन्हें सद्बुद्धि दे। ●

महर्षि दयानन्द जयन्ती पर प्रस्तुति

❍ ईसवी सन के हिसाब से आपकी जयन्ती २४ फरवरी को थी।

❍ आपने १८७५ में मुम्बई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना की। महाराष्ट्र में आर्य समाज का कार्य और प्रभाव कम ही है।

❍ आपकी देश को स्वतन्त्र देखने की प्रबल इच्छा थी। यदि आपको १७ बार जहर नहीं दिया गया होता तो आपकी आयु कई सौ वर्ष की होती।

❍ आपने राजनीतिक क्षेत्र में राजार्य सभा के नाम से कार्य किया होता।

❍ आपको राष्ट्रपिता की उपाधि दी जानी चाहिए, क्योंकि स्वतन्त्रता का आह्वान सबसे पहले आपने ही किया था।

❍ सत्रहवीं शताब्दी में केवल दो शुद्धियां छत्रपति शिवाजी ने की थी, लेकिन आपने शुद्धि का महत्व जाना था और बीसवीं और इक्सीवीं शताब्दी में जो शुद्धियां हुई हैं और अब हो रही हैं उसका श्रेय आपको ही है।

❍ आपकी ऊंचाई ७ फुट और वजन २४० किलो था। आप अपना स्मारक नहीं चाहते थे, किन्तु अजमेर में स्मारक बन रहा है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस- ८ मार्च

❍ महिलाओं को आरक्षण अधिकतम १० प्रतिशत मिलना चाहिए।

❍ डिग्री कॉलेजों-विश्व विद्यालयों में सह शिक्षा नहीं होनी चाहिए।

❍ बलात्कार-गैंगरेप-यौन उत्पीड़न-दहेज सम्बन्धी न्यायालय में ५ जज तथा सर्वोच्च न्यायालय में ५ जज होने चाहिए, ताकि न्याय जल्दी मिल सके।

❍ कन्या उत्पन्न होने पर जो नाखुश होते हैं- किसी को दे देते हैं कूड़े में फेंक देते हैं- पत्नी को मारते हैं- पत्नी को कोस कर निकाल देते हैं- अतिरिक्त दहेज की मांग करते हैं- तलाक दे देते हैं। आत्महत्या कर लेते हैं आदि। ऐसी सोच रखने वालों की कटु निन्दा व भर्त्सना की जाती है। ईश्वर इन्हें सद्बुद्धि दे।

- इन्द्रदेव गुलाटी -
संस्थापक-सावरकरवाद प्रचार सभा
बुलन्दशहर, (उ.प्र.)
चलभाष- ०८९५८७७८४४३

भागवत कथाकार- अन्ध विश्वास से भरे झूठे संदेश देना बन्द करें

१. गंगा स्नान से पाप कट जाएंगे।

तर्क- स्नान से शरीर का मैल व विकार कम हो सकता है मन का मैल व आत्मा की गर्द दूर नहीं हो सकती। मन पर रोक जरूरी है।

२. एक बार भागवत कथा सुन लो सभी पाप कट जाएंगे।

तर्क- ऐसा झूठा प्रलोभन देना धोखा है व वक्ता का स्वार्थभरा है। गुमराह करने वाला वक्तव्य। ऐसा सस्ता नुस्खा भक्तों को पाप करने को प्रेरित करता है। पाप करो और कथा सुन लो। हो गया पाप का निदान।

३. गुरु को साध लो वह मोक्ष करा देगा। ईश्वर तक आने की जरूरत नहीं।

तर्क- आसाराम, नारायण स्वामी, रामपाल, रामरहिम, वीरेन्द्र बाबा और उनके तथाकथित गुरुओं के चेलों का क्या होगा जो उन पर अंध श्रद्धा रखकर समर्पित है?

४. एक बार सत्संग सुन लो हजार यज्ञ का लाभ मिलेगा।

तर्क- आज के भारी प्रदूषण में यज्ञ का कितना महत्व है। पर्यावरण रक्षकों से पूछो। हजार सत्संग एक यज्ञ बराबर भी नहीं।

५. कृष्ण ने माखन चुराया, मटकियां फोड़ी, रासलीला की, महिलाओं के वस्त्र चुराए आदि बातें बता कर श्रोताओं को क्या संदेश देना चाहते हैं?

तर्क- कृष्ण योगिराज थे। भोगिराज नहीं, केवल यादव नहीं सच्चे आर्य थे। संध्या-हवन यज्ञ करते, कराते थे। नीति निपुण परम मित्र और उचित संदेश सलाहाकार थे। कथाकार भागवत के बजाय गीता उपदेश सुनावे तो उत्तम होगा।

अच्छे संस्कार, दान, परोपकार व चरित्र निर्माण के पारदर्शी संदेश देने वाले परमार्थी कथाकारों से कोई शिकायत नहीं है वे समाज का सच्चा मार्गदर्शन करें।

- मोहनलाल दशोरा 'आर्य' -
नारायणगढ़, जिला-मन्दसौर चलभाष- ०९५७५७९८४१२

तीसरी बकरी

चंद शरारती छोकरों ने जंगल में चरती ३ बकरियों को घेर घार कर अपने स्कूल में लाकर छोड़ दिया। छोड़ने से पहले उन्होंने उन पर १,२ और ४ नम्बर डाल दिए। दूसरे दिन स्कूल खुलने पर हंगामा हो गया। बकरियों को हकाल कर बाहर किया जाने लगा। १,२ और ४ नम्बर की बकरियां तो निकल गईं पर ३ नम्बर की बकरी नहीं मिली तो नहीं मिली।

क्योंकि ऐसी कोई बकरी थी ही नहीं। एक और उदाहरण भी याद आता है- एक अंधा एक अंधेरे कमरे में उस काली बिल्ली को ढूंढ रहा है जो वहां है ही नहीं। शायद यही हालत हमारी भी है कि हम इस संसार में रहते हुए उस सुख की तलाश कर रहे हैं जिसका वास्तविक जीवन में सम्भवत: अस्तित्व है ही नहीं। क्यों नहीं हम अपने वर्तमान से संतुष्ट होकर अपना जीवन सुखों से भर लेते?

- ओमप्रकाश बजाज, कालिंदी कुंज,
पिपलिया हाना, इंदौर, चलभाष- ९८२६४-९६९७५

प्रेरणास्पद आर्य व्यक्तित्व

प्रेरणास्पद आर्य व्यक्तित्व के धनी हरिनिवास जी गुप्त सिंहस्थ कुंभ मेले के वैदिक धर्म शिविर में वैदिक संसार द्वारा लगाए गए साहित्य के स्टॉल से सम्पर्क में आए। तब आप वैदिक संसार के त्रैवार्षिक सदस्य बने। वैदिक संसार ने आपको इतना प्रभावित किया कि आप अपने तीनों सुपुत्रों को आजीवन सदस्य बनाया तथा आपने अपने पांच अन्य परिचितों को वैदिक संसार की वार्षिक सदस्यता भी भेंट की है। इस प्रकार आपने वैदिक संसार को आर्थिक सहयोग कर वैदिक धर्मप्रचार का मार्ग प्रशस्त किया है। गुप्त जी के स्वस्थ, सुख शान्तिमय जीवन की कामना करते हैं। प्रस्तुत है आपका संक्षिप्त अनुकरणीय जीवन परिचय-

प्रमुख व्यवसायी हरिनिवास जी गुप्त का जन्म ग्राम सिरसौद (करैरा) जिला-शिवपुरी म.प्र. में दिनांक ५ सितम्बर १९५२ को हुआ। आपके पिता स्व. श्री कुंजलाल आर्य वानप्रस्थ तथा माताजी स्व. श्रीमती गोमतीदेवी दोनों पर ही महर्षि दयानन्द की विचारधारा का बहुत प्रभाव था। जीवन के अन्तिम क्षणों तक तन-मन तथा धन से प्रचार करते रहे। क्षेत्र में एक मात्र आर्य समाजी थे। प्रसिद्ध भजनोपदेशक को बुला-बुला कर क्षेत्र में प्रचार-प्रसार करते रहे। यही संस्कार उनके तीनों पुत्रों पर पड़े। गुप्त जी के बड़े भाई श्री बालकृष्ण जी गुप्त, निवासी ग्वालियर (आजीवन सदस्य वैदिक संसार) अपर कलेक्टर के पद से सेवानिवृत्त हे तथा छोटे भाई श्री अशोक कुमार गुप्त विकास अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। धर्म पत्नी श्रीमती पुष्पादेवी सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेती हैं। सभी को अच्छी शिक्षा मिले इसके लिए हमेशा प्रयासरत रहती है। स्वयं तथा पत्नी दोनों करीब ७ वर्ष से महिला तथा पुरुष वर्ग को नि:शुल्क योग कक्षा लगाती हैं। वर्तमान में आर्य समाज सिरसौद के प्रधान पद पर हैं। आपके तीन पुत्र बड़े श्री वेद प्रकाश जी गुप्त तथा मझले श्री सत्यप्रकाश जी गुप्त (चार्टर्ड एकाउन्टेंट) सी.ए. हैं तथा छोटे पुत्र श्री ज्ञानप्रकाश जी गुप्त प्रमुख दवाई कम्पनी फाइजर में एशिया महाद्वीप के मैनेजर हैं तीनों मुम्बई में निवासरत हैं।

क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर

दिनांक २५ मार्च से १ अप्रैल २०१८

स्थान- वानप्रस्थ आश्रम, आर्यवन रोजड़

आर्य जगत् के सुविख्यात दर्शनों के ज्ञाता स्वामी सत्यपति जी की अध्यक्षता में क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर का आयोजन वर्णित तिथियों में किया जा रहा है। इच्छुक साधक शीघ्र सम्पर्क करें।

सम्पर्क- ९४२७०५९५५० (वाट्स एप)

योग-ध्यान- साधना शिविर

जम्मू-कश्मीर की सुरम्य एवं मनोरम पहाड़ियों में स्थित आनन्दधाम आश्रम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू-कश्मीर में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यस्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य मां सत्यप्रिया यतिजी के सान्निध्य में दिनांक ८ से १५ अप्रैल २०१८ तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि का क्रियात्मक अभ्यास कराया जाएगा। इस अवसर पर वैदिक प्रवचन तथा योगदर्शन एवं उपनिषादि पर भी व्याख्यान होंगे। शिविर में युवा एवं प्रभावशाली वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी, स्वामी नित्यानन्द जी आदि अन्य अनेक विद्वान भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी के ब्रह्मत्व में प्रतिवर्ष की भान्ति सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य स्वामीजी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं, इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है अत: इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं. ०९४१९१०७७८८, ०९४१९७९६९४९ व ०९४१९१९८४५१ पर तुरन्त सम्पर्क करें।

भारतभूषण आनन्द आश्रम प्रधान

वेदों में शिक्षा विज्ञान- गुरुकुल सम्मेलन

दिनांक २४-२५ मार्च २०१८

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से वैदिक मिशन मुम्बई के द्वारा स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती की अध्यक्षता तथा स्वामी आर्यवेश जी दिल्ली तथा स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती के विशेष आतिथ्य में आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई में **'वेदों में शिक्षा विज्ञान'** विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। उपरोक्त संगोष्ठी में आर्ष पाठविधि गुरुकुलों के आचार्य- आचार्याएं तथा प्रतिष्ठित स्नातकों द्वारा गुरुकुलों की वर्तमान समय में उपयोगिता तथा एकरूपता, आर्ष पाठ विधि की महत्ता तथा इसमें उपस्थित बाधाएं, गुरुकुलों के स्थान पर अन्य शिक्षा प्रणाली का प्रचलन आर्य समाज के लिए हितकारी-अहितकारी, अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त आदि विषयों पर गहन चिन्तन प्रस्तुत किया जाएगा।

विद्वानों से अनुरोध है कि विषयान्तर्गत शोधपरक लेख अथवा संक्षिप्त रूपरेखा भेज देवें अथवा साथ लेते आवें, किन्तु आगमन से पूर्व सूचित अवश्य करें।

निवेदक – डॉ. सोमदेव शास्त्री, मो. ९८६९६६८१३०

वैदिक मिशन मुम्बई

वैवाहिक आवश्यकताएं

मेरी अपनी सुपुत्री जिसका जन्म-दिनांक २०-१०-१९९३ को तथा शिक्षा-बी.कॉम., फैशन डिजाईनिंग डिप्लोमा, ए.बी. डब्ल्यू. डी.डी. कम्प्यूटर कोर्स के साथ हिन्दी टाईपिंग में पूर्ण दक्ष, एम.बी.ए. प्रथम वर्ष (अध्ययनरत), कद ५.५, गौर वर्ण, वानप्रस्थ साधक आश्रम- रोजड़ द्वारा आयोजित महिला योग जागृति शिविर - २०१७ की साधिका, संध्या, दैनिक अग्निहोत्र के मन्त्र कंठस्थ है तथा नौकरी करने की इच्छुक नहीं है के विवाह हेतु दुर्गुण-दुर्व्यसन रहित, उच्च कुल, शाकाहारी परिवार के वैदिक धर्म सिद्धान्त निष्ठ, उच्च शिक्षित, रोजगाररत् युवक की आवश्यकता है, विवाह पूर्ण वैदिक पद्धति से, रूढ़ियों एवं भौंडे प्रदर्शन से मुक्त, जन्मना जाति बन्धन से मुक्त, प्रस्ताव आमंत्रित है। इच्छुक अभिभावक सम्पर्क करें।

सुखदेव शर्मा, प्रकाशक-वैदिक संसार
चलभाष- ९४२५०-६९४९१

जांगिड ब्राह्मण कुलोत्पन्न कन्याओं हेतु स्वकुल के सुयोग्य वर की आवश्यकता है। कु. रश्मि सुथार, जन्म दिनांक २९/११/१९९०, जन्म स्थान- छोटी सादड़ी, जिला- प्रतापगढ़ (राज.), शिक्षा- बी.डी.ए. (इन्टरशिप), जी.डी. सी जयपुर, शासन (गौत्र) -बोरदिया तथा आपकी छोटी बहन कु. भानुप्रिया सुथार, जन्म दिनांक ३/६/१९९६, शिक्षा- बी.फार्मा हेतु सुयोग्य वर के अभिभावक कन्याओं के पिता से सम्पर्क करें।

श्री मनोहरलाल सुथार
चलभाष -८४६०९३६६८२, ९४१३०४५८३३

आर्य जगत् के सुविख्यात अन्तर्राष्ट्रीय महोपदेशक, मूर्धन्य विद्वान डॉ. सोमदेव जी शास्त्री निवासी मुम्बई, मूल निवासी- नैनोरा, पिपलिया मण्डी, जिला- मन्दसौर (म.प्र.) के छोटे सुपुत्र अनिरुद्ध जिसकी आयु-२६ वर्ष कद-५.७ इंच, गौरवर्णीय, शिक्षा- स्नातक (ग्रेजुएट), वर्तमान में मुम्बई में निजी कम्पनी में कार्यरत है के विवाह हेतु प्रस्ताव आमंत्रित करते हैं। गुरुकुल की स्नातिका अथवा वैदिक सिद्धान्ती आर्य परिवार की कन्या के अभिभावकगण सम्पर्क करें।

डॉ. सोमदेव शास्त्री, चलभाष - ९८६९६६८१३०

नाम के आगे उपजाति नहीं! अब पुरुषार्थी के रूप में जाने जाएंगे

जातिवाद का मच्छेल लहू लील रहा है।
धर्मवाद का जहर रगों में बढ़ रहा है।।
भौतिकता की लौ में भ्रष्टाचार पल रहा है।
संकीर्णता की लू में हिन्दुस्तान जल रहा है।।

हमारी वैदिक संस्कृति के अनुयायी श्रीरामचन्द्र जी के नाम के आगे उप जाति (रघुवंशी) नहीं वरन् कर्मानुसार 'मर्यादा पुरुषोत्तम' से विख्यात है। श्रीकृष्ण के नाम के आगे (यादव) उप जाति नहीं, योगिराज से कीर्तिमान हैं। ऐसे ही संसार के एवं आर्य समाज के महापुरुष-महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द, आनन्द स्वामी, आदि के नामों में उपजाति का उल्लेख नहीं है कर्मानुसार नामों से कीर्ति पाई है। प्राय: देखा जाता है कि बालक के जन्म के बाद माता-पिता, रिश्तेदारों द्वारा बहुत सोच-विचार के बाद नाम रखते हैं। यह नहीं सोचते कि संस्कारों के अभाव में नाम को लज्जित तो नहीं करेंगे? जैसे निमाड़ी दो पंक्तियां-

महेश, गणेश, राम, गोपाल, नाव, राख, औलदनका ।
पे खौब दारू ने सिगरेट, खाय बोकड़ा ने कुकड़ा।।

प्रेरक कथानक अनुसार- माँ के द्वारा अपने बेटे का नाम **'लालबहादुर'** रखा और बेटे से अपेक्षा की कि मेरा लाल (बहादुर) बने। बेटे लाल बहादुर ने अपनी माँ के विश्वास पर चार चाँद लगा दिया। पिताजी का बचपन में निधन हो गया। अस्तु मौसा रघुनाथजी ने लाल बहादुर को बनारस की एक स्कूल में भर्ती कराया। प्रधान अध्यापक के पास जाकर बोला-महोदय! कृपा करके मेरे नाम के बाद वर्मा को हटा दीजिए। प्र.अ. ने चकित होकर कहा- लेकिन क्यों बेटा? लाल बहादुर ने कहा- महोदय! मैं अपने नाम के आगे उपजाति प्रदर्शित नहीं करना चाहता हूं। प्र.अ. ने प्रसन्न होकर रजिस्टर से वर्मा हटा दिया। जब मौसाजी को सूचना मिलने पर लाल बहादुर के ऐसे विचारों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। आगे चलकर लाल बहादुर ने **'शास्त्री'** उपाधि प्राप्त कर शत-प्रतिशत उपाधि को सार्थक किया।

वैदिक संसार में श्री उम्मेदसिंहजी विशारद् का लेख 'उपजाति' से संबंधित पढ़कर मन मयूर प्रफुल्लित हुआ। चलभाष द्वारा विशारद जी की भूरि-भूरि प्रशंसा कर धन्यवाद ज्ञापित किया। विशारद जी का यह प्रयास निश्चित ही सकारात्मक और रचनात्मकता की ओर अग्रसर होगा। मैंने गणतन्त्र दिवस को पूर्व उपजाति वर्मा हटाने का मन बना लिया। मेरे मित्र, साथियों ने कर्मानुसार अपने-अपने नाम, सुझाव प्रस्तुत किए। श्री बालकृष्णजी आर्य ने सभी दिए नामों में से पुरुषार्थी अधिक उपयुक्त बताया और सर्वानुमति से मेरी अनुमति पर रजिस्टर, समाचार पत्रों में डोंगरलाल पुरुषार्थी से जाने जाएंगे।

प्राय: अतीत के वक्तव्य में कविता के माध्यम यह मुक्तक-

भूत से नाता अटूट हमारा। आज ही सब कुछ है हमारा।।
अगर जीवन में है पुरुषार्थ।। सुन्दर सलोना होगा भविष्य हमारा।।

गुरुकुल नवप्रभात आश्रम वैदिक विद्यापीठ का सोलहवां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

एक अविस्मरणीय रोमांचकारी यात्रा- हमने देखा गुरुकुल नव प्रभात आश्रम

गत २-३ वर्षों से उड़ीसा प्रान्त में स्थित गुरुकुल आमसेना तथा गुरुकुल नव प्रभात आश्रम के वार्षिक उत्सवों में भाग लेने की प्रबल उत्कण्ठा थी, किन्तु आरक्षण करवा लेने तथा प्रबल मन:स्थिति बना लेने के उपरान्त भी कार्यक्रम निरस्त होते रहे। इस वर्ष भी आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद के वार्षिकोत्सव में होते हुए गुरुकुल आमसेना के स्वर्ण जयन्ति समारोह में वेद प्रचार वाहन से पहुंचने तथा एक माह पश्चात् गुरुकुल नवप्रभात आश्रम के वार्षिकोत्सव में भी उपस्थित होने का कार्यक्रम बना किन्तु अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली के निर्वाचन की व्यस्तता के कारण गुरुकुल होशंगाबाद के आयोजन में नहीं जा सका तथा दिसम्बर मास की पत्रिका का कार्य पूर्ण होने में विलम्ब हो जाने के कारण गुरुकुल आमसेना के आयोजन में भी प्रबल उत्कण्ठा होते हुए भी जाना सम्भव नहीं हुआ। अत: वेद प्रचार वाहन से जाने का विचार त्याग कर लौह पथ गामिनी से दि. २६ जनवरी को गुरुकुल नव प्रभात आश्रम जाने का आरक्षण करवाया।

उड़िसा प्रान्त में वैदिक धर्म गतिविधियों को जानने विशेष कर गुरुकुल आमसेना, गुरुकुल हरिपुर तथा गुरुकुल नवप्रभात आश्रम को देखने की प्रबल उत्कण्ठा तथा श्री दयानन्द जी शर्मा, निवासी मोदी नगर (दक्षिण अफ्रीका वाले) के विशेष आग्रह पर दिनांक २६ जनवरी को धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा तथा वैदिक साहित्य साथ लेकर समता एक्सप्रेस जो की अपने निर्धारित समय से तीन घण्टा विलम्ब से चल रही थी के द्वारा दिनांक २७ को प्रात: १२ बजकर १० मिनट पर खरियार रोड स्टेशन के प्लेट फार्म क्रमांक २ पर उतरा। गुरुकुल नवप्रभात आश्रम से भेजी गई सेन्ट्रो कार के वाहन चालक श्री विमल जी तथा कक्षा नवमी के छात्र (ब्रह्मचारी) गौरव आर्य (मूल निवासी फर्रूखाबाद उ.प्र.) से भेंट हुई आप दोनों ने आगे बढ़कर नमस्ते किया तथा सामान उठवाकर गाड़ी में रखवाया और हम लगभग स्टेशन से ८० किलोमीटर दूर गुरुकुल की ओर चल पड़े।

यात्रा के दौरान स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती से चलभाष पर सम्पर्क करने पर ज्ञात हुआ था कि गुरुकुल हरिपुर का वार्षिक उत्सव भी अष्टम चतुर्वेद पारायण यज्ञ के द्वारा आयोजित हो रहा है तथा आप उसमें पधारे हुए हैं।

श्री विमल जी से चर्चा करने पर ज्ञात हुआ कि जिस मार्ग से हम जा रहे हैं उस मुख्य मार्ग से लगभग १ किलोमीटर अन्दर की ओर गुरुकुल हरिपुर है। अत: विचार बना कि स्वामी शान्तानन्द जी तथा अन्य आर्यजनों के दर्शन कर लेंगे तथा गुरुकुल हरिपुर भी देख लेवें। गुरुकुल हरिपुर में पहुंचने पर वहां आनन्द पुरुषार्थी जी का प्रवचन हो रहा था। स्वामी शान्तानन्द जी मंचस्थ थे अत: उनसे मंच पर पहुंच कर नमस्ते की। मंच पर उपस्थित वैदिक संसार के लेखक खुशहालचन्द्र जी आर्य कोलकाता तथा अन्य संन्यासी महानुभावों से नमस्ते की तथा उन्हें वैदिक संसार की प्रति भेंट कर वहां से प्रस्थान किया।

गुरुकुल नव प्रभात आश्रम १३ एकड़ में विस्तृत भू-भाग पर वृक्षों से आच्छादित रमणीय सुन्दर वातावरण में बरगड़ मुख्य मार्ग से लगभग एक किलोमीटर अन्दर की ओर स्थित है। गुरुकुल में प्रवेश करते ही सर्वप्रथम गगनचुम्बी विशाल यज्ञ शाला देखकर मन हर्ष से प्रफुल्लित हो गया।

कार्यालय के समीप पहुंचने पर गुरुकुल व्यवस्थापक आचार्य भगवान देव जी तथा श्री दयानन्द जी शर्मा ने आत्मीय अभिनन्दन स्वरूप नमस्ते की, वहां उपस्थित ब्रह्मचारियों ने भी चरण स्पर्श कर गुरुकुल के अनुशासन और संस्कारों का परिचय दिया।

स्नानादि से निवृत्त हो, दैनिक अग्निहोत्र सम्पन्न किया। सायंकाल ५ बजे स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती के सानिध्य में तथा आचार्य ब्रहस्पति जी के ब्रह्मत्व एवं दयानन्द जी शर्मा सपत्निक श्रीमती सरला शर्मा के साथ मुख्य यजमान व आपके देहरादून वाले बहनोई श्री जयप्रकाश जी शर्मा, बहन श्रीमती निर्मला जी शर्मा तथा मेरठ वाली बहन श्रीमती विमला शर्मा के यजमानत्व में दिनांक ३ जनवरी से ३१ जनवरी तक हो रहे चतुर्वेद पारायण महायज्ञ में यजुर्वेद के १५वें अध्याय से ४० वें अध्याय तक दिनांक २७ से ३० जनवरी तक आहूतियां प्रदान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

यज्ञ के समय उपस्थित स्वामी विवेकानन्द जी, यज्ञब्रह्मा ब्रहस्पति जी, पावमानी पत्रिका के सम्पादक तथा गुरुकुल कांगडी के संस्कृत विभाग के प्रमुख डॉ. सोमदेव शतांशु जी, आचार्य शिवशंकर जी रायपुर के मुखारविन्द से वेद मन्त्रों की व्याख्या व प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

यज्ञ में त्रिनीडाड (वेस्टइंडिज) के निवासी स्वामी मुनिश्वरानन्द जी जिनका जन्म वेस्टइंडीज में हुआ था। जिनके माता-पिता भारतीय मूल के थे जिनकी वैदिक धर्म के प्रति अगाथ श्रद्धा है तथा आप गुरुकुल नवप्रभात के संस्थापक सदस्यों में से हैं। जो करीब डेढ़ माह से आश्रम में है के दर्शन का सुअवसर प्राप्त हुआ। सह यजमान के रूप में स्वामी मुनिश्वरानन्द जी की सुपुत्री श्रीमती सीता दवे निवासी वेस्टइंडीज ने भी यथा समय उपस्थित होकर यज्ञ में अपनी आहूतियां प्रदान की, आपको तथा आपके पिता को हिन्दी भाषा का अल्प ज्ञान है, सीखने का प्रयास कर रहे हैं। दिनांक ३० को गुरुकुल का वार्षिक उत्सव विधिवत रूप से कलश यात्रा

के साथ प्रारम्भ हुआ। आयोजन में आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान स्वामी मुक्तानन्द जी अजमेर, डॉ. सोमदेव जी शास्त्री मुम्बई, डॉ. प्रशस्यमित्र जी शास्त्री रायबरेली, आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी होशंगाबाद, आचार्य जयेन्द्र जी -नोएडा, आचार्य ज्ञानेद्र जी, स्वामी परमानन्द जी, आचार्य भारत कुमार जी शास्त्री सुन्दरगढ़, श्री वाचस्पति जी मिश्र (उ.प्र.), स्वामी संविदानन्द जी, आचार्य संजीव कुमार जी भिलाई, आचार्य प्रेमप्रकाश जी शास्त्री, महासमुन्द, आचार्य हिमांशु शेखर जी शास्त्री बरगढ़, आचार्य कोमल जी कोसरंगी गुरुकुल (महासमुंद), आचार्य पुरन्दर जी शास्त्री, गौड़ पाली, आचार्य धीरेन्द्र जी दरिगाँ, आचार्य सुरेश्वरानन्दजी, श्री इन्द्रजीत जी त्यागी, भोपाल, श्री विनोद जी जायसवाल- रायपुर, श्री वी.के. दुबे जी कोलकाता सहित अनेक गणमान्य महानुभावों की गरिमामयी उपस्थिति ने आयोजन को गरिमा प्रदान की।

कलशयात्रा में वाद्य यन्त्रों के माध्यम से झूमते-गाते भक्तजनों का उल्लास देखते ही बनता था। कलश यात्रा पश्चात् ध्वजारोहण स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती द्वारा किया गया।

ध्वजारोहण पश्चात् १०१ कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ पश्चात् श्री दयानन्द जी शर्मा (जांगिड कुलगौरव) मुख्य यजमान द्वारा लगभग २५ लाख के व्यय से निर्मित विशाल भोजनशाला का उद्घाटन स्वामी विवेकानन्द सरस्वती के कर कमलों द्वारा आर्य महानुभावों की उपस्थिति में किया गया। इसके पश्चात् नव ब्रह्मचारियों का उपनयन तथा वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ।

डॉ. प्रशस्यमित्र जी की अध्यक्षता में प्रात:कालीन भजन-प्रवचन का सत्र सम्पन्न हुआ। भोजन पश्चात् स्वामी सर्वेश्वरान्द जी की अध्यक्षता में भव्य भारत निर्माण सत्र आयोजित किया गया।

रात्रिकालीन सत्र में गुरुकुल में ब्रह्मचारियों द्वारा आकर्षक प्रस्तुतियां दी गई।

दिनांक ३१ जनवरी को प्रात:काल चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। पश्चात् वैदिक शिक्षा सम्मेलन सत्र पर आर्य जगत् के विद्वानों के प्रभावशाली व्याख्यान हुए। एक बालिका द्वारा सम्पूर्ण गीता कंठस्थ होने का परीक्षण डॉ. सोमदेव जी शास्त्री द्वारा परीक्षण किया गया।

दोपहर कालीन सत्र में जैविक कृषि तथा गौ संवर्धन विषय पर सत्र आयोजित हुआ। साथ-साथ आर्य जगत् के विद्वानों तथा पधारे हुए अतिथियों का आत्मिय अभिनन्दन भी किया गया। वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा का सपत्निक मंच पर शाल ओढ़ाकर गरिमामयी अभिनन्दन किया गया।

समापन बेला में पदमपुर विधानसभा के क्षेत्रीय विधायक प्रदीप पुरोहित (भाजपा) का ओजस्वी उद्बोधन हुआ।

डॉ. सुभाषचन्द्र जी नायक के द्वारा आयुर्वेदिक चिकित्सा परामर्श शिविर के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा प्रदान की गई। श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल पदमपुर द्वारा सपत्निक नि:शुल्क दोनों दिवस आयुर्वेदिक चाय तथा बिस्किट आदि के द्वारा समस्त उपस्थितों की सेवा की गई। विशिष्ट अतिथियों से लेकर सामान्य जन तक, बच्चों से लेकर बूढ़ों तक, महिलाओं से लेकर पुरुषों तक, धनाढ्य से लेकर निर्धन तक ने चाय-बिस्किट का खूब सेवन किया।

आयोजन का संचालन डॉ. सोमदेव जी शतांशु ने सहयोगियों के साथ किया। आभार आचार्य भगवान देव जी द्वारा व्यक्त किया गया। सम्पूर्ण आयोजन का चार भाषाओं संस्कृत, हिन्दी, उड़िया तथा अंग्रेजी के समिश्रण में सम्पन्न होना अद्भुत था। प्रतिवर्ष माघ शुक्ल चतुर्दशी एवं पूर्णिमा को आयोजित होने वाले वार्षिकोत्सव का स्वरूप किसी मेले का सा था। गुरुकुल परिसर से बाहर २०-२५ दुकानें चाय पकोड़ी, फोटोग्राफर, जनरल स्टोर्स, खिलौने आदि की लगी थी। समीपस्थ ग्रामों के निवासी सपरिवार उल्लासपूर्वक सम्मिलित हुए। सभी के भोजन प्रात:राश व्यवस्था गुरुकुल की ओर से की गई। सुखद- मधुर स्मृतियों को संजोए भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल नवप्रभात आश्रम-एक परिचय

गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला की झाल, मेरठ (उ.प्र.) के श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ आचार्य पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से स्वामी मुनीश्वरानन्द जी बैंगलूर के सहयोग से सन् २००० में भारत के सुदूर उड़ीसा प्रान्त के अभावग्रस्त क्षेत्र में शिक्षा और सेवा को समर्पित नव प्रभात पब्लिक चैरिटेबिल ट्रस्ट की स्थापना की गई।

ट्रस्ट का उद्देश्य भारत के अविकसित क्षेत्र में शिक्षा, सेवा, समृद्धि, वैदिक ज्ञान, विज्ञान तथा संस्कृति सभ्यता का प्रसार करना है।

गतिविधियां

- गुरुकुल नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ का संचालन।
- कन्या गुरुकुल नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ का निर्माण एवं संचालन।
- नि:शुल्क परामर्शीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय का संचालन एवं आयुर्वेदिक जूड़ी-बूटियों का संरक्षण।
- योग शिविरों का आयोजन तथा समय-समय पर नि:शुल्क चिकित्सा शिविरों का संचालन।
- यज्ञों एवं शिविरों के माध्यम से वैदिक संस्कृति का प्रचार।
- प्रदूषण मुक्त कृषि का प्रचार एवं पर्यावरण सुरक्षा।
- गोवंश संवर्द्धन हेतु गोशाला का संचालन।
- नवप्रभात वैदिक विश्वविद्यालय की स्थापना।

गुरुकुल नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ

ट्रस्ट द्वारा सन २००१ से गुरुकुल नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ का संचालन किया जा रहा है। इस समय गुरुकुल में विभिन्न प्रान्तों के ८६ ब्रह्मचारी गुरुकुलीय परम्परानुसार नि:शुल्क शिक्षा लाभ कर रहे हैं। इस अवधि में सीमित संसाधनों में गुरुकुल की शिक्षा तथा राष्ट्रसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि है।

गुरुकुल का वैशिष्ट्य

- प्रदूषण मुक्त सुरम्य प्राकृतिक विशाल परिसर।
- योग्य आचार्यों के सान्निध्य में वेद वेदांगों तथा आधुनिक विषयों का शिक्षण।
- संस्कृत सम्भाषण के साथ छात्रों की अंग्रेजी, हिन्दी व ओड़िया भाषा की अभिज्ञता।
- छात्रों के आध्यात्मिक, बौद्धिक एवं शारीरिक विकास हेतु नित्य यज्ञ एवं योगाभ्यास।
- गुरुकुलीय परम्परानुसार छात्रों के लिए नि:शुल्क भोजन, आवास आदि की व्यवस्था।

उपलब्धियां

- स्नातक कक्षा के विगत सभी चार वर्ग (बैच) के छात्रों ने विश्वविद्यालयों में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। गुरुकुल का यह एक अद्वितीय कीर्तिमान है।
- अनेक छात्र जे.आर.एफ. (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की

छात्रवृत्ति) प्राप्त कर शोधकार्य कर रहे हैं।

■ विगत वर्षों में १०वीं कक्षा के आठ छात्रों ने ओडिशा संस्कृत बोर्ड में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त कर मुख्यमंत्री मेधा सम्मान प्राप्त किया है।

(ओडिशा सरकार ने विगत चार वर्षों से इस पुरस्कार को बंद कर दिया है।)

■ कई स्नातक योग्यतापूर्वक विभिन्न संस्थानों में अध्यापन कार्य करते हुए वैदिक संस्कृति के प्रसार तथा राष्ट्रसेवा में संलग्न हैं।

■ अष्टाध्यायी आदि शास्त्र स्मरण की राज्य व राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिताओं में गुरुकुल के छात्रों ने अनेक बार प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

कन्या गुरुकुल नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ

एक कन्या के शिक्षित होने से पूरा परिवार शिक्षित एवं सुसंस्कृत होता है। ट्रस्ट के कार्य क्षेत्र में बालिकाओं की शिक्षा की दुरावस्था है। एतदर्थ वैदिक संस्कृति सभ्यतायुक्त शिक्षा के प्रसार हेतु दिनांक ०१.०१.२०११ को नवप्रभात कन्या गुरुकुल का शिलान्यास किया या है। तब से अनावासीय गुरुकुल के रूप में विद्यालय चल रहा है, जिसमें इस समय ४२ छात्राएँ अध्ययन कर रही हैं।

शिक्षा सत्र २०१६-१७ में कन्याओं का प्रथम बैच १०वीं कक्षा की परीक्षा में सम्मिलित हुआ। सभी छात्राएं ७० प्रतिशत से अधिक अंक लेकर उत्तीर्ण हुई। अनेक छात्राओं को अष्टाध्यायी, गीता, योगदर्शन आदि कंठस्थ है।

विनम्र अनुरोध तथा सहयोग के प्रकार

ट्रस्ट द्वारा संचालित समस्त सेवा प्रकल्प उदार दानी महानुभावों के सहयोग से ही संचालित होते हैं। इस सेवा यज्ञ में प्रदत्त आपका छोटा सा भी सहयोग विविध रूप में नरनारायण को उपकृत करेगा। आप अग्रलिखित रूप में सहयोगी बन सकते हैं।

■ कन्या गुरुकुल के भवन निर्माण हेतु सहयोग प्रदान कर।

■ पांच लाख रुपए प्रदान कर संस्थापक सदस्य बनकर।

■ वार्षिक रु. २५०००/- देकर एक छात्र व छात्रा के संरक्षक बनें।

■ अपने प्रियजन की स्मृति में छात्रावास, विद्यालय, भोजनालय आदि के लिए भवन निर्माण में सहयोग।

■ एक कन्या को गोद लें, मासिक २१००/- रुपए सहयोग प्रदान कर।

■ दो लाख रुपए स्थायी निधि के लिए प्रदान कर पोषक सदस्य बनें।

■ भोजन, वस्त्र, औषधि, पाठ्यसामग्री आदि के लिए सहयोग प्रदान कर।

■ ट्रस्ट के कार्यों के लिए अपना समय दान देकर।

■ पुस्तकालय हेतु पुस्तकें, फर्नीचर आदि प्रदान कर।

कन्या गुरुकुल निर्माण समिति

संरक्षक- स्वामी संविदानन्द जी महाराज, हरिद्वार,
श्री दयानन्द ज़ी शर्मा, मोदी नगर, मेरठ।

सहयोगी- श्रीमती लीला कुट्टी मुम्बई, श्री षाजी निव NIV दिल्ली
श्रीमती रामेश्वरी अम्मा, केरल, श्री उन्नीकृष्णन् मेनन दुबई।

ट्रस्ट को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम
८०-जी एवं १० (२३ सी) के अनुसार आयकर मुक्त है।
आप अपना सहयोग नवप्रभात पब्लिक चैरिटेबिल ट्रस्ट
खाता संख्या ३३८९३०६८२८५ (चालू खाता) IPSC-SBIN0001322 SBI पद्मपुर, जिला- बरगड़, 'ओड़िशा' के खाते में भेज सकते हैं।

आपके सहयोग की अपेक्षा में

भगवानदेव	स्वामी मुनिश्वरानन्द	बृहस्पति
अध्यक्ष	संस्थापक	आचार्य

गुरुकुल नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ
नवप्रभात पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट पो.बॉ. नं.-१
ग्रा. नूऑपालि पो. कनसिंहा, जिला- बरगड़ (ओडिशा)-७६८०३६
दूरभाष- ०९७७७०७२८२८, ०८७६३३२४२००, ०९८३७६४७४२७
Email-bhagabandev@gmail.com web- www.navprabhat.org

४३वां वार्षिकोत्सव एवं वेदकथा सम्पन्न

आर्य समाज करजू जिला- शाजापुर (म.प्र.) के तत्वावधान में ४३वां वार्षिकोत्सव के अवसर पर संगीतमयी वेद कथा का आयोजन दिनांक ५ से ८ फरवरी तक आर्य समाज परिसर पर किया गया।

मालवा क्षेत्र के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक तथा आर्यवीर दल के सुदूर ग्रामों में संस्थापक एवं प्रणेता पं. काशीराम जी अनल कानड़ के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ किया गया।

एटा (उ.प्र.) से पधारे पं. शिवपाल जी शास्त्री तथा भुसावर (राज.) से पधारी कु. प्रियंका शास्त्री के मुख्य वक्ता के रूप में भजन उपदेश हुए। मथुरा से पधारे राममुनिजी, बेरछा से पधारे आर्य मुनि जी के भी भजन-उपदेशों का लाभ श्रोताओं ने प्राप्त किया।

सिरोंज से स्वामी शिवमुनि जी, आर्य समाज गंजबासौदा से शिवचरण पांचाल, आर्य समाज ब्यावरा से गोपाल जी अग्रवाल तथा अनेक स्थानों से पधारे आर्यजनों एवं समीपस्थ ग्रामों से वृहद संख्या में पधारे धर्मप्रेमी सज्जनों ने आयोजन को गरिमा प्रदान की।

प्रभात आयुर्वेदिक संस्थान देवास द्वारा आयुर्वेदिक औषधियों का बिक्री केन्द्र तथा वैदिक संसार इंदौर द्वारा वैदिक साहित्य विक्रयार्थ प्रदर्शनी लगाकर आयोजन को गरिमा प्रदान की।

संचालन श्री नारायणसिंह जी आर्य अध्यक्ष महर्षि दयानन्द ज्ञान मन्दिर करजू द्वारा किया गया। संस्था मंत्री द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया। प्रधान हरिसिंह जी आर्य पूर्व सरपंच, मंत्री श्री मांगीलाल जी आर्य, कोषाध्यक्ष श्री सिद्धनाथ जी आर्य तथा ग्रामवासियों के अथक प्रयासों से वैदिक धर्म प्रचार का सफल आयोजन सम्पन्न हुआ।

संगीतमयी वेदकथा सम्पन्न

दिनांक २२ से २५ जनवरी २०१८ तक जयपुर-जबलपुर राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक १२ पर स्थित बाड़ी, जिला-रायसेन (म.प्र.) के नगर पंचायत द्वारा नवनिर्मित सामुदायिक (मंगल) भवन पर संगीतमयी वेद कथा का आयोजन आर्य समाज बाड़ी के तत्वावधान में वेद प्रचार समिति द्वारा किया गया।

इस अवसर पर करनाल हरियाणा से पधारी आर्य जगत् की सुविख्यात भजनोपदेशिका कु. अंजलि आर्या के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ प्रात:काल सम्पादित हुआ तथा दोपहर कालीन सत्र में कु. अंजलि आर्या द्वारा प्रभावकारी वैदिक सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला गया। सायंकालीन सत्र में नामदेव भवन पर पं. श्यामवीर राघव दिल्ली द्वारा रामायण के प्रसंगों पर सुन्दर चर्चा प्रस्तुत की गई।

नगर पंचायत अध्यक्ष जागेश्वर बैरागी, मनिरामजी चौहान, छोटेलाल

जी नामदेव, श्री चन्नुलालजी सिलावट, श्री राजकुमार जी सोनी, सुरेन्द्र जी तिवारी, देवमुनि जी , स्वामी निर्भयानन्द जी, श्री हरि बैरागी, आदि आर्यजनों के अथक प्रयास से आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर वैदिक संसार द्वारा महापुरुषों के चित्रों तथा वैदिक साहित्य की भव्य प्रदर्शनी विक्रयार्थ लगाई गई है।

आचार्य विद्यादेव जी ने गुरुकुल को ५१ हजार का दिया दान

पूज्य आचार्य श्री विद्यादेव जी ने वेदयोग महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम केहलारी पधारकर गणतन्त्र दिवस (२६ जनवरी) को झण्डा वन्दन किया एवं अपने उपदेशाऽमृत से गुरुकुल परिवार को लाभान्वित किया, पूज्य आचार्य जी वर्तमान में गुरुकुल के अध्यक्ष भी हैं। आचार्य जी का सहयोग गुरुकुल स्थापना से ही आशीर्वाद तथा आर्थिक सहयोग समय-समय पर मिल रहा है वर्तमान में भी आचार्य जी ने गुरुकुल को ५१,००० दान राशि प्रदान की।

गुरुकुल परिवार आचार्य जी का सदैव आभारी रहेगी साथ ही गुरुकुल परिवार ने ईश्वर से प्रार्थना की है कि आचार्य जी का जीवन स्वस्थ तथा दीर्घायु होकर उनका आशीर्वाद तथा सहयोग आर्य जगत् को दीर्घकाल तक प्राप्त होता रहे। जिससे वैदिक धर्म दिनों दिन वृद्धि करें।

मकर सक्रान्ति पर्व सम्पन्न

आर्य समाज खेड़ा अफगान (सहारनपुर) में मकर सक्रान्ति पर्व बड़े धूम धाम से मनाया गया। सर्व प्रथम यज्ञ किया गया। यज्ञमान श्री निश कुमार थे। इस अवसर पर आदित्य प्रकाश गुप्त प्रधान आर्य समाज ने कहा कि यह पर्व आदिकाल से मनाया जाता है। इस पर्व का महत्व हमारे सौर मण्डल और मकरराशि से है जितने काल में पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा पूरी करती है उसे एक सौर वर्ष कहते हैं। पृथ्वी का सूर्य की परिक्रमा का जो पथ है वह वर्तुलाकार होता है। वर्तुलाकार पृथ्वी में बारह भाग अर्थात् बारह राशियां ज्योतिषियों द्वारा कल्पित की हुई है। उनके बारह नाम है-क्रान्ति वृत्त पर कल्पित प्रत्येक भाग व नक्षत्र पुंजों की आकृति राशि कहलाती है। पृथ्वी जब एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश व संक्रमण करती है तो इस संक्रमण को संक्रान्ति कहते हैं। लोकाचार में पृथ्वी के संक्रमण को सूर्य का संक्रमण कहते हैं, सूर्य मकर राशि के दिन मकर राशि में प्रवेश करता है। सूर्य के उत्तरायण में होने का अर्थ यह हुआ इस दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है। ६ माहों तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर प्रवेश करता है। इस अवधि का नाम अयन है और दक्षिण की ओर उदय की अवधि को दक्षिणायन कहते हैं। अत: मकर सक्रान्ति के अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है, ज्ञानी लोग अपने शरीर के त्याग की अभिलाषा उत्तरायण में करते है, आजन्म ब्रह्मचारी भीष्म पितामह ने उत्तरायण के आगमन से पूर्व शरशय्या पर इसके आगमन की प्रतीक्षा की थी। इस दिन तिल आदि पदार्थों का दान तथा तिल के लड्डू का प्रयोग उत्तम मानते हैं। यह पर्व विभिन्न नामों से पूरे देश में मनाया जाता है। अपनी वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना हम सभी का पावन कर्त्तव्य है। अमित कुमार आर्य ने इस अवसर पर भजन सुनाये। इस अवसर पर राजेश कुमार, वीरेन्द्र कुमार, यशपाल, प्रेमचन्द जी चापड़चीड़ी, रविन्द्र जी पिलखनी, वैभव, सन्नी कुमार, कर्मसिंह, सन्दीप कुमार, रवि कुमार, सुरेन्द्र कुमार, ब्रह्मसिंह, मोहित कुमार टौली, श्रवण कुमार, जयसिंह, संजय कुमार, विशाल कुमार, वेद मुनि जी आदि बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे।

शोभायात्रा के गीत शीर्षक ग्रन्थ का लोकार्पण

गुरुकुल आश्रम आमसेना (उड़ीसा) की स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर '**अध्यात्म पथ**' के यशस्वी सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी की '**शोभायात्रा के गीत**' नामक पुस्तक का लोकार्पण पतंजलि विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य बालकृष्ण जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

इस पुस्तक में प्रभातफेरी, शोभायात्रा, ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द आर्य समाज के स्थापना दिवस आदि पावन अवसर पर गाये जाने वाले प्रेरक एवं आत्मोत्कर्ष परक गीतों का अनूठा संग्रह है। पुस्तक का लोकार्पण करते हुए आचार्य बालकृष्ण जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्व, उस शिक्षा की आवश्यकता और वर्तमान समय में गुरुकुलों के विस्तार पर बल दिया।

मंचस्थ गणमान्य विद्वानों ने '**शोभायात्रा के गीत**' शीर्षक पुस्तक के संकलनकर्ता एवं सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को इस उत्तम कृति के लिए बधाई दी। इस शुभावसर पर स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी स्वामी चित्तेश्वरान्द सरस्वती जी, स्वामी प्रणवानन्द सररस्वती जी, स्वामी धर्मेश्वरान्द सरस्वती जी, आचार्य विजय पाल जी, श्री सुदर्शन भगत जी (केन्द्रीय राज्य मन्त्री), ठाकुर विक्रमसिंह जी (अध्यक्ष- राष्ट्र निर्माण पार्टी) कैप्टन रुद्र सेन सिन्धु जी (प्रधान-गुरुकुल न्यास) आदि गणमान्य लोग मंच पर शोभायामान थे।

विशाल पण्डाल में हजारों की संख्या में प्रबुद्ध श्रोता, मूर्धन्य संन्यासीगण, विद्वतवर्ग, राजनेता, आर्य नेता उपस्थित थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी ने किया।

शकुन्तला शर्मा बड़ौदा का निधन

श्रीमती शकुन्तला शर्मा धर्मपत्नि श्री सूरजभान जी शर्मा (बड़वाड़िया) बड़ौदा गुजरात, मूल निवासी-हमीरपुर, जिला-अलवर (राज.) का निधन दिनांक १७ जनवरी २०१८ को ८३ वर्ष की आयु में हो गया। आप पिछले कई दिनों से अस्वस्थ होकर उपचाररत थी। आप अपने पीछे पतिदेव, तीन सुपुत्र श्री दामोदर जी शर्मा, श्री जितेन्द्र जी शर्मा पूर्व जिलाध्यक्ष जांगिड ब्राह्मण समाज बडौदा, श्री विष्णु जी शर्मा तथा दो सुपुत्रियों का भरापुरा परिवार छोड़ गई है। आप आध्यात्मिक प्रवृत्ति की मृदुभाषी, मिलनसार महिला थीं। आपके निधन से परिवार के साथ-साथ समाज को भी अपूरणीय क्षति हुई है। परिवारजनों द्वारा वैदिक संसार को दान स्वरूप ५०१ रुपए भेंट किए गए।

वैदिक संसार परिवार ज्ञात-अज्ञात समस्त दिवंगत आत्माओं के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

वैदिक संसार के संरक्षक सदस्य बनकर आर्थिक सहयोग कर पूण्यार्जन कीजिए

वैदिक संसार के निर्बाध गति से प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग करने निमित्त एकमुश्त २५ हजार रुपए प्रदान करें अथवा प्रतिवर्ष ५१०० रुपए नकद देने या अन्यों को सदस्य बनाकर प्रतिवर्ष ५१०० रुपए के सहयोग का व्रत (संकल्प) धारण कर वैदिक संसार के संरक्षक सदस्य बनकर पुण्यार्जन कीजिए। - **सम्पादक**

वैदिक संसार के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव

ठाकुर विक्रम सिंह जी अध्यक्ष-राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली

श्री नेमीचन्द जी शर्मा भामाशाह-राज. सरकार गान्धीधाम (गुजरात)

श्री पूनाराम जी बरनेला विश्वकर्मा चेरि.ट्रस्ट जोधपुर (राजस्थान)

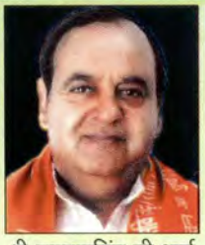
श्री रामफलसिंह जी आर्य प्रांतीय वरिष्ठ उप प्रधान सुन्दर नगर, हिमाचल

अधि.रतनलाल जी राजौरा उपमन्त्रीः आर्य समाज निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

श्री सुनील जी शर्मा पौण्डा (गोवा)

श्री नानूराम जी जांगिड धूलिया, महाराष्ट्र

श्रीमती सुमित्रा जी शर्मा अहमदाबाद, गुजरात

सुश्री अंजलि आर्या घरोंडा, हरियाणा

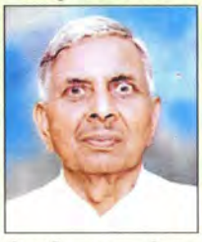
श्री आदित्यप्रकाश जी गुप्त खेड़ा अफगान (उ.प्र.)

आचार्य सर्वेश जी गुरुकुल केहलारी, म.प्र.

श्री रमेशचन्द्र जी दीक्षित गाधी, बागपत, उ.प्र.

आर्य जगत् की सम्पन्न विविध गतिविधियों की चित्रावली

गुरूकुल जमानी (म.प्र.) में आ. कर्मवीर जी के ब्रह्मत्व तथा आ. सोमदेव जी के मुख्य यजमान के रूप में अपनी माताजी श्रीमति मूर्तिदेवी के सानिध्य में सम्पन्न सामवेद पारायण यज्ञ, भजनोपदेशक कुलदीप जी द्वारा भजन प्रस्तुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति न्यास जोधपुर (राज.) द्वारा महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव मनाया गया इस अवसर पर आर्यजन देवयज्ञ करते हुए तथा आ.सत्यानन्द जी वेदवागीश व्याख्यान देते हुए तथा सुमेरगंज के भजनोपदेशक केशवदेव जी के भजन उपदेश हुए।

दिनांक:११ से १७ जनवरी २०१८ तक सामवेद एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं वैदिक सत्संग श्री एस.के.सैनी तथा आर्य समाज गंजबासौदा (म.प्र.) द्वारा यज्ञब्रह्मा हरिश्चन्द्र शास्त्री गुरूकुल भुसावर के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। गरिमामयी उपस्थिति कु.प्रियंका शास्त्री, प.काशीराम जी अनल, प.सुरेशजी शास्त्री तथा अन्य आर्य महानुभाव

गणतंत्र दिवस की प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

भारत के गणतंत्र की
सबसे ऊँची शान
हर भारतवासी को
इस पर हैं अभिमान

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

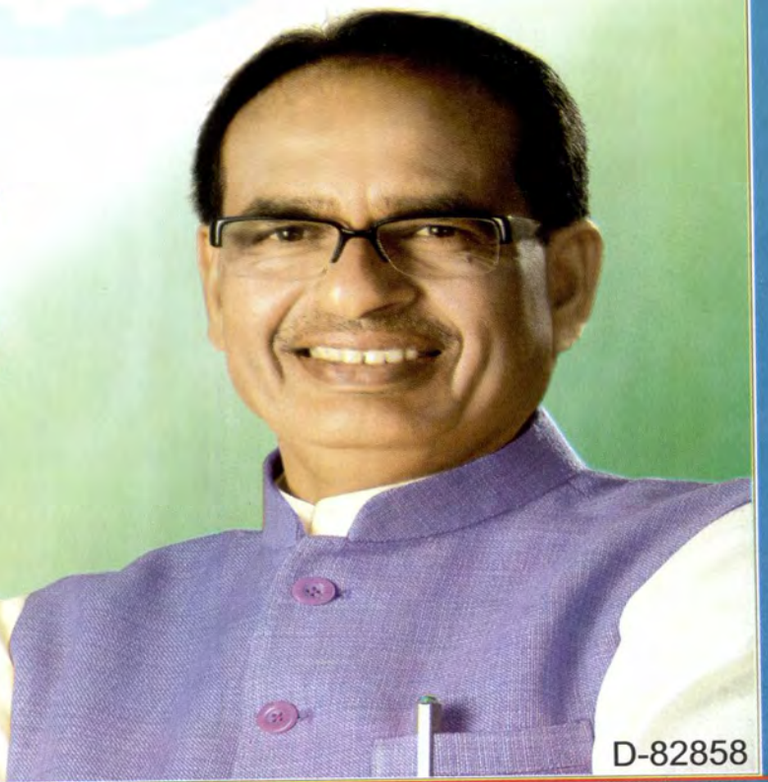

गणतांत्रिक मूल्यों के साथ
मध्यप्रदेश

आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2018

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

D-82858

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित,१२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित
संपादक - गजेश शास्त्री, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७